डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

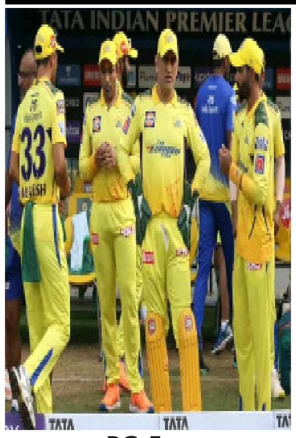

PG-5

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

PG-5

सिनेमाःसालों बाद ईद पर प्रशंसकों को हुआ शाहरूख खान का दीदार

वर्ष -08 अंक -57 | प्रयागराज, गुरूवार 05 मई, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

एक दिन बाद फिर बढ़ा कोरोना का ग्राफ, 24 घंटे में 3205 लोग हुए संक्रमित, 31 की मौत

नई दिल्ली । देश में कोरोना के मामलों में एक दिन बाद ही बढ़ोतरी देखने को मिली है। बीते 24 घंटे में कोरोना के 3 हजार से ज्यादा मामले सामने आए हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि कोरोना के आज 3,205 मामले सामने आए हैं। इससे पहले कल यानी मंगलवार को कोरोना के 2,568 मामले सामने आए हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 24 घंटे में कोरोना के 31 लोगों की जान भी गई है। मृतकों का आंकड़ा बढ़कर अब 5,23,920 हो गया है। ये कुल मामलों का 1.22 फीसद है। इसके साथ ही एक्टिव केस में भी इजाफा देखने को मिला है। कोरोना के सक्रिय मरीजों की संख्या बढ़कर अब 19,509 हो गई है। अब तक कुल 4,25,44,689 लोग इस महामारी से ठीक हो चुके हैं। उधर, नीति आयोग के सदस्य वीके पाल ने मंगलवार को जोर देते हुए कहा कि 2019 की तुलना में 2020 कैलेंडर वर्ष में मृत्यु पंजीकरण में वृद्धि पूरी तरह से कोरोना से होने वाली मौतों के कारण नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत के संबंध में कुछ एजेंसियों द्वारा कोरोना से होने वाली मौतों के आंकड़े कई गुना अधिक बढ़ाकर प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस चलन को बंद किया जाना चाहिए।

कृषि क्षेत्र में शोध और विकास के लिए जर्मनी देगा वित्तीय मदद

नई दिल्ली। कृषि क्षेत्र में अनुसंधान व विकास के साथ प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में भारत व जर्मनी संयुक्त रूप से कार्य करेंगे। इस बाबत जर्मनी लगभग 2,400 करोड़ रुपये (30 करोड़ यूरो) की मदद भारत को रियायती कर्ज के रूप में वर्ष 2025 तक मुहैया कराएगा। कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर और जर्मनी की आर्थिक सहयोग व विकास मंत्री स्वेंजा शुल्ज ने सोमवार को एक वर्चुअल बैठक में इस समझौते की घोषणा की। दोनों देशों के विज्ञानियों का संयुक्त दल मत्स्य, डेयरी और अन्य बागवानी उपज के साथ मूल्य वर्धन (वैल्यू एडिशन) की आधुनिक तकनीकों पर अनुसंधान करेगा। कृषि उपज को मूल्यवर्धित करने में दोनों देशों के शैक्षिक व अनुसंधान संस्थानों और किसानों समेत खेती से जुड़े अन्य लोगों के बीच संयुक्त दल काम करेगा।

तूल पकड़ता जा रहा है महाराष्ट्र का लाउडस्पीकर विवाद, धर्म स्थलों पर सिक्योरिटी हुई टाइट

नई दिल्ली । महाराष्ट्र में लाउडस्पीकर विवाद लगातार बढ़ता ही जा रहा है। महाराष?ट्र नवनिर्माण सेना के प्रमुख राज ठाकरे द्वारा महा आरती करने के एलान और उनके द्वारा लिखे गए एक खुले पत्र के बाद इस मामले ने और तूल पकड़ लिया है। इस पत्र में राज ठाकरे ने लिखा है कि यदि बुधवार से किसी भी मस्जिद से लाउडस्पीकर से आवाज आई तो वो वहां पर हनुमान चालिसा का पाठ उसी तरह से करेंगे। इसको देखते हुए राज्य सरकार ने न सिर्फ धार्मिक स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था को चाक-चौबंद कर दिया है बल्कि राज ठाकरे के घर के बाहर भी सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता किया गया है। एएनआई के मुताबिक राज्य सरकार ने पुणे के कसबा पेठ स्थित पुनेश्वर हनुमान मंदिर के बाहर सुरक्षा व्यवस्था को बढ़ा दिया गया है। राज ठाकरे ने यहां पर महा आरती करने का एलान किया है। मुंबई के पुलिस कमिश्नर खुद सड़कों पर उतरकर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा ले रहे है। गौरतलब है कि दो दिन पहले ही महाराष्ट्र के सीएम उद्धव ठाकरे ने कहा था कि भाजपा ने हिंदुत्व के नाम पर उनके पिता बाल ठाकरे को ठगने का किया। राज ठाकरे ने ट्विटर पर बाल ठाकरे के भाषण का एक वीडियो ट्वीट किया है। इसमें बाल ठाकरे को लाउडपीकर से अजान के बार में बोलते हुए सुना जा सकता है। बता दें कि कुछ दिन पहले ही राज ठाकरे ने कहा था कि महाराष्ट्र के हिंदु हृदय सम्राट बाल ठाकरे ने इस मुद्दे को काफी समय पहले ही उठाते हुए हिंदुओं से इसके खिलाफ खड़े होने का आह्वान किया था। मंगलवार को किए एक अन्य ट्वीट में उन्होंने सभी हिंदुओं से अपील की है कि यदि महाराट्र में कहीं भी 3 मई के बाद मस्जिद पर लाउडस्पीकर का उपयोग किया जाता है तो हिंदू वहां पर उसी तरह से हनुमान चालिसा का पाठ करें। अपने इस ट्वीट में उन्होंने एक खुला पत्र लिखा है। इसमें कहा गया है कि कानून सभी के लिए एक समान होना चाहिए। ये नहीं होना चाहिए कि हिंदुओं के लिए कानून अलग होगा और मुस्लिमों के लिए कानून अलग होगा।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक मनाई जा रही ईद मुल्क की तरक्की के लिए उठे करोड़ों हाथ

नई दिल्ली । सोमवार को चांद का दीदार होने पर मंगलवार को कश्मीर से कन्याकुमारी तक ईद का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। मुस्लिम समाज के लोगों ने एक साथ नमाज पढ़ी और नमाज के दौरान अल्लाह की इबादत कर मुल्क की सलामती के लिए दुआ मांगी। वहीं, दिल्ली-एनसीआर में मंगलवार को ईद- उल-फितर का पर्व धूमधाम से मनाया गया। मुस्लिम समाज के लोगों ने एक साथ नमाज पढ़ी और देश की सलामती के लिए दुआं की। नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे के गले मिलकर ईद की बधाई दी। गांधी नगर मदीना मस्जिद पर नमाज पढ़ने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचे थे। पिछले साल कोरोना संक्रमण के चलते इतनी बड़ी संख्या में लोग नमाज पढ़ने के लिए नहीं पहुंचे थे। लेकिन इस बार कोरोना के मामले कम हैं और लोगों ने एक साथ नमाज पढ़ी। दरअसल, सोमवार रात चांद दिखाई देने पर मौलाना ने मंगलवार को ईद का त्योहार मनाए जाने का ऐलान किया। ईद को लेकर ही सोमवार को यमुनापार के बाजारों में बच्चों से लेकर बड़े तक सभी खरीदारी करने में जुटे रहे। सीलमपुर, चौहान बांगर, जाफराबाद, शास्त्री पार्क, खुरेजी आदि जगहों पर लोग ड्राई फ्रूट से लेकर फल तक खरीदते दिखे। सीलमपुर मार्केट में तो इतनी भीड़ जुटी रही कि पैर रखने तक की जगह नहीं मिल रही थी। इसके साथ ही बाजारों में जगह जगह महिलाएं व युवतियां हाथों में मेंहदी लगवाती भी नजर आईं। ईद के दिन नए कपड़े पहनकर नमाज अदा की जाती है। एक दूसरे को गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी जाती है। वहीं, मुस्लिम समाज के लोगों ने सुबह फोन और व्हाट्सएप पर भी दूसरे को ईद की मुबारकबाद दी। अपने-अपने घरों में युवा, बुजुर्ग और बच्चों ने ईद उल.फितर की नमाज अता की। इसके बाद सिवइऱ्या, खीर और अन्य पकवान खाए। वहीं, दिल्ली से सटे इलाकों में भी ईद का त्योहार मनाया गया। अर्थला शिया जामा मस्जिद के मौलाना नवाजिश हुसैन ने बताया कि शालीमार गार्डन, शहीद नगर, लाजपत नगर, गरिमा गार्डन, इकबाल कॉलोनी, डीएलएफ कॉलोनी, अर्थला के लोगों ने मौलाना की अपील पर और कोरोना संक्रमण के चलते एक दूसरे से दूरी बनाकर नमाज अता हुई। सभी ने अल्लाह से कोरोना महामारी के खात्मे के लिए दुआ मांगी। वहीं, राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, वैंकया नायडू और अन्य देश के बड़े नेताओं ने सभी देशवासियों, विशेषकर मुस्लिम भाइयों-बहनों को ईद मुबारक दी। रमज़ान के पवित्र महीने के बाद मनाया जाने वाला यह त्योहार समाज में भाईचारे तथा सद्भावना को मजबूत करने का पावन अवसर है। आइए, इस पवित्र अवसर पर, हम सब, स्वयं को मानवता की सेवा तथा जरूरतमंदों के जीवन को संवारने का संकल्प लें। नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, फरीदाबाद, गुरुग्राम, हापुड़, सोनीपत आदि जगहों पर ईद की नमाज शांतिप्रद तरीके से हुई। वहीं, नमाज के बाद युवाओं में सेल्फी लेने का क्रेज भी देखा गया। युवाओं ने एक साथ सेल्फी ली और उसको सोशल मीडिया पर शेयर किया। नमाज के दौरान मस्जिद व ईदगाह के बाहर शांत व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पुलिस बल तैनात किया गया। नमाज अता करने के लिए मस्जिद और ईदगाह पर भीड़ जमा न हो इसलिए पुलिस बल तैनात किया गया। सभी प्रमुख मस्जिदों के बाहर पुलिस का पहरा था। हालांकि कुछ परिवारों के लोगों ने छोटे-छोटे समूहों में शारीरिक दूरी बनाकर घर पर नमाज अता की । बिना गले मिले ही एक दूसरे को बधाई दी।

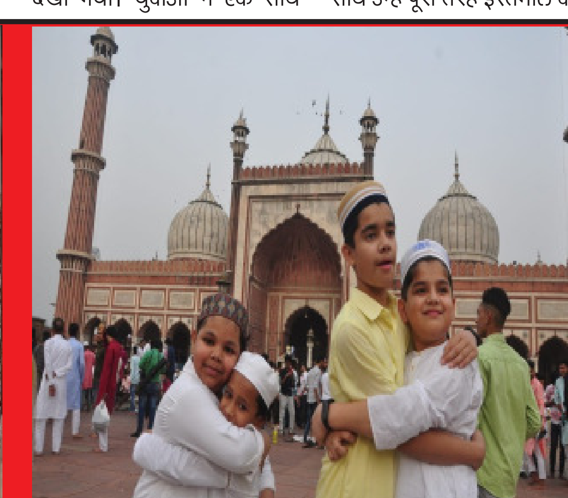

आतंकी करतूतों की निगरानी के लिए बनेगा राष्ट्रीय डाटाबेस, अमित शाह बोले- मोदी सरकार की पहले दिन से आतंकवाद के खिलाफ जीरो टालरेंस नीति

बेंगलुरु, प्रेट्रः केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि हवाला लेनदेन, आतंकी फंडिंग, आतंकी गतिविधियों, नकली मुद्रा, नशीले पदार्थों, बम धमाकों की धमकियों और गैरकानूनी हथियारों की तस्करी की निगरानी के लिए सरकार जल्द ही राष्ट्रीय डाटाबेस विकसित करेगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पहले दिन से ही सरकार की आतंकवाद के खिलाफ जीरो टालरेंस नीति है। नेशनल इंटेलीजेंस ग्रिड (नेटग्रिड) बेंगलुरु के परिसर का उद्घाटन करने के बाद शाह ने कहा कि खुफिया और कानूनी एजेंसियों को अब महत्वपूर्ण डाटा से जुड़ी बाधाओं के दूर होने के साथ उन्हें पूरी तरह इस्तेमाल करने में सक्षम होना चाहिए। उन्होंने कहा, 'डाटा विश्लेषण और सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से एजेंसियों के कामकाज के वर्तमान तौर-तरीकों में व्यापक बदलाव आना चाहिए।' उन्होंने उम्मीद जताई कि नेटग्रिड डाटा के विभिनन्‍ स्त्रोतों को जोड़ने की जिम्मेदारी बखूबी निभाएगा। शाह ने कहा कि डाटा, दायरे और जटिलता के मामले में पूर्व की सुरक्षा चुनौतियों के मुकाबले आज सुरक्षा जरूरतें काफी बदल गई हैं। इसलिए कानूनी और सुरक्षा एजेंसियों के लिए विश्वसनीय स्त्रोतों से हासिल जानकारियों तक स्वचालित, सुरक्षित और तत्काल पहुंच की जरूरत है। सरकार ने डाटा एकत्रीकरण संगठनों से नेटग्रिड तक जानकारियों की पहुंच के लिए अत्याधुनिक और अनोखा सूचना प्रौद्योगिकी प्लेटफार्म के विकास और संचालन का काम सौंपा है। गृह मंत्री ने कहा कि नेटग्रिड में लगातार अपग्रेडेशन के लिए अंतर्निहित तंत्र होना चाहिए और देश में हुए विभिनन्‍ अपराधों के तरीकों का डाटाबेस बनाने के लिए नेटग्रिड में एक अध्ययन समूह होना चाहिए। एजेंसियों से इस प्रणाली के इस्तेमाल में सतर्कता बरतने का अनुरोध करते हुए शाह ने कहा कि इसका इस्तेमाल सिर्फ सही उद्देश्यों के लिए होना चाहिए।

पीएम मोदी आज पहुंचेंगे फ्रांस, राष्ट्रपति मैक्रों से मुलाकात में विभिन्न मुद्दों पर होगी चर्चा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के बीच बुधवार को विभिन्न मुद्दों पर चर्चा होगी। दोनों नेता यूक्रेन संघर्ष के वैश्विक आर्थिक परिणामों को कम करने के साथ-साथ उस देश में शत्रुता की समाप्ति सुनिश्चित करने के तरीकों पर विचार विमर्श करेंगे मौजूदा वक्त में प्रधानमंत्री डेनमार्क की यात्रा पर हैं। भारत वापसी के दौरान वो कुछ देर पेरिस में रुकेंगे, जहां वो राष्ट्रपति मैक्रों के साथ व्यापक वार्ता करेंगे। मैक्रों एक सप्ताह पहले ही शीर्ष पद के लिए फिर से चुने गए हैं। समाचार एजेंसी पीटीआई के मुताबिक चर्चा इस बात पर भी होगी कि रक्षा निर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की अपनी खोज में फ्रांस कैसे भारत का पसंदीदा भागीदार बना रह सकता है। दोनों नेताओं की वार्ता में प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष और ऊर्जा के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने के तरीकों का भी पता लगाने की कोशिश होगी। वहीं, दोनों नेता इस बात पर भी चर्चा करेंगे कि कैसे यूक्रेन में शत्रुता की समाप्ति सुनिश्चित की जाए और इस संघर्ष के वैश्विक आर्थिक परिणामों को कम किया जाए। बताया जा रहा है कि वार्ता का एक और फोकस क्षेत्र हिंद-प्रशांत में चुनौतियों से एकजुट होकर निपटना होगा। पीएम मोदी और राष्ट्रपति मैक्रों से क्षेत्र में समाधान के सकारात्मक एजेंडे को तेज करने के तरीके तलाशने की उम्मीद है। राजनीतिक सूत्रों का मानना है कि तथ्य यह है कि यह यात्रा राष्ट्रपति मैक्रों के फिर से चुने जाने के तुरंत बाद हुई है। इसे विश्वास और दोस्ती के एक असाधारण संकेत के रूप में देखा जाता है। सूत्रों ने कहा कि मोदी की चुनावी जीत के कुछ दिनों बाद मैक्रों से मुलाकात बेहद प्रतीकात्मक है।

भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन में शामिल होंगे पीएम मोदी, आज जाएंगे फ्रांस

डेनमार्क। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यूरोप दौरे पर हैं। तीन दिन के इस दौरे पर प्रधानमंत्री मोदी जर्मनी और डेनमार्क के बाद आज फ्रांस जाएंगे। यूरोप की अपनी 3 दिवसीय यात्रा के अंतिम दिन के दौरान, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी नवनिर्वाचित राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रोन से मिलने के लिए पेरिस जाने से पहले डेनमार्क में दूसरे भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। डेनमार्क, आइसलैंड, फिनलैंड, स्वीडन और नॉर्वे के प्रधान मंत्री 2018 में स्टॉकहोम, स्वीडन में आयोजित पहले शिखर सम्मेलन के बाद दूसरे भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। पीएम मोदी ने तीन दिवसीय यात्रा शुरू करने से पहले अपने प्रस्थान बयान में कहा था, 'सम्मेलन महामारी के बाद आर्थिक सुधार, जलवायु परिवर्तन, नवाचार और प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा, अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों और भारत-नॉर्डिक जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित करेगा और आर्कटिक क्षेत्र में देगा सहयोग।' पीएम मोदी ने कहा कि वह शिखर सम्मेलन से इतर अन्य नॉर्डिक देशों के नेताओं से भी मुलाकात करेंगे और उनके साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा करेंगे। अपनी यात्रा के दौरान पीएम मोदी ने जर्मनी और डेनमार्क के बिजनेस लीडर्स से भी मुलाकात की। नवनिर्वाचित फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ मुलाकात के लिए शिखर सम्मेलन के बाद प्रधान मंत्री पेरिस में एक संक्षिप्त ठहराव करेंगे। प्रधान मंत्री मोदी ने अपनी वर्तमान यात्रा के दौरान जर्मनी और डेनमार्क के नेतृत्व के साथ द्विपक्षीय बातचीत की है, और बर्लिन और कोपेनहेगन दोनों में भारतीय प्रवासी कार्यक्रमों को संबोधित किया है। सोमवार को प्रधानमंत्री मोदी छठे भारत-जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श में भाग लेने से पहले जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़ के साथ द्विपक्षीय चर्चा के लिए बर्लिन पहुंचे। प्रधान मंत्री मोदी ने अंतर-सरकारी परामर्श को उपयोगी बताया। कुल मिलाकर, भारत और जर्मनी के बीच नौ समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें ग्रीन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट पार्टनरशिप पर एक संयुक्त घोषणापत्र (ढ्ढ) शामिल है, जिसके तहत जर्मनी ने 2030 तक भारत को 10 बिलियन यूरो की नई और अतिरिक्त विकास सहायता प्रदान करने की प्रतिबद्धता जताई। भारतीय प्रधानमंत्री ने बर्लिन में भारतीय समुदाय को भी संबोधित किया जहां उन्होंने अपनी सरकार की उपलब्धियों के बारे में बात की, विशेष रूप से शासन के साथ प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के क्षेत्र में। अपनी यात्रा के हिस्से के रूप में, भारतीय प्रधान मंत्री दूसरे दिन कोपेनहेगन पहुंचे, जहां उन्होंने अपने डेनिश समकक्ष मेटे फ्रेडरिकसेन से मुलाकात की और दोनों देशों के बीच व्यापार और पर्यावरण संरक्षण पर सहयोग सहित द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा की। कोपेनहेगन में दोनों नेताओं ने दोनों देशों के बीच हरित सामरिक साझेदारी पर प्रगति की समीक्षा के लिए प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता भी की।

केंपे गौड़ा की 108 फीट ऊंची मूर्ति का काम जारी, लगाई जाएगा 4 हजार किलो की तलवार

बेंगलुरु। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा परिसर में 108 फीट ऊंची केंपे गौड़ा की प्रतिमा) का निर्माण कार्य तेज हो गया है। इस प्रतिमा के लिए 4000 किलो की तलवार लाई गई है। यह प्रतिमा 23 एकड़ में फैले हेरिटेज पार्क में निर्मित हो रही है। हवाई अड्डा परिसर में स्थित पार्क को केंपे गौड़ा का नाम देने के बाद विकसित किया जा रहा है। प्रतिमा को हवाई अड्डा के प्रमुख आकर्षण के रूप में पेश करने की योजना है। बेंगलुरु आने-जाने वाले यात्री वास्तुशिल्प चमत्कार के गवाह बनेंगे। नई दिल्ली से एक विशेष ट्रक से तलवार सोमवार को बेंगलुरु पहुंची। उच्च शिक्षा मंत्री सीएन अश्वनाथ नारायण ने तलवार का स्वागत किया और उसके पूजन कार्यक्रम में भी भाग लिया। 85 करोड़ रुपये की लागत से कैंपे गौड़ा की प्रतिमा का निर्माण कराया जा रहा है। पद्मविभूषण से सम्मानित नोएडा के वास्तुकार आरडब्लूयू सुतार इस प्रतिमा का निर्माण कर रहे हैं। केंपे गौड़ा विजयनगर साम्राज्य के एक शासक थे। उन्होंने 1537 में कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु शहर को बसाया था। अपने समय के सुशिक्षित और सफल शासक रहे केंपे गौड़ा को सामाजिक सुधारों और बेंगलुरु में मंदिरों और जलाशयों के निर्माण के लिए भी जाना जाता है।

यू0पी0 एस टी एफ के गौरवपूर्ण 24 साल (गठन 04 मई 1998)

यूपी एसटीएफ के स्थापना दिवस पर यूपी के उस समय के सबसे बड़े माफिया डॉन श्रीप्रकाश शुक्ल की कहानी

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। श्रीप्रकाश शुक्ला यूपी में 90 के दशक का डॉन था. अखबारों के पन्ने हर रोज उसी की सुर्खियों से रंगे होते. यूपी पुलिस हैरान-परेशान थी. नाम पता था लेकिन उसकी कोई तस्वीर पुलिस के पास नहीं थी. बिजनेसमैन से उगाही, किडनैपिंग, कत्ल, डकैती, पूरब से लेकर पश्चिम तक रेलवे के ठेके पर एकछत्र राज. बस यही उसका पेशा था. और इसके बीच जो भी आया उसने उसे मारने में जरा भी देरी नहीं की. लिहाजा लोग तो लोग पुलिस तक उससे डरती थी. आखिरकार, यूपी पुलिस के एसटीएफ ने एक मुठभेड़ में मार गिराय श्रीप्रकाश के साथ पुलिस का पहला एनकाउंटर 9 सितंबर 1997 को हुआ. पुलिस को खबर मिली कि श्रीप्रकाश अपने तीन साथियों के साथ सैलून में बाल कटवाने लखनऊ के जनपथ मार्केट में आने वाला था. पुलिस ने चारों तरफ घेराबंदी कर दी. लेकिन यह ऑपरेशन ना सिर्फ फेल हो गया बल्कि पुलिस का एक जवान भी शहीद हो गया. इस एनकाउंटर के बाद श्रीप्रकाश शुक्ला की दहशत पूरे यूपी में और ज्यादा बढ़ गई यूपी एसटीएफ का गठन लखनऊ स्थित सचिवालय में यूपी के मुख्यमंत्री, गृहमंत्री और डीजीपी की एक बैठक हुई. इसमें अपराधियों से निपटने के लिए स्पेशल फोर्स बनाने की योजना तैयार हुई. 4 मई 1998 को यूपी पुलिस के तत्कालीन एडीजी अजयराज शर्मा ने राज्य पुलिस के बेहतरीन 50 जवानों को छांट कर स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) बनाई. इस फोर्स का पहला टास्क था- श्रीप्रकाश शुक्ला, जिंदा या मुर्दा. सादी वर्दी में तैनात एके 47 से लैस एसटीएफ के जवानों ने लखनऊ से गाजियाबाद, गाजियाबाद से बिहार, कलकत्ता, जयपुर तक छापेमारी तब जाकर श्रीप्रकाश शुक्ला की तस्वीर पुलिस के हाथ लगी. इधर, एसटीएफ श्रीप्रकाश की खाक छान रही थी और उधर श्रीप्रकाश शुक्ला अपने करियर की सबसे बड़ी वारदात को अंजाम देने यूपी से निकल कर पटना पहुंच चुका था श्रीप्रकाश शक्ला ने 13 जून 1998

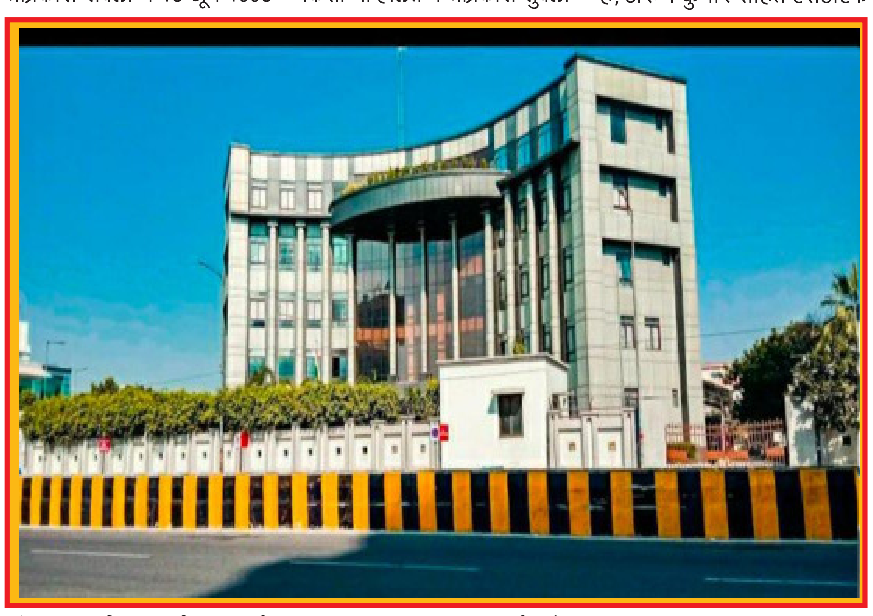

को पटना स्थित इंदिरा गांधी हॉस्पिटल के बाहर बिहार सरकार के तत्कालीन मंत्री बृज बिहारी प्रसाद की गोली मारकर हत्या कर दी. मंत्री की हत्या उस वक्त की गई जब उनके साथ सिक?योरिटी गार्ड मौजूद थे. वो अपनी लाल बत्ती की कार से उतरे ही थे कि एके 47 से लैस 4 बदमाशों ने उनपर फायरिंग शुरु कर दी और वहां से फरार हो गए इस कत्ल के साथ ही श्रीप्रकाश ने साफ कर दिया था कि अब पूरब से पश्चिम तक रेलवे के ठेकों पर उसी का एक छत्र राज है. बिहार के मंत्री के कत्ल का मामला अभी ठंडा भी नहीं हुआ था कि तभी यूपी पुलिस को एक ऐसी खबर मिली जिससे पुलिस के हाथ-पांव फूल गए. श्रीप्रकाश शुक्ला ने यूपी के तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की सुपारी ले ली थी. 6 करोड़ रुपये में सीएम की सुपारी लेने की खबर एसटीएफ के लिए बम गिरने जैसी थी. एसटीएफ हरकत में आई और उसने तय भी कर लिया कि अब किसी भी हालत में श्रीप्रकाश शुक्ला का पकड़ा जाना जरूरी है. एसटीएफ को पता चला कि श्रीप्रकाश दिल्ली में अपनी किसी गर्लफ्रेंड से मोबाइल पर बातें करता है. एसटीएफ ने उसके मोबाइल को सर्विलांस पर ले लिया. लेकिन श्रीप्रकाश को शक हो गया. उसने मोबाइल की जगह पीसीओ से बात करना शुरू कर दिया. लेकिन उसे यह नहीं पता था कि पुलिस ने उसकी गर्लफ्रेंड के नंबर को भी सर्विलांस पर रखा है. सर्विलांस से पता चला कि जिस पीसीओ से श्रीप्रकाश कॉल कर रहा है वो गाजियाबाद के इंदिरापुरम इलाके में है. खबर मिलते ही यूपी एसटीएफ की टीम फौरन दिल्ली के लिए रवाना हो जाती है. एसटीएफ किसी भी कीमत पर ये मौका गंवाना नहीं चाहती थी. 23 सितंबर 1998 को एसटीएफ के प्रभारी अरुण कुमार को खबर मिलती है कि श्रीप्रकाश शुक?ला दिल्ली से गाजियाबाद की तरफ आ रहा है. श्रीप्रकाश शुक्ला की कार जैसे ही वसुंधरा इन्क्लेव पार करती है, अरुण कुमार सहित एसटीएफ की टीम उसका पीछा शुरू कर देती है. उस वक्त श्रीप्रकाश शुक्ला को जरा भी शक नहीं हुआ था कि एसटीएफ उसका पीछा कर रही है. उसकी कार जैसे ही इंदिरापुरम के सुनसान इलाके में दाखिल हुई, मौका मिलते ही एसटीएफ की टीम ने अचानक श्रीप्रकाश की कार को ओवरटेक कर उसका रास्ता रोक दिया. पुलिस ने पहले श्रीप्रकाश को सरेंडर करने को कहा लेकिन वो नहीं माना और फायरिंग शुरू कर दी. पुलिस की जवाबी फायरिंग में श्रीप्रकाश मारा गया. इसी के साथ यूपी एसटीएफ ने अपने जिस टास्क को चुनौती माना था और जिस लिए उसका गठन हुआ था उसको सिद्ध कर दिया था।

फूलपुर क्षेत्र में ईद उल फितर की नमाज शांति एवं सौहार्द पूर्ण ढंग से अदा की गई

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। पवित्र माह रमजान के 30 रोजों के एवज रोजेदारों को ईश्वर की तरफ से ईद रूपी तोहफा मिलता है। जिसमें छोटे बड़े गरीब अमीर नए नए परिधानों में ईदगाह मस्जिदों में खुदा की बंदगी हेतु 2 रकात नमाज अदा करते हैं और रब से अपने अपने परिवार अजीज अकरबा हेतु दुआएं मांगते हैं। छोटे बच्चों से बड़ों तक ईदगाह जाकर नमाज में शामिल होते हैं। फिर सेवई खाने खिलाने का दौर चलता है। फूलपुर के दर्जनों मोहल्लों की छोटी मस्जिदों के अलावा जामा मस्जिद, पुरानी बाजार, व सिकंदरा रोड पर अदा की गई। सरकार के मंशानुरूप सड़क पर नमाज न पढ़ने की हिदायतों का पूर्ण रुप से पालन किया गया। ग्रामीण क्षेत्र के कोड़ापुर, सलमापुर, दीवानगंज, शाहापुर, भमई,मैलहन, कोनार, अगहुआ, अरवांसी, बाबूगंज, कनौजा खुर्द, मिश्रापुर आदि गांव में शांतिपूर्ण माहौल में नमाज अदा की गई। नमाज बाद एक दूसरे के गले मिलकर ईद की मुबारकबाद

पेश करते हुए हर घरों पर सेवई खिलाकर स्वागत करने की रस्म अदा की गई। तमाम मस्जिदों पर पुलिस व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त रही। महत्वपूर्ण त्योहार पर सरकार द्वारा भरपूर विद्युत आपूर्ति एवं पेयजल व्यवस्था बहाल रही।

सीडीओ ने उ0प्र0 कौशल विकास मिशन की उपलब्धियों व योजनाओं के जागरूकता हेतु एलईडी मोबाइल वैन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रतापगढ़। उ0प्र0 कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत मिशन की उपलब्धियों एवं योजनाओं के सम्बन्ध में जागरूकता का विस्तार करने के उद्देश्य से मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया द्वारा विकास भवन परिसर में एल0ई0डी0 मोबाइल वैन व नुक्कड़ नाटक टीम को प्रचार प्रसार के लिये हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। इस एल0ई0डी0 मोबाइल वैन व नुक्कड़ नाटक टीम द्वारा सदर, पट्टी, चिलबिला, रानीगज, लालगंज अझारा, जेठवारा, कुण्डा एवं मानिकपुर, प्रतापगढ़ के आदि स्थानों पर उ0प्र0 कौशल विकास मिशन की उपलब्धियों एवं योजनाओं के सम्बन्ध में जनमानस में जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें। कार्यक्रम में जिला समन्वयक उ0प्र0 कौशल विकास मिशन दिनेश कुमार चौरसिया, जिला प्रबन्धक वन्दना सिंह एवं मृत्युंजय पाण्डेय व अन्य जनपद स्तारीय अधिकारी एवं उ0प्र0 कौशल विकास मिशन के समस्त स्टाफ आदि लोग मौजूद रहें।

ग्राम विकास अधिकारी पर मजदूरों की मजदूरी गड़प करने का आरोप

आधुनिक समाचार सेवा
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। विकास खंड लक्ष्मणपुर के सरायआना देव ग्राम पंचायत के ग्रामीणों का आरोप है कि इस ग्राम पंचायत के ग्राम विकास अधिकारी अनुराग यादव ने मजदूरों की मजदूरी ही गड़प कर लिया है।इस गाँव के अशोक कुमार सिंह उर्फ राजू एवं अन्य के अनुसार यह ग्राम विकास अधिकारी आवास में आई हुई मजदूरी का धन मजदूरों को झाँसा देकर निकलवा कर स्वयं गड़प कर गया।ग्राम विकास अधिकारी ने इस सम्बन्ध में कुछ भी बताने से इंकार कर दिया।मजदूरी न मिलने से मजदूरों के सामने रोटी के लाले पड़ गए हैं।ग्राम प्रधान के द्वारा बार-बार आग्रह करने पर कि पिछले ग्राम विकास अधिकारी के द्वारा बनवाए गए आवास की मजदूरी मजदूरों को दे दी जाय लेकिन ग्राम विकास अधिकारी अनुराग यादव ने मजदूरों को मजदूरी देने के बजाय स्वयं गड़प लिया।ग्रामीणों का यह भी आरोप है कि ग्राम विकास अधिकारी पंचायत भवन मैं बैठने को कौन कहे कभी ग्राम पंचायत में आता ही नहीं है जिससे लोगों को परेशानी उठानी पढ़ रही है।ग्राम विकास अधिकारी के न आने के कारण शासन की योजनाएं धूल फाँक रही हैं।वह अपनी मनमानी से शासन की योजनाओं से लोगों को वंचित कर रहा है।न तो लोगों को आवास की सुविधा मिल रही है न ही शौचालय आदि की। वह इस ग्राम पंचायत में समय देना मुनासिब नहीं समझता है। ग्रामीणों का कहना है की पंचायत भवन में ग्राम विकास अधिकारी के न बैठने से लोगों को जन्म प्रमाण पत्र,मृत्यु प्रमाण पत्र,दिव्यांग/वद्धा पेंशन आदि के भटकना पड़ रहा है।वह जन्म प्रमाण पत्र एवं अन्य कागजों के लिए ग्रामीणों को अपने घर आने को कहता है।समाजवादी पार्टी के करीबी होने की धौंस देने वाला यह ग्राम विकास अधिकारी इस ग्राम पंचायत को नुकसान पहुँचा रहा है। मजदूरों का कहना है कि उनकी मजदूरी को डकार जाने वाले इस ग्राम विकास अधिकारी पर आखिर अधिकारी कब कार्यवाही करेंगे।योगी सरकार में ऐसे भ्रष्ट कर्मचारियों एवं अधिकारियों से न केवल सरकार की छवि खराब हो रही है बल्कि शासन की योजनाओं से लोगों को वंचित किया जा रहा है और गरीबों और मजदूरों का शोषण हो रहा है।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने किया कारागार का निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल एवं पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने जिला कारागार का औचक निरीक्षण किया गया। जिला कारागार के औचक निरीक्षण के दौरान बैंरकों की सघन तलाशी ली गयी, बैरक में कोई भी आपत्तिजनक सामग्री नही पायी गयी। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने जेलर को सतर्क दृष्टि रखने हेतु निर्देशित किया गया कि प्रतिदिन समस्त बैरकों में बन्दियों की सघन तलाशी करायी जाये यदि किसी बन्दी के पास कोई आपत्तिजनक वस्तुयें बरामद हो तो तत्काल सम्बन्धित के विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही भी सुनिश्चित की जाये। बन्दियों के भोजन गुणवत्ता की भी समय पर जांच कराते रहे तथा शौचालय एवं नालियों आदि की समुचित सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाये। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने कारागार के नियंत्रण कक्ष में सी0सी0टी0वी0 के डिस्प्ले को भी देखा। जिलाधिकारी ने जिला कारागार के अन्दर कैदियों के अस्पताल का भी निरीक्षण किया और कैदियों से दवा की उपलब्धता व ईलाज की समुचित व्यवस्था के सम्बन्ध में जानकारी ली तो कैदियों द्वारा बताया गया कि सम्पूर्ण व्यवस्थाये प्राप्त हो रही है। जिला कारागार में जिलाधिकारी ने कैदियों से बात-चीत कर उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की।

अज्ञात नंबर से फोन पर मिली धमकी, भुक्तभोगी ने तहरीर देकर की कार्यवाही की मांग

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। अक्सर करके हर किसी के मोबाइल फोन पर अज्ञात नंबरों से फोन आ जाते हैं और उसे वह व्यक्ति गंभीरता से नहीं लेता। लेकिन कभी अज्ञात नंबर से फोन आना भी जान की जहमत बन जाता है। इसी क्रम में थाना फूलपुर अंतर्गत खंसार,मैलहन निवासी आनन्द कुमार भारतीया पुत्र बृजराज भारतीया ने बताया। कि 01 मई 2022 की रात लगभग 9 बजे एक अज्ञात नंबर से उसके फोन पर जान से मारने की धमकी देने वाली बात के साथ फोन आ रहा है। जिसमें आनन्द कुमार को उस अज्ञात व्यक्ति द्वारा जान से मारने की धमकी जैसी बातों का जिक्र सामने आ रहा है। इस बात से घबराकर आनन्द कुमार भारतीया ने थाना फूलपुर पुलिस को लिखित शिकायती प्रार्थनापत्र देते हुए अज्ञात नंबर से आ रही धमकी भरी काल्स की जांच करने तथा कार्यवाही की मांग की है।

राजस्व न्यायालयों का समय प्रात:7 बजे से 1 बजे अपराह्न तक रहेगा

आधुनिक समाचार सेवा
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। अपर जिलाधिकारी मुकेश चन्द्र ने बताया है कि उच्च न्यायालय इलाहाबाद के अनुपालन में तथा जिला बार एसोसिएशन, वकील परिषद एवं जूनियर बार एसोसिएशन (पुरातन) की सर्वसम्मति से सहमति के आधार पर दिनांक 01 मई से दिनांक 30 जून तक कलेक्ट्रेट/तहसील के समस्त राजस्व न्यायालयों का समय प्रातः 7 बजे से अपरान्ह 1 बजे तक रहेगा। पूर्वान्ह 10.30 बजे से पूर्वान्ह 11 बजे तक आधे घन्टे का मध्यांतर अनुमन्य रहेगा। जनपद न्यायाधीश ने अपने आदेश दिनांक 26 अप्रैल के अन्तर्गत दीवानी/फौजदारी न्यायालयों का समय उक्तानुसार निर्धारित किया है। जिलाधिकारी के आदेश दिनांक 30 अप्रैल के अन्तर्गत कलेक्ट्रेट/तहसील के समस्त राजस्व न्यायालयों का समय उक्तानुसार निर्धारित किया गया है। कार्यालय का समय पूर्ववतः पूर्वान्ह 10 बजे से सायं 5 बजे तक चलता रहेगा।

सेल्फी लेते समय गंगा नदी में मध्य प्रदेश के पांच लोग डूबने लगे

प्रयागराज। सेल्फी का शौक कभी-कभी इंसान को मुसीबतों में भी फंसा देता है। यहां तक की उनकी जान भी सांसत में फंस जाती है। ऐसा ही कुछ प्रयागराज में बुधवार की दोपहर में दिखा। गंगा नदी में स्नान के दौरान सेल्फी ले रहे पांच लोग पानी में डूबने लगे। घाट पर मौजूद जल पुलिस के जवान फौरन नदी में कूदकर सभी को सकुशल बाहर निकाला। नैनी के अरैल गंगा घाट पर हादसा : यह वाकया यमुनापार में नैनी थाना क्षेत्र के अरैल घाट पर बुधवार दोपहर में हुआ। अचानक नदी में डूबते लोगों को देख हड़कंप मच गया। मध्य प्रदेश के सीधी जिले से श्रद्धालु सनन के लिए अरैल घाट पर पहुंचे। वे सभी गंगा नदी में स्नान करने लगे। स्नान के दौरान कुछ लोग सेल्फी लेने लगे। उनमें शेल्फी लेने की होड़ लगी तो यह भी नहीं देखा कि वे गहरे पानी की ओर जा रहे हैं। अचानक पांच लोग गहने पानी में पहुंचकर डूबने लगे। बताते हैं कि प्रतिभा सिंह, स्वाति सिंह, प्रियंका, श्रृजल, प्रतीक सनन के दौरान सेल्फी ले रहे थे। तभी अचानक पैर फिसल जाने से वह गहरे पानी में चले गए।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 15 मई 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790

2025 महाकुंभ पर काम शुरूः भीड़भाड़ मुक्त चौराहे, मंदिरों को जाने वाले मार्ग होंगे चौड़े, कुंभ डिजिटल म्यूज़ीयम व द्वादश माधव दर्शन सर्किट पर होगा काम शुरू

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज ।महाकुंभ को भी दिव्य एवं भव्य बनाने के लिए मंडल आयुक्त संजय गोयल ने शुक्रवार सभी संबंधित विभागों की संयुक्त बैठक ली जिसमें प्रयागराज को पर्यटन की दृष्टि से और बेहतर बनाने हेतु कुछ आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। सर्वप्रथम ट्रैफिक व्यवस्था को और बेहतर बनाने हेतु हर्षवर्धन, मेडिकल कॉलेज एवं आईईआरटी जैसे प्रमुख चौराहों, जहां पर कुंभ मेला ट्रैफिक सबसे अधिक होता है, को डीकन्जेस्ट कराने के लिए फीजिबिलिटी स्टडी कराने के निर्देश दिए गए। इस कार्य हेतु उपाध्यक्ष प्रयागराज विकास प्राधिकरण अरविंद कुमार चौहान की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित कर दी गई है जिसमें पीडब्ल्यूडी, नेशनल हाईवे, सेतु निगम तथा लोक निर्माण विभाग समेत सभी संबंधित विभागों के अधिकारी होंगे। यह कमेटी सभी भीड़भाड़ वाले इलाकों का सर्वे कर अपनी फीजिबिलिटी रिपोर्ट 1 माह के भीतर मंडल आयुक्त के समक्ष प्रस्तुत करेगी। कमेटी को कुंभ के दृष्टिगत उचित पार्किंग व्यवस्था हेतु संभावित पार्किंग स्थलों का भी चिन्हिकरण करने का निर्देश दिया गया हैइसी क्रम में कुंभ मेले 2025 के दौरान शहर में सफाई व्यवस्था को और बेहतर बनाए रखने के दृष्टिगत मंडलायुक्त ने नगर निगम के अधिकारियों को अपशिष्ट एवं लिक्विड वेस्ट प्रबंधन हेतु भी एक

विस्तृत कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिए हैं जिससे कि आने वाले वर्षों में अपशिष्ट प्रबंधन हेतु ठोस इंतजाम किए जा सके। उन्होंने विभाग को प्राथमिकता वाले प्रोजेक्ट्स की सूची तैयार करने को भी कहा है जिससे कि निर्धारित समय सीमा में जितने भी प्रोजेक्ट पूरे किए जा सकें सिर्फ उन्हें ही लिया जाए। बैठक में अरैल स्थित त्रिवेणी पुष्प पर एक कुंभ डिजिटल म्यूजियम बनाने का भी सुझाव पर्यटन विभाग द्वारा दिया गया जिस पर मंडलायुक्त ने एक विस्तृत कायर्योजना तैयार कर उनके समक्ष प्रस्तुत करने को कहा है। इस प्रपोजल के साथ ही कर्जन ब्रिज पर जो रिवर वाटर म्यूजियम बनाने का प्रस्ताव पहले से दिया जा चुका है उस पर भी आगे की कार्यवाही करने को कहा गया है। साथ ही पर्यटन की दृष्टि से पत्थर गिरजाघर की रोटरी को भी और विकसित करने पर चर्चा की गई एवं उसे और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है इस पर सुझाव मांगे गए हैं। प्रयागराज में आने वाले श्रद्धालुओं को प्रमुख मंदिरों तक जाने में कोई कठिनाई न हो इसके दृष्टिगत कुछ प्रमुख मंदिरों की अप्रोच रोड के चौड़ीकरण का भी सुझाव दिया गया है जिसमें ललिता देवी मंदिर एवं तक्षक पीठ तक जाने वाली सड़कों को और चौड़ा करने का सुझाव दिया गया है। साथ ही प्रयागराज की महत्वता को दर्शाते यहां के द्वादश माधव मंदिरों को पर्यटन सर्किट से जोड़ने हेतु एक द्वादश माधव दर्शन सर्किट बनाने के भी निर्देश पर्यटन विभाग को दिया गया है जिससे कि यहां आने वाले श्रद्धालुओं को सभी मंदिरों का दर्शन एक बार में ही कराया जा सके। बैठक में विद्युत विभाग द्वारा कुंभ मेला क्षेत्र, आसपास के प्रमुख मंदिरों तथा अन्य भीड़भाड़ वाले इलाकों पर वायरिंग अंडरग्राउंड कराने का भी सुझाव दिया गया है। साथ ही सिंचाई विभाग ने मनसैता नाले पर स्थाई पुलिया बनाने, दशाश्वमेध घाट का जीर्णोद्धार करने एवं नाग वासुकी के पास कटान निरोधक कार्य कराने हेतु भी प्रपोजल दीया है जिसकी समीक्षा करते हुए मंडलायुक्त ने सभी कार्यों की फीजिबिलिटी रिपोर्ट आईआईटी से कराकर उनके समक्ष प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं।

जेठवारा में भागवत कथा होगी 2 मई से

(आधुनिक समाचार सेवा)
रामेन्द्र सिंह

प्रतापगढ़।जेठवारा ग्राम पंचायत के पूरे बैसान गाँव में 2 मई से श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के

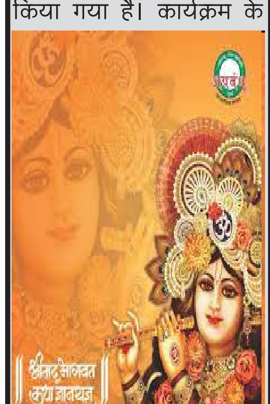

संयोजक नरसिंह बहादुर सिंह ने बताया कि 2 मई से 9 मई तक शाम 3 बजे से 7बजे तक होने वाले कथा समारोह के कथा वाचक डॉ0विद्या कांत शुक्ल होंगे। 9 मई को हवन एवं 10 मई को भंडारे का आयोजन किया गया है।

विकास के नाम पर प्रधान एवं ग्राम विकास अधिकारी कर रहा है सरकारी धन का दुरुपयोग

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़।विकास खण्ड लक्ष्मणपुर की ग्राम पंचायत चमरूपुर शुक्लान में ग्राम प्रधान और ग्राम विकास अधिकारी विकास के नाम पर शासन के धन का दुरुपयोग कर रहे हैं।वे शासन के धन को लूट कर अपनी जेब भरने में लगे हुए हैं। इस ग्राम पंचायत का प्रधान कोई और है और प्रधानी कोई और कर रहा है। इस ग्राम के प्रधान के रूप में राजा मौर्य अपने आप को घोषित कर रखा है।हलाकि प्रधान अनुसूचित जाति की महिला है लेकिन यह महोदय अपनी जाति के ग्राम पंचायत अधिकारी सुधाकर मौर्य से मिलीभगत करके खुद प्रधान बन बैठे हैं क्योंकि इनके पिता भी प्रधान रह चुके हैं इसलिए यह खुद को प्रधान घोषित करके ग्राम पंचायत के पैसे को लूटने में लगे हुए हैं।इनकी आमदनी इतनी अधिक बढ़ गई है कि इनकी आय में रोज इजाफा हो रहा है।कहीं जमीन लिखवा रहे हैं तो कहीं अन्य संपत्तियों को खरीद रहे हैं।योगी सरकार ऐसे लोगों की आय की जाँच क्यों नहीं करवाती है।ग्रामीणों का कहना है इनका साथ दे रहे हैं ग्राम पंचायत अधिकारी सुधाकर मौर्या जो पहले भी अपने भ्रष्टाचार के कारण निलंबित हो चुके हैं। यह दोनों ग्राम पंचायत के कार्यों को मानक एवं गुणवत्ता के बजाय औपचारिकता पूरा करने में लगे हुए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि खड़ंजा मरम्मत तथा इंटरलॉकिंग के नाम पर लाखों का खेल कर रहे हैं। पंचायत भवन मरम्मत के नाम पर लाखों लूट किए हैं तथा अपने चहेते एक ही परिवार के 7 सदस्यों को एकमुश्त शौचालय प्रधान एवं कथित प्रधान महोदय दे चुके हैं। मनरेगा योजना का कार्य हो या मेड़बंदी व समतलीकरण सिर्फ कागजी कार्य कर रहे हैं।यहाँ आवास योजना की लिस्ट में नाम दर्ज कराने को वसूली की जा रही है।ग्राम पंचायत अधिकारी सुधाकर मौर्य ट्रस्ट आचार इस ग्राम पंचायत को भी खोखला कर रहा है। ग्राम पंचायत की कोई भी बैठक आयोजित नहीं हो रही है।सदस्यों के फर्जी हस्ताक्षर किए जा रहे है और कार्य योजना तैयार की जा रही है।मजदूरों से मनरेगा का पैसा निकलवा कर 300 देकर सम्पूर्ण पैसा ग्राम पंचायत अधिकारी और ग्राम प्रधान द्वारा हड़प लिया जा रहा है। एडीओ पंचायत भी इस भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं जिससे लोग उन पर भी उंगली उठा रहे हैं। गाँव के पवन कुमार शुक्ला,आशुतोष ओझा तथा अन्य लोगों ने उच्च अधिकारियों से जाँच एवं कठोर कार्यवाही करने की माँग की है।

ग्राम विकास अधिकारी पर मजदूरों की मजदूरी गड़प करने का आरोप

आधुनिक समाचार सेवा
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। विकास खंड लक्ष्मणपुर के सरायआना देव ग्राम पंचायत के ग्रामीणों का आरोप है कि इस ग्राम पंचायत के ग्राम विकास अधिकारी अनुराग यादव ने मजदूरों की मजदूरी ही गड़प कर लिया है।इस गाँव के अशोक कुमार सिंह उर्फ राजू एवं अन्य के अनुसार यह ग्राम विकास अधिकारी आवास में आई हुई मजदूरी का धन मजदूरों को झाँसा देकर निकलवा कर स्वयं गड़प कर गया।ग्राम विकास अधिकारी ने इस सम्बन्ध में कुछ भी बताने से इंकार कर दिया।मजदूरी न मिलने से मजदूरों के सामने रोटी के लाले पड़ गए हैं। ग्राम प्रधान के द्वारा बार-बार आग्रह करने पर कि पिछले ग्राम विकास अधिकारी के द्वारा बनवाए गए आवास की मजदूरी मजदूरों को दे दी जाय लेकिन ग्राम विकास अधिकारी अनुराग यादव ने मजदूरों को मजदूरी देने के बजाय स्वयं गड़प लिया।ग्रामीणों का यह भी आरोप है कि ग्राम विकास अधिकारी पंचायत भवन मैं बैठने को कौन कहे कभी ग्राम पंचायत में आता ही नहीं है जिससे लोगों को परेशानी उठानी पढ़ रही है।ग्राम विकास अधिकारी के न आने के कारण शासन की योजनाएं धूल फाँक रही हैं।वह अपनी मनमानी से शासन की योजनाओं से लोगों को वंचित कर रहा है।न तो लोगों को आवास की सुविधा मिल रही है न ही शौचालय आदि की।वह इस ग्राम पंचायत में समय देना मुनासिब नहीं समझता है। ग्रामीणों का कहना है की पंचायत भवन में ग्राम विकास अधिकारी के न बैठने से लोगों को जन्म प्रमाण पत्र,मृत्यु प्रमाण पत्र,दिव्यांग/वद्धा पेंशन आदि के भटकना पड़ रहा है।वह जन्म प्रमाण पत्र एवं अन्य कागजों के लिए ग्रामीणों को अपने घर आने को कहता है।समाजवादी पार्टी के करीबी होने की धौंस देने वाला यह ग्राम विकास अधिकारी इस ग्राम पंचायत को नुकसान पहुँचा रहा है। मजदूरों का कहना है कि उनकी मजदूरी को डकार जाने वाले इस ग्राम विकास अधिकारी पर आखिर अधिकारी कब कार्यवाही करेंगे।योगी सरकार में ऐसे भ्रष्ट कर्मचारियों एवं अधिकारियों से न केवल सरकार की छवि खराब हो रही है बल्कि शासन की योजनाओं से लोगों को वंचित किया जा रहा है और गरीबों और मजदूरों का शोषण हो रहा है।

वाह रे ग्राम विकास अधिकारी, मजदूरों की मजदूरी भी गड़प

आधुनिक समाचार सेवा
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़।विकास खंड लक्ष्मणपुर के सरायआना देव ग्राम पंचायत के ग्रामीणों का आरोप है कि इस ग्राम पंचायत के ग्राम विकास अधिकारी अनुराग यादव ने मजदूरों की मजदूरी ही गड़प कर लिया है।इस गाँव के अशोक कुमार सिंह उर्फ राजू एवं अन्य के अनुसार यह ग्राम विकास अधिकारी आवास में आई हुई मजदूरी का धन मजदूरों को न देकर स्वयं गड़प कर गया। इससे मजदूरों के सामने रोटी के लाले पड़ गए हैं।ग्राम प्रधान के द्वारा बार-बार आग्रह करने पर कि पिछले ग्राम विकास अधिकारी के द्वारा बनवाए गए आवास की मजदूरी मजदूरों को दे दी जाय लेकिन ग्राम विकास अधिकारी अनुराग यादव ने मजदूरों को मजदूरी देने के बजाय स्वयं गड़प लिया।ग्रामीणों का यह भी आरोप है कि ग्राम विकास अधिकारी पंचायत भवन मैं बैठने को कौन कहे कभी ग्राम पंचायत में आता ही नहीं है जिससे लोगों को परेशानी उठानी पढ़ रही है।ग्राम विकास अधिकारी के न आने के कारण शासन की योजनाएं धूल फाँक रही हैं।वह अपनी मनमानी से शासन की योजनाओं से लोगों को वंचित कर रहा है।न तो लोगों को आवास की सुविधा मिल रही है न ही शौचालय आदि की।वह इस ग्राम पंचायत में समय देना मुनासिब नहीं समझता है। ग्रामीणों का कहना है की पंचायत भवन में ग्राम विकास अधिकारी के न बैठने से लोगों को जन्म प्रमाण पत्र,मृत्यु प्रमाण पत्र,दिव्यांग/वद्धा पेंशन आदि के भटकना पड़ रहा है।वह जन्म प्रमाण पत्र एवं अन्य कागजों के लिए ग्रामीणों को अपने घर आने को कहता है। समाजवादी पार्टी के करीबी होने की धौंस देने वाला यह ग्राम विकास अधिकारी इस ग्राम पंचायत को नुकसान पहुँचा रहा है।मजदूरों का कहना है कि उनकी मजदूरी को डकार जाने वाले इस ग्राम विकास अधिकारी पर आखिर अधिकारी कब कार्यवाही करेंगे।योगी सरकार में ऐसे भ्रष्ट कर्मचारियों एवं अधिकारियों से न केवल सरकार की छवि खराब हो रही है बल्कि शासन की योजनाओं से लोगों को वंचित किया जा रहा है और गरीबों और मजदूरों का शोषण हो रहा है।

मऊ में जज को अपशब्द कहना पड़ा भारी, मुख्तार अंसारी के अधिवक्ता के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊ। माफिया मुख्तार अंसारी के अधिवक्ता दारोगा सिंह द्वारा जज को अपशब्द देना महंगा पड़ गया। इस मामले में राजस्व निरीक्षक की तहरीर पर सरायलखंसी थाने में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। इस मामले में विधिक कार्रवाई शुरू होने के बाद अब सभी की निगाह में यह प्रकरण आ गया है। प्रदेश स्तर पर भी यह मामला चर्चा में है। प्रभारी मंत्री संजय निषाद बीते शनिवार को जनपद में आए थे। वह आजमगढ़ से आने से पहले सीधे किन्नुपुर गांव में पहुंचे थे। यहां ग्रामीणों ने रास्ते की मांग की थी। प्रभारी मंत्री ने डीएम अरुण कुमार को निर्देश दिया था कि पैमाइश कराकर रास्ता निकाला जाए। इसी के क्रम में शनिवार को राजस्व टीम गांव का निरीक्षण कर पैमाइश कर रही थी। इसी बीच वहां पर मुख्तार अंसारी के अधिवक्ता दारोगा सिंह भी पहुंच गए और

राजस्व कर्मियों से उनकी बहस होने लगी थी। पुलिस प्रशासन के अनुसार दरोगा सिंह ने काम रोकने की बात करते हुए जज को अपशब्द कहा। इसका वीडियो तेजी से वायरल होने लगा था। एसपी सुशील घुले ने जांच के बाद उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज करने का आदेश दिया। इस पर राजस्व निरीक्षक बदुआगोदाम राजेश कुमार सिंह ने सरायलखंसी थाने में धारा 294, 504, 353 के तहत प्राथमिकी दर्ज कराई है। इस बाबत थाना प्रभारी केके गुप्ता ने एक दिन पूर्व ही बताया था कि वायरल वीडियो की जानकारी होने के बाद इसकी जांच की जा रही है। वहीं इस मामले में अधिवक्ता दरोगा सिंह ने बताया कि मेरे ऊपर जमीन कब्जा करने का आरोप लगा था। पैमाइश के दौरान मेरी 30 कड़ी जमीन कम पाई गई है। न्यायाधीशों को गाली देने का साजिशपूर्वक वीडियो बनाकर वायरल किया गया है। मेरे ऊपर दबाव बनाने व पेशबंदी के लिए इस तरह का कृत्य किया गया है। इसे मैं ऊपर तक ले जाऊंगा। बोले पुलिस अधीक्षक : कानूनगों के बस के दौरान दारोगा सिंह ने न सिर्फ न्यायाधीशों को गाली दी है बल्कि बदसलूकी भी की है। कानूनगो से इसकी पुष्टि की जा रही है। जांच करके संबंधित के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया जाएगा।

जौनपुर में चुनाव को लेकर निकायों में वार्डों का होगा परिसीमन, जनसंख्या के आधार पर तय होगी संख्या

जौनपुर । जिले के तीन नगर पंचायतों कचगांव, गौराबादशाहपुर व रामपुर में वार्डों के परिसीमन की तैयारी तेज हो गई है। इसके लिए शासन से पत्र भी प्राप्त हो गया है। शासन से आबादी को आधार बनाया गया है। इसमें 2011 की जनगणना के आधार पर वार्डों का निर्धारण व परिसीमन तय किया जाएगा। इसके अनुसार दस हजार आबादी तक दस वार्डों का निर्धारण किया जाएगा तो साढ़े बारह हजार तक 11 वार्ड बनेंगे। शासन से जल्द ही इसकी रिपोर्ट मांगी गई है। नगर पंचायत में न्यूनतम वार्डो की संख्या दस तो अधिकतम 24 होगी। इसमें पूरे नगर निकाय की जनसंख्या के सापेक्ष प्रत्येक वार्ड की संख्या समान होगी। किसी विशेष परिस्थिति में निकाय के कक्ष की औसत जनसंख्या से 15 फीसद कम या अधिक हो सकेगी। जल्द ही समस्त नगरीय निकायों के वार्डों के परिसीमन की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। वार्डों की सीमा विस्तार में दिशा-निर्देश के साथ स्थाई चिन्ह का उपयोग करना है। जिससे सीमा बिल्कुल स्पष्ट हो जाए। यथासंभव भौगोलिक सीमा, पक्की सड़क, रेलवे लाइन या मोहल्ले के नाम पर सीमा विस्तार किया जाएगा। परिसीमन में मानचित्रों में कक्ष, मोहल्ले, सड़कों, नदियों, नाले, रेलवे लाइन आदि स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किए जाएंगे। मोहल्ले का नाम भी स्पष्ट करते हुए सभी की सीमाएं स्पष्ट रूप से अंकित करनी हैं। इस मानचित्र को जिला मजिस्ट्रेट प्रमाणित करेंगे। नगर निकाय के प्रत्येक वार्ड के नाम व नंबर के सम्मुख सम्मिलित कालोनी, मोहल्ला, ग्राम व प्रधानों के नाम का उपयोग करना उपयोगी

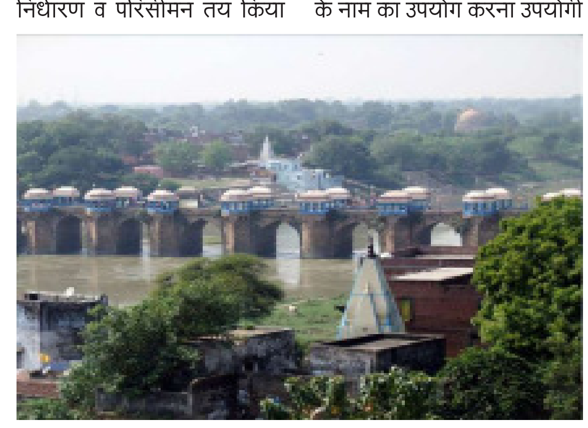

होगा। सभी निकायों में चुनाव की कार्रवाई अतिशीघ्र पूर्ण की जानी है। अतः किसी भी प्रकार के विलंब के लिए संबंधित जिले के अधिकारी उत्तरदाई होंगे। जिले में कुल 12 नगर निकायों की संख्या है। इसमें से नौ पुराने व तीन नए निकायों का गठन हुआ है। इसमें नगर पालिका परिषद जौनपुर, मुंगराबादशाहपुर व शाहगंज हैं तो नगर पंचायत बदलापुर, जफराबाद, मछलीशहर, खेतासराय, मडि़याहूं, केराकत है। नए निकायों में नगर पंचायत कजगांव, रामपुर, गौराबादशाहपुर में अभी वार्डों का गठन नहीं हो सका है। शासन से पत्र प्राप्त हुआ है, शासन के दिए गए मानकों के आधार निकायों व वार्डों का सीमांकन किया जाएगा। इसको जल्द तैयार करके शासन को भेजा जाएगा। इसी की जनसंख्या को आधार मानते हुए मतदाताओं की सूची तैयार की जाएगी।

वाराणसी फल मंडी में पश्चिम बंगाल की लीची ने दी दस्तक

वाराणसी। शहर ही पहड़ि?या फल मंडी में पश्चिम बंगाल से लीची की आवक शुरू हो चुकी है। मंगलवार को बंगाली लीची ने मंडी में दस्तक दे दी। बंगाल से आने वाली इस लीची की कीमत फिलहाल 180 से 200 रुपये के बीच होने से अभी जायका हर किसी के वश में नहीं है। बाजार में लीची की आमद के साथ ही जायके के लिए लोगों का मन भी खूब मचल रहा है लेकिन बाजार का भाव लोगों की जेबों को अनुमति नहीं दे रहा है। हालांकि, कुछ जायकों के मुरीद लोग बाजार में लीची की दस्तक के साथ ही उसे खरीद भी रहे हैं। कारोबारियों व आढ़तियों के अनुसार बंगाल की लीची मंडी में सबसे पहले दस्तक दी है। पश्चिम बंगाल के बागों से लीची की दस्तक के बीच अब मुजफ्फरपुर की लीची की प्रतीक्षा भी कारोबारी और आढ़ती कर रहे हैं। पहडिया मंडी में मंगलवार को बंगाल की लीची ने अपनी आमद दर्ज कराई तो मंडी में खूब मोलभाव भी हुआ। लेकिन, कीमतों ने लोगों के दांत भी खट्टे किए। त्योहारी मौका होने की वजह से कुछ खरीदारों ने कीमतों की परवाह न करते हुए लीची को खरीदा और टेस्ट भी किया। अभी लीची में मिठास के साथ ही खट्टा स्वाद भी बरकरार है। माना जा रहा है कि सप?ताह भर के बाद लीची का रंग भी हरे से लाल होगा और मिठास भी भरपूर होगी। लीची का प्रवेश बनारस की पहडिया मंडी में होने के बाद से ही मोलभाव के बीच लोग जायकों पर चर्चा कर रहे हैं। अभी बाजार में लीची का फुटकर रेट 180 रुपया से 200 रुपया किलो तक है। जो आम आदमी की पहुंच से फिलहाल दूर ही है। मंडी में लीची की आवक छोटे छोटे व्यापारियों द्वारा डिमांड पर ही अभी निर्भर है। आढ़तियों के अनुसार अभी इसकी आवक डिमांड के आधार पर ही हो रही है। लीची का फुटकर रेट 180 रुपया से लेकर 200 रुपया किलो तक होने की वजह से बिक्री कम है। कुछ ही दिनों में बिहार के मुजफ्फरपुर की लीची के आ जाने के बाद रेट सामान्य हो जाएगा। जिसमें 10 से 15 दिन का समय लग सकता है। इसके बाद लीची का रेट आम लोगों के बजट में आ जाएगा।

अक्षय तृतीया पर वाराणसी का झूमा बाजार 600 करोड़ का कारोबार

वाराणसी । अबकी अक्षय तृतीया पर खरीददारी के सारे रिकार्ड टूट गए। मंगलवार को अक्षय फल की कामना ने कारोबार को 600 करोड़ के पार पहुंचा दिया। दो साल कोरोना

की बंदिशों के कारण पर्व विशेष पर भी बाजार मंदा था, लेकिन इस बार लगनी सीजन के मेल से धंधा कुछ अधिक ही चंगा रहा। इससे पहले वर्ष 2019 में सबसे अधिक 500 करोड़ रुपये का रिकार्ड कारोबार दर्ज किया गया था। महंगाई के बाद भी अक्षय तृतीया पर सोने व हीरे के आभूषणों की रिकार्ड बिक्री ने कोरोना के असर को भी बेअसर साबित कर दिया। ईद के कारण सभी बाजार बंद थे, सिवाय सराफा के। ज्वेलरी की दुकानों रात के 12 बजे तक खुली रहीं। दो साल की कोरोना काल के गाल में बाजार को एक तरह से संजीवनी मिल गई। वहीं लोगों ने करीब 100 करोड़ फ्लैट की भी बुकिंग कराई कोरोना से पहले 2019 में अक्षय तृतीया पर जहां सोने की कीमत 35 हजार प्रति ग्राम थी। वहीं, इस साल बढ़कर 53 हजार प्रति ग्राम हो गई। बावजूद इसके लोगों ने जमकर खरीदारी की। लहुराबीर के सराफा कारोबारी गुंजन अग्रवाल ने बताया कि रात 12 बजे तक शोरूम में ग्राहक आते रहे। इस बार बहुत अच्छी बिक्री हुई। अभी तक की सबसे अच्छा कारोबार कहा जा सकता है। लोग छोटे-बड़े हर तरह के आभूषण खरीद रहे थे पूर्वांचल के साथ ही बिहार के भी कुछ हिस्सों के लिए सबसे बड़ी सराफा मंडी बनारस में ही है। ठठेरी बाजार, सुडिया, रेशम कटरा, गोविंदपुरा, नारियल बाजार, कोदई चौकी कर्णघंटा, छत्तातले आदि क्षेत्रों में तो सिर्फ की थोक बाजार ही है। उत्तर प्रदेश स्वर्णकार संघ के जिला महामंत्री किशोर कुमार सेठ ने बताया कि जिले में लगभग 80 से ज्यादा बड़े शोरूम व छोटी-बड़ी गलियों को मिलाकर 3000 हजार से अधिक अन्य ज्वेलरी दुकानें हैं।

बी0एच0यू0 के कुलपति के इफ्तार पार्टी के खिलाफ छात्रों ने मनाई परशुराम जयंती, पार्टी में शामिल लोगों की कोरोना जांच की मांग

वाराणसी । बीएचयू में आयोजित इफ्तार पार्टी में कुलपति प्रो. सुधीर के जैन का जाना अब प्रशासन के लिए मुसीबत बन गया है। उसी दिन से तमाम विरोध प्रदर्शन हो रही है।

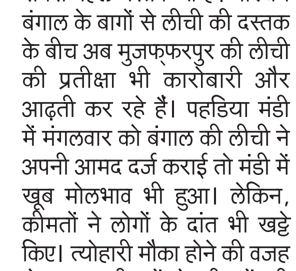

इसी कड़ी में बीएचयू के छात्रों ने कुलपति आवास के बाहर विरोध स्वरूप परशुराम जयंती मनाई। इस दौरान विरोध प्रदर्शन भी किया। साथ ही कुलपति का तुतला भी दहन किया। इसे लेकर सुरक्षाकर्मियों से झड़प भी हुई। वहीं छात्रों ने जिस इफ्तार पार्टी में कुलपति शामिल हुए थे इसमें शामिल सभी लोगों के कोरोना जांच की मांग की है।साथ कुलपति आवास को सैनिटाइज करने व आपदा प्रबंधन एक्ट के तहत कुलपति सहित सभी पर कार्रवाई की मांग की है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कुलपति द्वारा रोजा इफ्तार पार्टी में शामिल होने का मामला तूल पकड़ते जा रहा है। छात्र आए दिन वीसी आवास के बाहर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। मालूम हो कि छात्रों ने कुलपति समेत विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों को परशुराम जयंती के कार्यक्रम में भी सम्मिलित होने का न्योता दिया था। छात्रों ने कहा कि कुलपति के निजी सचिव द्वारा यह सूचना दी गई कि कुलपति कोरोना पाजिटिव पाए गए हैं। ऐसे में छात्रों ने मांग की है कि कुलपति आवास को तत्काल प्रभाव से सेनिटाइज करके जो लोग कुलपति के संपर्क में आए हैं उन लोगों को कोरांटाइन किया जाए छात्रों ने यह भी कहा है कि आपदा प्रबंधन एक्ट के तहत कुलपति समेत विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारियों पर कार्रवाई किया जाए। आरोप लगाया कि पुतला दहन कर रहे छात्रों व सुरक्षाकर्मियों में पुतले की छिना झपटी भी हुई। इस दौरान छात्रों ने जमकर नारेबाजी भी की। छात्रों ने कहा कि जब तक कुलपति लिखित रूप से माफी नहीं मांग लेते छात्र अपना विरोध दर्ज कराते रहेंगे। उन्होंने कहा कि काशी हिंदू विश्वविद्यालय को इस्लामिक विश्वविद्यालय किसी भी शर्त पर नहीं बनने दिया जाएगा। इस मौके पर मृत्युंजय तिवारी आजाद, पतंजलि पांडेय, आशीर्वाद दुबे, पल्लव सिंह, अक्षत पांडेय, अवलंब दुबे, राहुल, वैभव तिवारी, अधोक्षज आदि मौजूद थे।

सोनभद्र में भी गरजा बाबा बुल्डोजर एनसीएल की जमीन को कराया कब्जा मुक्त

(आधुनिक समाचार सेवा)
शैलेन्द्र कुमार

सोनभद्र। जहाँ एक तरफ अवैध अतिक्रमण समेत भूमाफियाओं पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का बुल्डोजर लगातार चल रहा है और अवैध निर्माण बिल्डिंगों को तोड़कर कब्जा मुक्त कराया जा रहा है जिसमे सोनभद्र भी शामिल हो गया सोनभद्र जिले के शक्तिनगर में आज एनसीएल खड़िया परियोजना की भूमि पर राहुल पैलेस और दुकान पर आज उपजिलाधिकारी और क्षेत्राधिकारी की मौजूदगी में पर्याप्त पुलिसफोर्स के साथ दो मंजिला होटल और दुकान को बुल्डोजर लगाकर धराशाही कर दिया गया। उपजिलाधिकारी द्वारा बताया गया कि 2012 में इस होटल को बनाकर बड़े पैमाने पर कब्जा किया गया था। जिसके बाद 2020 में ध्वस्तीकरण को लेकर नोटिस भी दी गयी थी पर पर्याप्त पुलिसफोर्स न होने के कारण कार्यवाही रुक गयी थी जिसके बाद 30 अप्रैल को नोटिस देकर आज बुल्डोजर से धराशाही कर दिया गया। कब्जा मुक्त कराये गए भूमि की कीमत लागभग 5 करोड़ रुपये की बताई जा रही है। और आगे भी अवैध अतिक्रमण को मुक्त कराने को लेकर बुल्डोजर चलेगा। प्रदीप सिंह चंदेल (क्षेत्राधिकारी पिपरी सोनभद्र) द्वारा बताया गया कि 200 की संख्या में पुलिस फोर्स को ध्वस्तीकरण के लिए लागये गए थे जिससे किसी प्रकार की अशान्ति न फैलने पाए और शांतिपूर्ण तरीके से अवैध कब्जे को मुक्त कराया जा सके।

बाल विवाह के बारे में जानकारी प्राप्त होते ही तत्काल लिया गया संज्ञान

(आधुनिक समाचार सेवा)
शैलेन्द्र कुमार

सोनभद्र। आज चाइल्ड लाइन1098 से प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना बभनी के ग्राम मचबंधवा सोनभद्र में नाबालिग लड़की की शादी अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर छत्तीसगढ़ के रहने वाले व्यक्ति के साथ शादी किये जाने की तैयारी हो रही थी। उक्त सूचना के आधार पर तत्काल संज्ञान लेते हुए जिला बाल संरक्षण अधिकारी पुनीत टण्डन द्वारा महिला शक्ति केंद्र से जिला समन्वयक सुश्री साधना मिश्रा,जिला बाल संरक्षण इकाई सोनभद्र से संरक्षण अधिकारी गायत्री दुबे,ओर आर डब्लूयू शेषमणि दुबे के टीम का गठन करते हुए निर्देशित किए की तत्काल नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही करना सुनिश्चित करते हुए कृत कार्यवाही से अधोहस्ताक्षरी को अवगत कराना सुनिश्चित करे। साथ मे ही डॉ0 राम मनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय लखनऊ के बाल संरक्षण विशेषज्ञ / यूनिसेफ से सत्यवान द्वारा थाना बभनी से समन्वय स्थापित करते हुए विवाह स्थान पर हुंचे जहां पर आज ही जिला बलरामपुर छत्तीसगढ़ से बारात आ रही थी। जहा पर शादी करने की तैयारी चल रही थी तभी टीम द्वारा बालिका के माता, पिता से बालिका के उम्र के संबंध में साक्ष्य चाहा गया बालिका के उम्र के संबंध में प्राप्त साक्ष्य के आधार पर बालिका की उम्र 17 वर्ष पाया गया।टीम द्वारा बालिका के माता, पिता व अन्य उपस्थित लोगों को बाल विवाह एक कानूनन अपराध है, बाल विवाह से होने वाले हानियों के बारे में भी बताया गया बालिका के माता-पिता के परामर्श के उपरांत भी बालिका की पुनः एक, दो दिवस व्यतीत होने के उपरांत शादी किए जाने की संभावना प्रतीत हो रही थी। जिसके दृष्टिगत टीम द्वारा नाबालिग बालिका को अपने अभिरक्षा में लेते हुए बाल कल्याण समिति सोनभद्र के समक्ष प्रस्तुत किए जाने हेतु ले जाया गया।

अग्रवाल धर्मार्थ सेवा समिति द्वारा किया गया गौशाला निर्माण का भूमि पूजन

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरि

डाला (सोनभद्र)। अक्षय तृतीया के शुभ मुहूर्त पर अग्रवाल धर्मार्थ गौ सेवा समिति द्वारा आज मंगलवार को स्थित बाडी अग्रसेन नगर में गौशाला निर्माण के लिए चयनित भूमि का पूजन किया गया समिति के अध्यक्ष मुकेश गर्ग की अध्यक्षता में गौशाला निर्माण के लिए ली गई दो एकड़ जमीन पर हरियाणा से आए विद्वान पंडित सत्यनारायण शर्मा द्वारा पूजा में सपतनीक बैठे नवनीत अग्रवाल से गौरी गणेश नवग्रह कलश आदि का स्थापना कर विधि-विधान से गगनभेदी मंत्रोचार के साथ हवन पूजन व आरती कराया गया उपस्थित लोगों में प्रसाद वितरण किया गया इस दौरान पंडित श्री शर्मा ने कहा कि गौमाता में 33 करोड़ देवताओं का वास होता है गाय का दूध और मूत्र अमृत के समान है जहां गाय रहती है वह स्थान पवित्र हो जाता है जिस घर में गौ पूजा होती है वह पर सदा धन-धान्य से परिपूर्ण होता है अग्रवाल धर्मार्थ को सेवा समिति के अध्यक्ष श्री गर्ग ने कहा कि गौशाला के लिए समिति द्वारा 2 एकड़ जमीन ली गई है जिस पर निर्माण कार्य जल्द ही पूरा करके तीन से चार माह में बनाकर तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है इस गौशाला में लूली लंगड़ी सड़क पर घूम रही बेसहारा व वाहनों से धक्का खा कर चोटिल हुए गाय को लाकर उनकी दवा व सेवा किया जाएगा गोवंश हेतु सभी सुविधाएं से युक्त गौशाला का निर्माण होगा गाय को केवल दूध देने का साधन नहीं समझना चाहिए जहां गौ सेवा होती है वहां निश्चित ही शांति और खुशहाली आती है इस मौके पर कृष्ण गर्ग, सुभाष मित्तल, सतवीर बंसल, महावीर गोयल, दौलतराम बंसल, सज्जन गर्ग, राजेंद्र गर्ग, जगदीश बंसल, राजकुमार जैन, दिनेश गर्ग, पुरुषोत्तम मित्तल, राकेश गर्ग, मुकेश जैन, आदि लोग मौजूद रहे।

बरातियों को ले जा रही बस अनियंत्रित होकर पलटी, दो घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरि

डाला (सोनभद्र)। चोपन थाना क्षेत्र के कोटा अम्माटोला सनायडंडी बस्ती के पास सोमवार की रात बरातियों से भरी बसअनियंत्रित होकर रोड के किनारे पलट गई, दुर्घटना में दो लोग घायल हो गए। उन्हें पीछे आ रहे अन्य बारतियो ने वाहन से कोटा के निजि अस्पताल में भर्ती कराया। बरातियों से भरी एक बस अहरौरा के पटीहटा डमिलियाचट्टी से कोन थाना अन्तर्गत रामगढ़ को जा रही थी। रात नौ बजे चोपन थाना अन्तर्गत सनायडंडी ज़ब पहुंची तो सामने से आ रहे एक वाहन की लाइट से सीधी बस चालक की आँखों पर पड़ी तो बस चालक ने ब्रेक मार दिया, जिससे बस सड़क किनारे जाकर पलट गई। इस हादसे में बस पर सवार दिनेश 45 वर्ष पुत्र शंकर साव व मुशे 22 वर्ष पिता कैलाश, निवासी पटीहटा इमिलियाचट्टी घायल हो गए। बाकी अन्य बारतियों को हल्की फुल्की चोटे आई। घटना के वक्त बस पर लगभग पच्चीस बराती सवार थे। दुर्घटना की सूचना मिलते ही डाला चौकी इंचार्ज मनोज कुमार ठाकुर मय फोर्स मौके पर पहुंचे। दुर्घटनाग्रस्त बस को क्रेन की मदद से सड़क से हटवाया। बरातियों को अन्य वाहन से रामगढ़ बरात स्थल तक पहुंचाया गया।

टाटा मैजिक व बोलेरो की टक्कर में 4 घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनिल कुमार अग्रहरि

डाला (सोनभद्र)। हाथीनाला थाना क्षेत्र अंतर्गत दूद्धी मार्ग पर गरदरवा मोड़ के पास टाटा मैजिक व बोलेरो की आमने सामने टक्कर हो गई इस हादसे में बोलेरो व मैजिक सवार चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए वहीं सूचना मिलते ही मौके पर हाथीनाला पुलिस ने पहुंच कर घायलों को उपचार के लिए दुद्धी सामुदाय स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया हाथीनाला थाना अध्यक्ष रविंदर प्रसाद ने बताया कि आज सोमवार दोपहर लगभग दो बजे बोलोरो दुद्धी की ओर जा रही थी कि गढ़दरवा मोड पर पहुंचते ही सामने से आ रही टाटा मैजिक में आमने-सामने जोरदार टक्कर हो गई दोनों वाहनों के परखच्चे उड़ गए जानकारी के मुताबिक मैजिक सवार (35) वर्षीय अर्जुन कुमार गुप्ता पुत्र राजेश्वर निवासी कनकपुर थाना रमुना गढ़वा झारखंड रामजन्म (35) वर्षीय पुत्र से रामजनम निवासी गरदरवा राम लखन (45) वर्षीय पुत्र शिवप्रसाद निवासी ग्राम बहेरा डोल हाथीनाला समेत बोलेरो चालक रोहित पटेल (22) वर्ष पुत्र स्वर्गीय सदानंद पटेल निवासी बीडर दुद्धी घायल हो गए पुलिस की मदद से सभी घायलों को दुद्धी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया गया परिजनों को सूचना देने के बाद घटना में शामिल वाहनों को सड़क किनारे करा कर यातायात बहाल कराया गया।

अकीदत के साथ मना ईद का पर्व, गले मिलकर दी मुबारकबाद

सोनभद्र। ईद का पर्व मंगलवार को जिले में अकीदत व पाकीजगी के साथ मनाया गया। जिले भर के ईदगाहों, मस्जिदों में ईद की नमाज पढ़ाई गई। इस दौरान मुस्लिम बंधुओं ने देश में अमन, चैन के लिए दुआएं मांगी। पिछले दो साल से कोरोना के चलते ईदगाहों पर सार्वजनिक नमाज नहीं हुई थी। अदा कराई। नूरी मस्जिद में मौलाना अफसर अंसारी व मिलत नगर मस्जिद में मुफ्ती हामिद अली ने ईद की नमाज पढ़ाई। मौके पर एसडीएम ओबरा रमेश कुमार, सीओ शंकर प्रसाद, थाना प्रभारी ओबरा अभय प्रताप सिंह मौजूद थे। ईदगाह परिसर छावनी में तब्दील था। इस मौके पर नगर पंचायत अध्यक्ष

इस बार लोगों ने सामूहिक रूप से नमाज पढ़ी और दुआएं मांगी। लोगों ने पूरी शिद्दत से एक दूसरे से गले मिलकर ईद की बधाई दी। इस दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहे। राब?ट्र्सगंज में ईदगाह पर एडीएम राकेश सिंह, एएसपी विनोद कुमार, एसडीएम राजेश कुमार, सीओ राजकुमार त्रिपाठी के अगुवाई में पुलिस व पीएसी जवान तैनात रहे। यहां सुबह 8 बजे मौलाना तौफीक अहमद ने नमाज पढ़ाई। उरमौरा स्थित मस्जिद में मौलाना मजहरूल हक ने साढ़े 8 नमाज पढ़ाई। ओबराः भलुआ टोला स्थित ईदगाह में मंगलवार को मुस्लिमों ने ईद उल फितर के मौके पर ईद की नमाज अदा की गई। मंगलवार सुबह 8:35 बजे जामा मस्जिद के पेश इमाम मौलाना कारी असलम ने नमाज प्राणमती, ईओ अमित कुमार सिंह, तहसीलदार सुनील कुमार, अहमद खान नूर, मोहम्मद हाजी शमीम खां, हाजी मोहम्मद अफजल खां समेत अन्य मौजूद रहे। रेणुकूटः ईद के मौके पर रेणुकूट व पिपरी की ईदगाह में नमाज अदा कराई गई। लोगों ने अमन-चैन की दुआ की। विढमगंज : सलैयाडीह गांव में जामा मस्जिद, बैरखड़ जामा मस्जिद में मंगलवार को ईद की नमाज पढ़ाई गई। अंजुमन इस्लामिया कमेटी के सदर सुहेल अहमद खां, मुजीब खान, अबरार, शकील, मुस्तकीम, मननन, रियाज, हसनैन, सादिक, अंसार गनी, नसीम अहमद, इस्लाम मोहम्मद, जावेद अहमद आदि रहे। इसी तरह अन्य क्षेत्रों में भी ईद की नमाज पढ़ाई गई।

वन विभाग पेड़ों के उठान की नहीं दे रहा परमिट

सोनभद्र। रिजनल कनेक्टिविटी के तहत म्योरपुर में बन रहे एयरपोर्ट को 2022 के दिसंबर तक शुरू करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है लेकिन उसमें कई तरह ही अड़चने उत्पनन्न हो रही हैं। इससे कामकाज प्रभावित है। रनवे के चौड़ीकरण का कार्य होना है। इसको लेकर मशीने आ चुकी हैं। रनवे के अगल-बगल मिट्टी फीलिग की जा रही है। बहुत जल्द ही रनवे की पेंटिग का काम शुरू हो जाएगा। प्रशासन लगातार इस कार्य की निगरानी कर रहा है ताकि शासन के इस बहुप्रतीक्षित प्रोजेक्ट को जल्द से जल्द चालू किया जा सके। बताया जा रहा है कि यहां बाउंड्रीवाल को ऊंचा करने का काम चल रहा है, जो शीघ्र पूरा हो जाएगा। जल निगम एयरपोर्ट में पानी की व्यवस्था करने में जुटा हुआ है। इसके लिए तीन बोरिग कर तीन टंकी का निर्माण का कार्य किया जा रहा है। समस्या थोड़ा काश्तकारों को लेकर हो रही है। जिन पेड़ों को काटा जा चुका है, उनके उठान को लेकर अड़चन फंसी हुई है। वन विभाग ने इन पेड़ों के उठान के लिए अब तक परमिट नहीं दिया है जिससे पेड़ जहां के तहां पड़े हुए हैं और काम प्रभावित है। वन विभाग ने आवश्यक भूमि का ट्रांसफर कर दिया गया है। कुछ विवादित भूमि का मामला हाईकोर्ट में लंबित पड़ा है। हाईकोर्ट में इसको लेकर हुए स्टे को खारिज कराकर उसे फिर सरकारी भूमि घोषित कराने का प्रयास चल रहा है। प्रशासन को उम्मीद है कि जल्द फैसला आते ही वहां पर भी कार्य शुरू हो जाएगा। संबंध में दुद्धी एसडीएम शैलेंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि म्योरपुर हवाई अड्डे का कार्य जोरों पर चल रहा है। शासन की मंशा के अनुसार दिसंबर तक निर्माण पूर्ण कराकर उड़ान शुरू करने का लक्ष्य है। उम्मीद है कि यह लक्ष्य पूर्ण कर उड़ान शुरू करा दी जाएगी। पेड़ बिना अनुमति लिए काट दिए गए। ऐसे में उठान की परमिट देने में तकनीकी दिक्कत आ रही है। अब काम आगे बढ़ाने के लिए देखा जा रहा है कि ऐसी कौन सी प्रक्रिया अपनाई जाए कि पेड़ों का उठान हो।

बिहार व झारखंड की सीमा तक के लोग झेल रहे बिजली कटौती का दंश

वैनी (सोनभद्र)। नगवां ब्लाक के गांवों में उपभोक्ताओं को दिन में दो घंटे और रात में दो घंटे बिजली मिलती है। वह भी किश्तों में सुबह से शाम तक में कभी 10 मिनट के लिए तो कभी 30 मिनट के लिए बिजली की आपूर्ति होती है। कमोवेश यही हाल रात का भी है। इससे उपभोक्ताओं का कोई भी काम नहीं हो पाता है। पौनी गांव की रीचा व फूलतारा कहती हैं कि बिजली न होने से दिन और रात हाथ का पंखा झलकर काम चलाना पड़ता है। बिजली से होने वाले घरेलू कार्य भी प्रभावित हैं। बिजली न होने से सबमर्सिबल नहीं चल पा रहा है। इससे पानी भी मिलना मुश्किल हो जा रहा है। पानी के लिए घर वालों को हैंडपंपों पर कतार लगानी पड़ रही है। दिन तो किसी तरह गुजर रही है, रात गुजारनी मुश्किल हो जाती है। मच्छर के काटने से बेचैनी सी होने लगती है। महिलाओं का कहना है कि भीषण गर्मी में बिजली की कटौती काफी कष्टायक साबित हो रही है।जिले के अति पिछड़े नगवां ब्लाक क्षेत्र में बिहार व झारखंड की सीमा तक वाले गांवों में बेतहाशा विद्युत कटौती का दंश उपभोक्ता झेल रहे हैं। कभी नक्सल प्रभावित रहे इन क्षेत्रों के लोगों को 24 घंटे में महज 4 घंटे ही बिजली मिल रही है। सीबीएसई बोर्ड की परीक्षाएं चल रही हैं। ऐसे में छात्र-छात्राओं को परीक्षा की तैयारी में परेशानी झेलनी पड़ रही है। दुकानदार भी बिजली कटौती से प्रभावित हैं। सब्जी की खेती करने वाले किसान फसलों की सिचाई नहीं कर पा रहे हैं। खासकर बिजली पर आधारित छोटे उद्योग धंधों से जुड़े लोग दिन में दुकानों पर बैठकर बिजली का इंतजार कर रहे हैं और शाम को निराश होकर घर लौट जा रहे हैं। बिजली की हो रही बेतहाशा कटौती ने विद्युत पर आधारित छोटे उद्योगों को प्रभावित कर दिया है। लोगों का रोजगार प्रभावित हो रहा है। लोगों का काम ठप होने से आर्थिक स्थिति गड़बड़ हो रही है। कम्हरिया गांव निवासी सुभाष वैनी बाजार में वेल्डिग की दुकान चलाते हैं। उनका कहना है कि क्षेत्र में भयंकर बिजली कटौती हो रही है। इससे दुकान लगभग बंद जैसे हालात में पहुंच गई है। बिजली के अभाव में दिन पर बैठे रहते है।

रिहंद का जल स्तर गिरने से विद्युत उत्पादन प्रभावित होने का खतरा

रेणुकूट (सोनभद्र)। भीषण गर्मी का असर रिहद बांध जल परियोजना पर दिखने लगा है। लगातार जल स्तर में हो रहे गिरावट से उत्पादन प्रभावित होने का खतरा मंडरा रहा है। 2021 की तुलना में इस वर्ष चार फीट की गिरावट दर्ज की गई है। तेजी से गिर रहे जल स्तर की वजह से जल परियोजना आधारित संयंत्र से विद्युत उत्पादन प्रभावित हो सकता है, जबकि मानसून आने में करीब दो महीने की देरी है। ऐसे में बिजली कटौती से जूझ रहे प्रदेशवासियों की मुसीबत बढ़ सकती है। विभागीय अधिकारियों का मानना है जलस्तर में हो रहे गिरावट से आने वाले दिनों में उत्पादन प्रभावित हो सकता है। बीते वर्ष दो मई को जलस्तर 846 फिट दर्ज किया गया था। पिछले वर्ष की तुलना में चार फीट गिरावट के साथ सोमवार को जलस्तर 842.90 फीट दर्ज किया गया। वर्तमान में रिहंद बांध की जल भरण क्षमता न्यूनतम 832 फीट निर्धारित किया गया है, जिसके सापेक्ष न्यूनतम से 10 फीट जलस्तर शेष बचा है। रिहंद जल विद्युत गृह पिपरी के अधिशासी अभियंता शशिकांत राय ने बताया एक नंबर टरबाइन के अनुरक्षण का कार्य पूरा किया जा चुका है। बांध में स्थापित सभी 6 पन आधारित टरबाइन चालू हालत में है। विद्युत बोर्ड लखनऊ के आदेशानुसार हम उत्पादन कर रहे हैं। लगातार जलस्तर में हो रहे गिरावट से उत्पादन प्रभावित हो सकता है। मांग और जल स्तर के सापेक्ष मार्च माह में 47.7 मिलियन यूनिट बिजली का उत्पादन किया गया, जबकि अप्रैल में घटकर 30 मिलियन यूनिट का ही उत्पादन हो सका। विभागीय अधिकारियों के अनुसार जल स्तर को ध्यान में रखते हुए उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है।

बिहार के लिए भी बरातियों की पिटाई के दौरान लापता बिहार के युवक का कुएं में मिला शव

सोनभद्र । पनन्गंज थाना क्षेत्र के पचोखर गांव में रविवार की रात शादी समारोह में आर्केस्ट्रा के दौरान घरातियों व बरातियों में विवाद के बाद से ही लापता सरोज शाह (33) पुत्र स्व. सिद्धनाथ शाह निवासी सिकरी थाना अधौरा बिहार का शव सोमवार की सुबह गांव में ही एक कुएं में मिला। उसके सिर के पिछले हिस्से में चोट के निशान मिले हैं। इस मामले में पुलिस ने पांच लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया। सूचना पर बिहार सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री जामा खां भी यहां पहुंचे और पुलिस से मामले की जानकारी ली। इस संघर्ष में पांच लोग घायल हो हुए। सिकरी गांव से रविवार की रात अमरनाथ बैठा की बरात पचोखर गांव में आई थी। रात करीब 11 बजे जब नर्तकियों का डांस शुरू हुआ तो कुछ लोग उन पर ईंट पत्थर का टुकड़ा फेंकने लगे। इसको लेकर दोनों पक्षों में विवाद हो गया और देखते ही देखते मारपीट हो गई। इसमें रामराज बैठा, प्रेम कुमार, छत्रधारी, महेंद्र राम सभी निवासी सिकरी व सोहदवल गांव निवासी पननलाल का 12 वर्षीय पुत्र घायल हो गया। घटना के दौरान सरोज शाह मंच पर पहुंचकर माइक से लोगों को मारपीट से मना करने लगा। तभी कुछ लोगों ने उसकी भी पिटाई कर दी। इससे वह वहां से भाग गया और अपने दोस्तों को फोन कर घर चलने के लिए सड़क पर बुलाया। जब दोस्त वहां पहुंचे तो सरोज वहां नहीं मिला। सूचना पर रात में ही पहुंची पुलिस ने भी तलाश शुरू कराई, लेकिन युवक का कहीं पता नहीं चला। सोमवार की सुबह पचोखर गांव की ही एक महिला अपने घर के पास स्थित कुएं से पानी लेने गई तो शव उतराया देख शोर मचाने लगी। इसके बाद शव को निकलवाया गया। पनन्गंज थाना प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार सिंह ने बताया कि इस मामले में जवाहिर शाह निवासी सिकरी की तहरीर पर पचोखर गांव निवासी चंदन तिवारी, सुरेश, बुड्डुक, सत्य प्रकाश व अकबर के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। अकबर को छोड़ सभी आरोपित गिरफ्तार कर लिए गए हैं। उन्होंने बताया कि युवक के शव का पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद पता चलेगा कि उसकी मौत कैसे हुई। इसके बाद ही अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

चेन्नई की कमजोर गेंदबाजी और आरसीबी की लचर बल्लेबाजी का मुकाबला

पुणे। चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) को अपनी कमजोर गेंदबाजी में और रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) को अपनी लचर बल्लेबाजी में सुधार करना होगा जब खराब फार्म से जूझ रही दो दिग्गज टीमें आइपीएल के महत्वपूर्ण मुकाबले में बुधवार को आमने-सामने होंगी। क्रिकेट में दो मजबूत और फार्म में चल रही टीमों का मुकाबला रोचक रहता है, लेकिन जब ऐसे दो दिग्गज सामने हैं जिनकी कमजोर कड़ियां जगजाहिर है तो मुकाबला और दिलचस्प रहेगा। अब तक 10 मैचों में आरसीबी के लिए छह ही अर्धशतक लग सके हैं जिनमें से दो कप्तान फाफ डुप्लेसिस ने लगाए हैं। इससे साबित होता है कि उसकी

बल्लेबाजी किस स्तर की रही है। वहीं, चेनन्ई ने अभी तक नौ मैच खेले हैं और उसके किसी भी गेंदबाज की किफायत दर 7.50 प्रति ओवर से कम नहीं रही है। महेश तीक्ष्णा ने 7.54 की औसत से गेंदबाजी की है जबकि ड्वेन ब्रावो और मुकेश चौधरी का औसत क्रमश : 8.73 और 9.82 रहा है। पिछले मैच में विराट कोहली के अर्धशतक के बाद यह मैच और रोमांचक होगा। वहीं, महेंद्र सिंह धौनी ने चेनन्ई की कमान फिर संभालने के बाद जीत दर्ज की है तो यह भी देखना होगा कि क्या वह जीत की लय कायम रख पाते हैं। खराब फार्म से जूझ रहे रवींद्र जडेजा के कप्तानी छोड़ने के बाद धौनी को फिर कमान सौंपी गई जिसके बाद सीएसके ने सनराइजर्स हैदराबाद को हराया। आरसीबी के नौ मैचों में 10 अंक है। हालांकि उसे लगातार तीन मैचों में पराजय झेलनी पड़ी। आरसीबी ने सत्र का न्यूनतम स्कोर 68 रन अपने नाम किया और एक अन्य मैच में 145 रन के आसान लक्ष्य का पीछा नहीं कर सके। गुजरात टाइटंस के खिलाफ मैच में कोहली ने 53 गेंद में 58 रन बनाए, लेकिन उनकी टीम 170 रन ही बना सकी जो बल्लेबाजों की मददगार पिच पर कम स्कोर था। कोहली ने 10 मैचों में 186 और डुप्लेसिस ने नौ मैचों में 278 रन बनाए हैं। दोनों हालांकि अपने चिर परिचित फार्म में नहीं हैं। कोहली ने 58 रन बनाने में करीब नौ ओवर लिए जिससे उनकी टीम बड़ा स्कोर बनाने से चूक गई। दिनेश कार्तिक (10 मैचों में 218 रन) और ग्लेन मैक्सवेल (सात मैचों में 157 रन) को और प्रयास करने होंगे। अब उनका सामना कमजोर गेंदबाजी आक्रमण से है। चेनन्ई के चौधरी या सिमरजीत सिंह के पास अनुभव नहीं है तो अनुभवी जडेजा बहुत खराब दौर से जूझ रहे हैं। रायल चैलेंजर्स बैंगलुरुः फाफ डुप्लेसिस (कप्तान), विराट कोहली, ग्लेन मैक्सवेल, मुहम्मद सिराज, हर्षल पटेल, वानिंदु हसरंगा, दिनेश कार्तिक, जोश हेजलवुड, शाहबाज अहमद, अनुज रावत, आकाश दीप, महिपाल लोमरोर, फिन एलन, शेरफेन रदरफोर्ड, जेसन बेहरेनडार्फ, सुयश प्रभुदेसाई, चामा मिलिंद, अनीश्वर गौतम, कर्ण शर्मा, डेविड विली, रजत पाटीदार, सिद्धार्थ कौल। चेनन्ई सुपरकिंग्सः महेंद्र सिंह धौनी (कप्तान), रवींद्र जडेजा, मोइन अली, रुतुराज गायकवाड़, ड्वेन ब्रावो, अंबाती रायडू, राबिन उथप्पा, मिशेल सेंटनर, क्रिस जार्डन, एडम मिलने, डेवोन कोनवे, शिवम दुबे, ड्वेन प्रिटोरियस, महेश तीक्ष्णा, राजवर्धन हैंगरगेकर, तुषार देशपांडे, केएम आसिफ, सी हरि निशांत, एन जगदीसन, सुब्रंशु सेनापति, के भगत वर्मा, प्रशांत सोलंकी, सिमरजीत सिंह, मुकेश चौधरी।

कैसा होगा कल मैच में गुजरात और पंजाब का प्लेइंग इलेवन इन खिलडियों पर रहेगी नजर

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन के आधे लीग मैच खत्म हो चुके हैं। प्लेआफ की तस्वीर धीरे धीरे साफ होती नजर आ रही है। 3 मई मंगलवार की शाम को खेले जाने वाले मुकाबले में गुजरात और पंजाब की टीमों का मुकाबला होने वाला है। इस मैच में अगर गुजरात की टीम ने जीत हासिल की तो वह प्लेआफ में पहुंचने

वाली पहली टीम बन जाएगी। अगर पंजाब की टीम को यहां हार मिली तो उसके लिए आगे का सफर मुश्किल हो जाएगा। इस मैच में हार्दिक पांड्या की कप्तानी वाली टीम गुजरात के प्लेइंग इलेवन में बदलाव की उम्मीद कम है। टीम का संतुलन शानदार है गेंदबाजी से लेकर बल्लेबाजी तक कमाल नजर आ रही है। पंजाब की टीम के लिए अब तक सीजन उतार चढ़ाव वाला रहा है। बड़े स्कोर का पीछा करने से शुरुआत करने वाली टीम के लिए अब मुकाबले करो या मरो के है। टाइटंस के ओपनिंग में रिद्धिमान साहा और शुभमन गिल की जोड़ी होगी। इसके बाद कप्तान हार्दिक पांड्या जो तीसरे नंबर पर बेहतर खेल दिखा रहे है उनसे फिर एक अच्छी पारी की उम्मीद होगी। साई सुरदर्शन, डेविड मिलर और राहुल तेवतिया नीचले क्रम में होंगे। गेंदबाजी टीम की अहम कड़ी है। लोकी फुर्ग्युसन, मोहम्मद शमी और अल्जारी जोसेफ तेज गेंदबाजी में हैं तो वहीं स्पिनर में चैंपियन राशिद खान होंगे। शुभमन गिल, रिद्धिमान साहा (विकेटकीपर), साईं सुदर्शन, हार्दिक पांड्या (कप्तान), डेविड मिलर, राहुल तेवतिया, राशिद खान, प्रदीप सांगवान, अल्जारी जोसेफ, लॉकी फर्ग्यूसन, मोहम्मद शमी पंजाब की बात करें तो टीम को अब हर हाल में आने वाले मुकाबलों में जीत चाहिए। कप्तान मयंक अग्रवाल को बड़ी पारी खेलनी होगी, उनसे साथी शिखर धवन लगातार रन बना रहे हैं। भानुका राजपक्षे और जानी बेयरस्टो दो विकेटकीपर के साथ टीम सिर्फ बल्लेबाजी को मजबूत करने के लिए उतरने को मजबूर है। लियाम लिविंग्स्टोन अच्छी लय में हैं उनके साथ जितेश को अहम भूमिका निभानी होगी। गेंदबाजी में टीम के पास चैंपियन कगिसो रबादा के साथ अर्शदीप और अनुभवी संदीप शर्मा है। स्पिनर में टीम के पास राहुल चाहर जैसा शानदार गेंदबाज हैं। मयंक अग्रवाल (कप्तान), शिखर धवन, भानुका राजपक्षे, जानी बेयरस्टो, लियाम लिविंगस्टोन, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), ऋषि धवन, कगिसो रबाडा, राहुल चाहर, संदीप शर्मा, अर्शदीप सिंह.।

तेज गेंदबाजों की अच्छी फसल तैयार कर रहा गंगा-यमुना का उर्वर मैदान

नई दिल्ली। पिछली सदी तक भारत को एक से एक बेहतरीन स्पिनर पैदा करने वाला देश माना जाता था, लेकिन कोई अच्छा तेज गेंदबाज कभी-कभार ही सामने आता था। 21वीं सदी के आगाज के साथ ही भारत में मारक तेज गेंदबाज सामने आने लगे थे, जिसमें जहीर खान, इरफान पठान, एस जैसा तेज गेंदबाज दिया, तो अमरोहा से मुहम्मद शमी सामने आए। बुलंदशहर से भुवनेश्वर कुमार मिले, तो अब मुरादाबाद से मोहसिन खान भारतीय क्रिकेट में दस्तक देने की तैयारी में जुटे हैं। इसमें कोई शक नहीं कि गंगा-यमुना का यह उर्वर मैदान तेज गेंदबाजों की भी बढ़िया फसल तैयार करता

श्रीसंत, मुनाफ पटेल और आरपी सिंह जैसे नाम शामिल थे। इनमें रायबरेली के आरपी सिंह उत्तर प्रदेश की नुमाइंदगी करने वाले अकेले तेज गेंदबाज थे। इस सदी के दूसरे दशक की शुरुआत के साथ देश के क्रिकेट को तेज गेंदबाज देने का काम अपनी गंगा-यमुनी तहजीब के लिए जाने जाने वाले उत्तर प्रदेश ने बखूबी करना शुरू किया। मेरठ ने देश को प्रवीण कुमार दिख रहा है। कई वर्षों तक उत्तर प्रदेश देश के क्रिकेट के नक्शे से गायब था। उत्तर प्रदेश से देश को पहला क्रिकेटर गोपाल शर्मा के रूप में 1985 में मिला। कानपुर के रहने वाले आफ स्पिनर गोपाल सिर्फ पांच टेस्ट और 11 वनडे खेलकर गुमनामी के अंधेरे में खो गए। इसके करीब डेढ़ दशक बाद इलाहाबाद (अब प्रयागराज) से मुहम्मद कैफ के रूप में उत्तर प्रदेश का दूसरा क्रिकेटर सामने आया। कैफ ने अपनी शानदार फील्डिंग और उपयोगी बल्लेबाजी से वनडे टीम में अपनी खास जगह बनाई। कैफ के आने के बाद एक तरह से भारतीय क्रिकेट में उत्तर प्रदेश के खिलाड़ियों के लिए दरवाजे खुल गए। इस बीच उत्तर प्रदेश में जन्मे कुछ खिलाडियों ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया। इनमें चेतन चौहान, अरुण लाल, मनोज प्रभाकर, रमन लांबा, नरेंद्र हिरवानी और विजय यादव जैसे क्रिकेटर शामिल थे, लेकिन इनमें से कोई भी उत्तर प्रदेश के लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट खेलकर देश की क्रिकेट टीम में नहीं पहुंचा। गोपाल शर्मा और मुहम्मद कैफ उत्तर प्रदेश की ओर से रणजी ट्राफी खेलकर भारतीय टीम में पहुंचे थे।इस सदी का पहला दशक जब अपने अंतिम दौर में था तो देश में दुनिया की सबसे बड़ी क्रिकेट लीग के रूप में आइपीएल का जन्म हो रहा था। कैफ के अंतरराष्ट्रीय पदार्पण और आइपीएल की शुरुआत से पहले तक उत्तर प्रदेश ने देश को सुरेश रैना, आरपी सिंह, पीयूष चावला और प्रवीण कुमार जैसे क्रिकेटर भी दिए। इन चारों ने अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण 2006 से 2008 के बीच किया। 2008 में 18 अप्रैल से एक जून के बीच आइपीएल के पहले सत्र का आयोजन हुआ।

संजू सैमसन ने राहुल द्रविड़ को लेकर दी प्रतिक्रिया बताया उनके साथ बिताए 3-4 साल क्यों थे खास

नई दिल्ली। राजस्थान रायल्स के कप्तान संजू सैमसन जिस तरह से आइपीएल 15 के इस सीजन में अपने टीम का नेतृत्व कर रहे हैं उसे देखते हुए साफ हो गया है कि टीम प्लेआफ का रास्ता आसानी से पार कर लेगी। इस सीजन में वे न केवल अच्छी कप्ततानी कर रहे हैं बल्कि बल्ले से भी लगातार टीम के लिए योगदान दे रहे हैं। फिलहाल उनके खाते में 10 मैचों में 298 रन हैं जिसमें दो अर्धशतकीय पारी भी शामिल है।लेकिन संजू के इस अपने नोटबुक में लिख लिया करते थे। उन्होंने कहा कि मैंने उनके साथ जो तीन-चार साल बिताए, मुझे लगता है कि मैंने उनसे लगभग सब कुछ पूछ लिया। मेरी नोटबुक में अभी भी सब कुछ लिखा हुआ है। उससे बात करने के बाद, मैं अपने कमरे में वापस चला जाता और उन्होंने जो कहा, उसे जल्दी से लिख देताठ दिल्ली डेयरडेविल्स के साथ अपने कार्यकाल के बारे में बात करते हुए सैमसन ने खुलासा किया कि कैसे द्रविड़ ने टीम में युवाओं

प्रदर्शन के पीछे जिस शख्स का सबसे बड़ा हाथ है उनको लेकर खुद संजू ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। एक निजी शो में बातचीत करते हुए संजू सैमसन ने उन तीन-चार सालों का जिक्र किया है जब वे भारतीय लिजेंड राहुल द्रविड़ के नेतृत्व में खेल रहे थे और सीख रहे थे। राहुल द्रविड़ उस दौरान राजस्थान और दिल्ली कैपिटल्स (तब के दिल्ली डेयरडेविल्स) के मेंटार की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। उन्होंने बताया कि उस दौरान राहुल द्रविड़, उन्हें जो भी सलाह देते थे वे को प्रेरित किया। उस वक्त टीम में करुण नायर, श्रेयस अय्यर, मयंक अग्रवाल और ऋषभ पंत मौजूद थे। मुझे याद है कि उन्होंने हम में से 4-5 को फोन किया और हमें बताया मुझे लगता है कि आप सभी एक दिन भारतीय टीम के लिए खेलेंगे। यह उस टीम के हर युवा खिलाड़ी के लिए बहुत खास था आइपीएल के इस सीजन की बात करें तो राजस्थान फिलहाल प्वाइंट्स टेबल में 12 अंकों के साथ तीसरे नंबर पर है। टीम का अगला मुकाबला शनिवार को पंजाब किंग्स के साथ वानखेड़े के मैदान पर होगा।

धवन की शानदार अर्धशतकीय पारी के दम पर पंजाब ने गुजरात को 8 विकेट से हराया

नई दिल्ली। पंजाब और गुजरात के बीच डीवाई पाटिल स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में पंजाब ने शिखर धवन के 62 और लिविंगस्टन के विस्फोटक 30 रनों की पारी के दम पर गुजरात की टीम को 8 विकेट से हरा दिया है। पंजाब के सामने जीत के लिए 144 रनों का लक्ष्य था जो उसने 24 गेंद शेष रहते 2 विकेट खोकर बना लिया। 16वें ओवर में लिविंगस्टन ने मोहम्मद शमी के ओवर में 3 छक्कों और 2 चौकों सहित 28 रन बनाए। इस जीत के साथ ही पंजाब ने प्वाइंट्स टेबल में 10 अंकों के साथ 5वें नंबर पर जगह बना ली

है इससे पहले गुजरात के कप्तान हार्दिक पांड्या ने टास जीतकर इस मैच में बल्लेबाजी करने का फैसला किया। गुजरात ने पहले बल्लेबाजी करते हुए साई सुदर्शन की संघर्षभरी नाबाद अर्धशतकीय पारी की मदद से 20 ओवर में 8 विकेट पर 143 रन बनाए। 144 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी पंजाब की टीम के लिए पारी की शुरुआत शिखर धवन और जानी बेयरस्टो ने की लेकिन तीसरे ओवर की दूसरी गेंद पर मोहम्मद शमी ने बेयरस्टो को सांगवान के हाथों कैच करा दिया। उन्होंने 1 रन बनाए। उसके बाद राजपक्षे और धवन ने दूसरे विकेच के लिए शानदार 87 रन जोड़े। पंजाब को दूसरा झटका राजपक्षे के रूप में लगा। उन्हें 40 रन के निजी स्कोर पर लाकी फर्ग्यूसन ने एलबीडब्लू आउट किया। पंजाब के खिलाफ गुजरात की शुरुआत निराश करने वाली रही और ओपनर बल्लेबाज शुभमन गिल का खराब फार्म जारी रही। वो 9 रन बनाकर रन आउट हो गए तो वहीं उनके जोड़ीदार साहा को रबादा ने 21 रन पर मयंक अग्रवाल के हाथों कैच आउट कर दिया। हार्दिक पांड्या को ऋषि धवन ने एक रन पर जितेश शर्मा के हाथों कैच आउट करवा दिया। डेविड मिलर ने 14 रन की पारी खेली और उन्हें लियाम लिविंगस्टोन ने रबादा के हाथों कैच करवा दिया। राहुल तेवतिया को रबादा ने 11 रन पर कैच आउट करवा दिया और उनका कैच संदीप शर्मा ने पकड़ा तो वहीं राशिद खान खाता भी नहीं खोल पाए और गोल्डन डक पर आउट हो गए। राशिद खान को रबादा ने जितेश शर्मा के हाथों कैच करवा दिया। साई सुदर्शन ने 42 गेंदों पर छक्के के साथ अपना अर्धशतक पूरा किया। वहीं प्रदीप सांगवान को अर्शदीप सिंह ने 2 रन के स्कोर पर बोल्ड कर दिया। लाकी फर्ग्यूसन को 5 रन के स्कोर पर रबादा ने कैच आउट करवा दिया। साई सुदर्शन ने इस मैच में 50 गेंदों का सामना करते हुए एक छक्का और 5 चौकों की मदद से नाबाद 64 रन की पारी खेली। वहीं पंजाब की तरफ से कगिसो रबादा ने 4 ओवर में 34 रन देकर सबसे ज्यादा 4 विकेट लिए। रिद्धिमान साहा (विकेटकीपर), शुभमन गिल, साई सुदर्शन, हार्दिक पांड्या (कप्तान), डेविड मिलर, राहुल तेवतिया, राशिद खान, अल्जारी जोसेफ, प्रदीप सांगवान, लाकी फर्ग्यूसन, मोहम्मद शमी। मयंक अग्रवाल (कप्तान), शिखर धवन, जानी बेयरस्टो, भानुका राजपक्षे, लियाम लिविंगस्टोन, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), ऋषि धवन, कगिसो रबाडा, राहुल चाहर, अर्शदीप सिंह, संदीप शर्मा।

टी20 क्रिकेट में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले प्लेयर बने राशिद खान, इस खिलाड़ी का रिकार्ड तोड़ा

नई दिल्ली। गुजरात टाइटंस के आलराउंडर राशिद खान ने आइपीएल 2022 के 48वें लीग मैच में पंजाब किंग्स के खिलाफ गोल्डन डक पर यानी अपनी पारी की पहली गेंद पर बिना खाता खोले आउट हो गए। इस मैच में शून्य पर आउट

होने के साथ ही टी20 क्रिकेट में वो सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने का रिकार्ड अपने नाम कर लिया। गुजरात टाइटंस के आलराउंडर राशिद खान ने पंजाब किंग्स के खिलाफ शून्य पर अपना विकेट गंवाया और टी20 क्रिकेट में शून्य पर आउट होने के मामले में पहले नंबर पर पहुंच गए। टी20 क्रिकेट में ये 33वां मौका था जब राशिद खान ने अपना विकेट जीरो पर गंवा दिया और उन्होंने सुनील नरेन का रिकार्ड तोड़ा जो क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप में अब तक कुल 32 बार शून्य पर अपना विकेट गंवा चुके हैं। वहीं टी20 क्रिकेट में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने के मामले में तीसरे नंबर पर क्रिस गेल मौजूद हैं। टी20 क्रिकेट में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले टाप 3 बल्लेबाज 33 - राशिद खान 32 - सुनील नरेन 30 - क्रिस गेलआइपीएल में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले ओवरसीज बल्लेबाज ग्लेन मैक्सवेल हैं जो 12 बार जीरो पर आउट हो चुके हैं। अब राशिद खान ने उनकी बराबरी कर ली और आइपीएल में 12वां मौका था जब वो जीरो पर आउट हुए। आइपीएल में बतौर ओवरसीज प्लेयर सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने के मामले में राशिद खान ने मैक्सवेल की बराबरी कर ली है। वहीं इस मामले में दूसरे नंबर पर सुनील नरेन हैं जिनके साथ 11 बार ऐसा हुआ है। आइपीएल में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले ओवरसीज प्लेयर 12 - राशिद खान 12 - ग्लेन मैक्सवेल 11 - सुनील नरेन।

मुंबई इंडियंस के इस बल्लेबाज से 12 साल की उम्र में मिले थे सुरेश रैना, असर ऐसा हुआ कि मचा रहा है धमाल

मुंबई। सुरेश रैना को निश्चित तौर पर याद नहीं होगा कि वह 2014 में उप्पल के एचसीए स्टेडियम में हैदराबाद के क्रिकेट कोच सलाम बायश या 12 साल के किसी बच्चे से मिले थे। चेनन्ई सुपरकिंग्स (सीएसके) को अगले दिन सनराइजर्स हैदराबाद का सामना करना था और रैना ने इस दौरान 12 साल के नंबूरी ठाकुर तिलक वर्मा से पांच मिनट बात की और उसके साथ फोटो खिंचवाई। इस मुलाकात का तिलक वर्मा पर गहरा असर पड़ा। अब आठ साल बाद 20 साल के बायें हाथ के बल्लेबाज तिलक वर्मा की बल्लेबाजी से निश्चित तौर पर रैना के चेहरे पर खुशी होगी। तिलक ने रविचंद्रन अश्विन पर रिवर्स स्वीप से छक्का भी जड़ा। बायश ने उस दिन को याद करते हुए कहा, 'मेरा एक मित्र स्थानीय मैनेजर था। मैंने अभ्यास देखने की स्वीकृति के लिए उसकी मदद की और तिलक को अपने साथ ले

गया।मुंबई इंडियंस की टीम में शामिल अपने शिष्य के बारे में इस कोच ने कहा, 'मुझे याद है कि तिलक सुरैना रैना को बल्लेबाजी करते हुए देखकर काफी प्रभावित था। उसने एक बार भी उस पर से आंख नहीं हटाई और रैना के प्रत्येक शाट को देखा। इसके बाद हमने उनके साथ तस्वीर खिंचवाई और मुझे लगता है कि रैना के साथ वह विशेष मुलाकात तिलक के यह फैसला करने के लिए पर्याप्त थी कि वह क्रिकेटर बनेगा।मुंबई इंडियंस को राजस्थान रायल्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा, लेकिन तिलक ने 61 रन की पारी खेलकर सभी का ध्यान खींचा। मुख्य कोच महेला जयवर्धने ने भी उनकी सराहना की। तिलक के पिता बिजली का काम करते हैं। तिलक का मानना है कि 1.7 करोड़ रुपये का अनुबंध मिलने से उन्हें अपने माता-पिता को बेहतर जीवन देने में मदद मिलेगी। तिलक का कहना है कि उनके माता-पिता ने उनके सपने के साकार होने के लिए काफी बलिदान दिए हैं।

राशिफल

मेष-ःआपको रुका हुआ धन मिलेगा और आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा. घर में कुछ बदलाव आपको काफी भावुक कर सकते हैं, लेकिन जो आपके लिए खास हैं, उनके सामने आप अपनी भावनाओं का इजहार कर पाएंगे।

वृष-ःआज आपका मन पूजा-पाठ में अधिक लगेगा. आज आप अपने माता-पिता के साथ मंदिर जाने की योजना बना सकते हैं। कई दिनों से चली आ रही परेशानियां आज खत्म हो सकती हैं।

मिथुन-ःपरिवार के लिए आज का दिन शुभ है। आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। बहुत उत्साहित रहेंगे। साहसिक कार्य करने से बचें। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। नौकरी में अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

कर्क-ःआपके घर से जुड़ा निवेश फायदेमंद रहेगा। अपने करीबी लोगों के सामने ऐसी बातें उठाने से बचें, जो उन्हें दुखी कर सकती हैं। प्रेम की दृष्टि से आज का दिन बेहद खास रहेगा।

सिंह-ःआज का दिन लाभकारी रहेगा. आज आपके दोस्त आपके रुके हुए काम में आपकी मदद करेंगे। आज आपके शत्रु आपसे दूरी बनाए रखेंगे। आज आपको अपने किसी करीबी से खुशखबरी मिल सकती है।

कन्या-ःआज आप अकेलापन महसूस कर सकते हैं, इससे बचने के लिए कहीं बाहर जाएं और दोस्तों के साथ कुछ समय बिताएं. जल्दबाजी में निर्णय न लें। व्यापार और व्यापार के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

तुला-ःआपके घर से जुड़ा निवेश फायदेमंद रहेगा. यदि बातचीत और चर्चा आपके अनुसार नहीं है तो आप गुस्से में कड़वी बातें कह सकते हैं, जिसके बारे में आपको बाद में पछताना पड़ सकता है।

वृश्चिक-ःआज आपका दिन राहत भरा रहने वाला है. आज आपके पारिवारिक जीवन में उत्साह का माहौल रहेगा। इस राशि के शायरों के लिए आज का दिन बेहद अहम रहने वाला है। आज आपको अपनी प्रतिभा का पुरस्कार भी मिल सकता।

धनु-ःआज का दिन नया काम शुरू करने के लिए शुभ समय है. परिवार के सदस्यों के साथ मतभेद दूर कर आप अपने उद्देश्यों को आसानी से पूरा कर सकते हैं। प्रिय व्यक्ति से मेल-मिलाप होगा।

मकर-ःआज का दिन विशेष है, क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य आपको कुछ असाधारण कार्य करने की क्षमता देगा. यदि आप आय में वृद्धि के स्रोतों की तलाश कर रहे हैं, तो सुरक्षित आर्थिक परियोजनाओं में निवेश करें।

कुंभ-ःआज भाग्य साथ देगा. ऑफिस में आज का काम इस राशि के बिजनेसमैन को ज्यादा फायदा देने वाला है। यदि आप कोई नया व्यवसाय शुरू करने की सोच रहे हैं तो आज का दिन शुभ है। धन के साथ सुख आएगा।

मीन-ःआज निर्णय न ले पाने के कारण नए कार्यों की शुरुआत करना आपके लिए शुभ नहीं है. आज आप रिश्ते में औपचारिकता बनाए रखेंगे, अन्यथा मनमुटाव होने की संभावना है। मनोबल से सभी कार्य पूर्ण होंगे।

सम्पादकीय

जघन्य अपराधों के प्रति अनावश्यक नरमीः न्यायपालिका का पहला काम समाज सुधार या निरपेक्ष रूप से न्याय करना

एक अच्छी शासकीय व्यवस्था में न्यायालय की सर्व स्वीकार्यता नितांत आवश्यक है। कानून का राज और शासकीय गरिमा के लिए न्यायालय के आदेशों का सम्मान सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, परंतु जब न्याय व्यवस्था में दोहरे मापदंड दिखने लगें या न्यायिक फैसले राष्ट्रीय चेतना को झकझोर दें तो उन पर टिप्पणी नागरिक समाज का दायित्व बन जाती है। अभी हाल में सर्वोच्च न्यायालय ने चार वर्षीय बच्ची के दुष्कर्मी और हत्यारे की मृत्युदंड की सजा को घटाकर आजीवन कारावास में बदल दिया। नौ वर्ष पूर्व मध्य प्रदेश के सिवनी जिले में हुए इस बर्बर अपराध की विवेचना में पाया गया कि अभियुक्त ने बच्ची से दुष्कर्म करते समय उसका गला दबाकर रखा, जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई। चार साल की बच्ची के साथ ऐसे जघन्य अपराध की कल्पना मात्र रोंगटे खड़े कर देती है। सर्वोच्च न्यायालय की तीन सदस्यीय पीठ ने माना कि उक्त मामले में अभियोजन पक्ष द्वारा दी गई दलीलें और साक्ष्य पुख्ता हैं और अभियुक्त फिरोज के दोषी होने में कोई गुंजाइश नहीं है, लेकिन निचली अदालत और उच्च न्यायालय के मृत्यदंड के फैसले को उसने रेस्टोरेटिव जस्टिस यानी पुनर्स्थापनात्मक न्याय के सिद्धांत का हवाला देकर पलट दिया। इस फैसले में आस्कर वाइल्ड को उद्धृत करते हुए कहा कि 'संत और पापी के बीच एकमात्र अंतर यह है कि प्रत्येक संत का एक अतीत होता है और प्रत्येक पापी का एक भविष्य होता है। पीठ की इस टिप्पणी को ठीक से समझा जाए तो न्यायालय की नजर में चाहे अपराधी हो या विधिबद्ध नागरिक, अपने मूल चरित्र में हर व्यक्ति नैतिक रूप से एकसमान है। नैतिक सापेक्षवाद बनाम नैतिक निरपेक्षवाद की यह बहस दार्शनिक और साहित्यिक चर्चा के लिए भले ही रोचक हो, परंतु न्यायिक सिद्धांत के रूप में नैतिकता पर न्यायतंत्र का तटस्थ भाव और वह भी सर्वोच्च न्यायालय के स्तर पर गंभीर चिंता का विषय है। इस भाव में जहां सदाचार और विधि सम्मत आचरण के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं है, वहीं अपराध के प्रति भय बनाने में ऐसी धारणा प्रभावहीन सिद्ध होती है। न्याय के जिस पुनर्स्थापनात्मक सिद्धांत का जिक्र इस केस में किया गया, वह भी कम दुविधाजनक नहीं है। हर अपराध के लिए दंड और समानुपात सजा का प्रविधान दर्शाता है कि प्रतिशोध न्याय का मुख्य आयाम है। दूसरी तरफ अपराधी को सुधार का मौका देने के हिमायती पुनर्स्थापनात्मक सिद्धांत में भी अपराधी और पीड़ित या उसके परिजनों के बीच वार्ता एक अहम बिंदु होता है, परंतु उपरोक्त मामलों में सजा कम करते समय बच्ची के परिजनों की हामी नहीं थी। हालांकि, किसी समझौते के बाद भी यदि सजा कम करने का निणर्य लिया जाए, तब भी यह सिद्धांत आधुनिक न्याय की कल्पना के साथ खिलवाड़ है, क्योंकि पुनर्स्थापनात्मक न्याय के नतीजों में भारी भेद हो सकता है और यह कमजोर पीड़ित पक्ष को आसानी से दबाव में ला सकता है। इस न्यायिक सिद्धांत की मार सबसे अधिक पीड़ित महिलाओं या बालिकाओं पर ही पड़ती है, जैसा कि इस मामले में भी देखने को मिला। सही मायने में ऐसी न्यायिक कल्पना सतर्कता न्याय यानी विजिलांटिज्म का ही परिष्कृत रूप है। मृत्युदंड का विरोध न्यायपालिका के एक वर्ग का शगल बन गया है, फिर चाहे अपराध कितना भी घिनौना क्यों न हो और न्याय का पुनर्स्थापनात्मक सिद्धांत इस बाबत प्रयोग में लाया जाने वाला सुविधाजनक हेतु बन गया है। ऐसा मानने का कारण यह है कि पिछले कुछ समय में अनेक मामलों में सर्वोच्च न्यायालय ने निचली अदालतों द्वारा जारी और उच्च न्यायालय द्वारा बरकरार रखी गई फांसी की सजाओं को रोक दिया है। जहां मंदसौर में सात साल की बच्ची के दुष्कर्मी और हत्यारे की फांसी को रोका गया, वहीं देहरादून में 11 वर्षीय बच्ची के दुष्कर्मी और हत्यारे जयप्रकाश की फांसी की सजा पर रोक लगा दी गई है। दिल्ली के कुतुब विहार इलाके में निभर्या कांड से भी अधिक लोमहर्षक अनामिका कांड में तीन दोषियों की सजा पर निणर्य अभी सुरक्षित है। छन्नूलाल वर्मा केस के बाद ऐसे सभी फैसलों में फांसी से पहले दोषियों के मनोरोग मूल्यांकन को भी आवश्यक बना दिया गया है। न्याय की यह नई कल्पना कई चिंताजनक प्रशन खड़े करती है। क्या ऐसे अपराधियों के प्रति अत्याधिक संवेदनशीलता जघन्यतम अपराधों की गंभीरता की अवहेलना नहीं है।

तमाम चुनौतियों और उम्मीदों के बीच आशा की कुछ किरणें जगमगा रही

वैश्विक महामारी कोविड के बाद रूस-यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के समक्ष जो चुनौतियां बढ़ाई हैं, उनसे भारत भी अछूता नहीं है। महामारी के बाद आर्थिक मोर्चे पर हो रहे सुधार की रफ्तार पर इस युद्ध ने एक तरह से ब्रेक लगाने का काम किया है। आर्थिक वृद्धि को प्रभावित करने से अधिक इसने महंगाई की आग को भड़काने का काम किया है। केवल खाने-पीने की वस्तुओं से लेकर ईंधन के दाम ही नहीं, बल्कि कोर इनफ्लेशन यानी समग्र मुद्रास्फीति में तेजी का रुझान दिख रहा है। कच्चे माल की लागत बढ? से तमाम कंपनियों को उत्पादों की कीमतों में बढ़ोतरी के लिए मजबूर होना पड़ा है, जिसका बोझ अंततः उपभोक्ताओं पर ही पड़ेगा। युद्ध के कारण कोयले और गैस की आपूर्ति प्रभावित होने का असर देश के तमाम इलाकों में बिजली संकट के रूप में देखने को मिल रहा है। तपती गर्मी के दौर में बिजली की किल्लत से लोग परेशान हैं। इस युद्ध ने आर्थिक मोर्चे पर समस्याएं बढ़ाने से लेकर आम जनजीवन पर भी प्रतिकूल असर डाला है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था जिन चुनौतियों से दो-चार है, उनमें महंगाई सर्वप्रमुख है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि महंगाई गरीब आदमी पर सबसे ज्यादा असर डालती है। चूंकि गरीबों की आमदनी का एक बड़ा हिस्सा रोजमर्रा की जरूरतों खासकर खानपान पर खर्च होता है तो खाद्य महंगाई बढ? से उनकी बचत में सेंध लगती है। बुनियादी जरूरतों की पूर्ति के बाद उनके पास डिस्पोजबल इनकम यानी अन्य मदों में खर्च करने के लिए उतनी राशि शेष नहीं रह जाती है। महंगाई की इस विकराल होती समस्या का ही असर है कि केंद्रीय बैंक और सरकार दोनों स्तरों पर प्रयास शुरू हो गए हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने जून में ब्याज दरें बढ़ाने के संकेत दिए हैं। इस संकेत को समझते हुए कुछ बैंकों ने ब्याज दरें बढ़ाना भी शुरू कर दिया है। वहीं केंद्र सरकार ने मुफ्त राशन योजना की अवधि को और आगे बढ़ा दिया है, ताकि लोगों को राहत मिल सके। इन कदमों से राजकोषीय गणित का बिगड?ा तय है, क्योंकि सरकारी खजाने पर खाद्य सब्सिडी का बोझ और बढ़ेगा। इसी स्थिति में सरकार को उर्वरक सब्सिडी में भी दोगुनी बढ़ोतरी करनी पड़ी है। इस समय महंगाई केवल भारत की समस्या नहीं है। पूरी दुनिया इससे जूझ रही है। यहां तक कि पश्चिम के जो देश मुद्रास्फीति के लिए अधिकतम दो प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित करते थे, वहां भी वह इस दायरे से बाहर निकलती दिख रही है। इन स्थितियों के कारण ही अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा नरम ब्याज दरों की नीति को तिलांजलि देने से अमेरिका में ब्याज दरों में बढ़ोतरी के दौर की वापसी होती दिख रही है। इसका असर भारत समेत दुनिया भर की उभरती हुई अर्थव्यवस्था पर देखने को मिल सकता है। अमेरिका में ब्याज दरें बढ? से विदेशी संस्थागत निवेशक

इन बाजारों से पूंजी समेटकर वापस अमेरिका में लगाएंगे, जो उनके लिए अपेक्षाकृत सुरक्षित दांव होगा। इससे भारत समेत अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बाजारों से पूंजी का पलायन देखने को मिल सकता है। इससे निवेशकों की धारणा भी प्रभावित हो सकती है। 2013 में भी ऐसे हालात बने थे, लेकिन तब की तुलना में अब अपने विदेशी मुद्रा भंडार में बढ़ोतरी के कारण हम ऐसी किसी स्थिति से निपटने के लिहाज से बेहतर स्थिति में हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महंगाई और सुस्त आर्थिक वृद्धि का असर वैश्विक मांग पर भी पड़ सकता है। इससे भारत से होने वाले निर्यात पर भी कुछ मार पड़ सकती है। पिछले कुछ महीनों से निर्यात के मोर्चे पर तेजी का जो दौर जारी है, उसके शिथिल पड? की आशंका है। वहीं चीन में कोविड के फिर से सिर उठाने से इकोनामिक रिकवरी बाधित होने की आशंका है। इसका कारण चीन की 'जीरो कोविड पालिसी' है। चूंकि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला अभी भी चीन केंद्रित है इसलिए वहां आर्थिक गतिविधियों के सुस्त पड? से वैश्विक उत्पादन श्रृंखला पर असर पड?ा तय है। इस प्रकार देखा जाए तो पूरा विश्व और भारत इस समय बहुस्तरीय आर्थिक चुनौतियों से जूझ रहे हैं। ऐसे मुश्किल माहौल में भी कुछ सकारात्मक संकेत दिखते हैं। पहला यह कि सरकार के कर राजस्व में ठीक-ठाक बढ़ोतरी हो रही है। अप्रैल में रिकार्ड 1.68 लाख करोड़ रुपये का जीएसटी संग्रह हुआ। हालांकि इसका कुछ संबंध बढ़ती हुई महंगाई से भी है, क्योंकि वस्तुओं एवं सेवाओं के दाम बढ? से उन पर कर भी उसी अनुपात में बढ़ेगा। दूसरा सकारात्मक पहलू यह है कि कोविड महामारी के बाद बाजार में बहुत तेजी से सुधार हो रहा है। खासतौर से जिन सेवाओं पर कोविड की सबसे अधिक गाज गिरी थी, उनकी स्थितियों में सुधार देखने को मिल रहा है। होटल, विमानन, रेस्तरां और सिनेमा जैसी तमाम सेवाओं में कोरोना काल के दौरान जो भारी गिरावट आई थी, वे अब तेजी के रथ पर सवार हैं। इन मोर्चे पर आई गिरावट ने शहरों में गरीबी बढ़ाने का काम किया था, क्योंकि ये सेवाएं मुख्य रूप से शहर केंद्रित हैं। तब हालात इतने विकट हो गए थे कि शहरों से गांवों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हुआ था, लेकिन अब स्थिति खासी सुधर गई है। गूगल रिटेल मोबिलिटी डाटा के अनुसार कोरोना की पहली लहर में तकरीबन 86 प्रतिशत लोग घर से बाहर नहीं निकल रहे थे। वहीं दूसरी प्रलयंकारी लहर के दौरान यह आंकड़ा बढ? के बजाय घटकर 66 प्रतिशत ही रहा और इस साल जनवरी में आई तीसरी लहर के समय केवल 15 प्रतिशत। यह स्पष्ट संकेत करता है कि लोगों की आवाजाही बढ़ रही है और उन्होंने कोविड के साथ समायोजन सीख लिया है। इससे भी अच्छी बात यह है कि कोरोना की किसी नई लहर से बड़े नुकसान की आशंका नहीं रह गई है। इसकी एक बड़ी वजह सफल एवं व्यापक स्तर पर किया गया टीकाकरण कार्यक्रम है, जिसने कोविड के मामले में देश को आवश्यक प्रतिरोध प्रदान किया है। अभी तक मानसून के सभी अनुमान भी उम्मीद बंधाने वाले हैं। मानसून के सामान्य रहने की स्थिति न केवल ग्रामीण मांग को सहारा देगी, बल्कि बेहतर खाद्यान्न उत्पादन से खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित करेगी। हालांकि जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ रही प्रतिकूल मौसमी परिघटनाओं से फसल को नुकसान पहुंचने की आशंका को देखते हुए नीति-नियंताओं को समय रहते आवश्यक समाधान भी तलाशने होंगे।

देश के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक ढांचे पर अपना वर्चस्व रखने वाले एक वैचारिक वर्ग को पाठ्यक्रम में तार्किक परिवर्तन भी अखरते हैं

किसी भी उदार, जीवंत एवं गतिशील समाज में वांछित एवं युगीन परिवर्तन की प्रक्रिया सतत चलती रहती है। इसमें शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, किंतु दुर्भाग्य से कई दशकों तक देश की सत्ता को नियंत्रित करने वाली शक्तियों ने शिक्षा को वांछित परिवर्तन का वाहक बनाने के बजाय दल एवं विचारधारा विशेष के प्रचार-प्रसार का उपकरण बनाकर रख दिया। शैक्षिक संस्थाओं के शीर्ष पदों पर निष्पक्ष, योग्य एवं अनुभवी विद्वानों-विशेषज्ञों के स्थान पर दल एवं विचारधारा-विशेष के प्रति झुकाव रखने वालों को वरीयता मिलती गई। परिणामस्वरूप संपूर्ण शिक्षा, कला एवं साहित्य जगत ही वैचारिक खेमेबाजी एवं पूर्वाग्रहों का अड्डा बनता चला गया। इस तबके ने शिक्षा सामग्री में किसी भी तार्किक परिवर्तन का सदैव विरोध किया है। ताजा हंगामा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) द्वारा नौवीं से बारहवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में आंशिक परिवर्तन पर मचाया जा रहा है। दरअसल बोर्ड ने कक्षा 11वीं और 12वीं के इतिहास एवं राजनीतिशास्त्र के पाठ्यक्रम से गुटनिरपेक्ष आंदोलन, शीतयुद्ध-काल, अफ्रीकी-एशियाई देशों में इस्लामिक साम्राज्य की स्थापना, उदय एवं विस्तार, मुगल दरबार का इतिहास और औद्योगिक क्रांति से जुड़े अध्यायों को हटाने का निणर्य लिया है। इसी प्रकार कक्षा 10 के पाठ्यक्रम से 'कृषि पर वैश्वीकरण के प्रभाव' नामक सामग्री भी हटा ली गई है। अभी तक यह 'खाद्य सुरक्षा' पाठ के अंतर्गत पढ़ाई जा रही थी। इसके साथ ही 'धर्म, सांप्रदायिकता और राजनीति सांप्रदायिकता, पंथनिरपेक्ष राज्य' से फैज अहमद फैज की उर्दू में लिखी दो नज्में भी हटाई गई हैं। 'लोकतंत्र और विविधता' नामक अध्याय भी पाठ्यक्रम से हटा लिया गया है। गणित एवं विज्ञान के पाठ्यक्रम में से भी कुछ अध्याय हटाए गए तो कुछ जोड़े गए हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की संस्तुतियों पर पाठ्यक्रम को अधिक युक्तिसंगत, समाजोपयोगी एवं वर्तमान अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए ये परिवर्तन किए गए हैं। पाठ्यक्रम को रोचक, रचनात्मक, ज्ञानवर्धक, बोधगम्य एवं प्रासंगिक बनाए रखने के उद्देश्य से ऐसे परिवर्तन पूर्व में भी किए जाते रहे हैं। वैसे भी इतिहास और सामाजिक विज्ञान से जुड़ी किताबें कोई आसमानी किताब या समाज-जीवन से नितांत निरपेक्ष एवं पृथक पाठ्यपुस्तक तो हैं नहीं कि उनमें कोई परिवर्तन न किया जा सके। आदर्श स्थिति तो यही होगी कि विज्ञान एवं तकनीकी की सहायता से अब तक अदृष्टिपूर्व एवं अलक्षित ऐतिहासिक-पुरातात्विक स्रोतों, साक्ष्यों-तथ्यों आदि पर गहन शोध एवं विशद अध्ययन कर नई-नई जानकारियों को सामने लाया जाए और उन्हें पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाएं। उल्लेखनीय है कि 11वीं के इतिहास के पाठ्यक्रम में घुमंतू या खानाबदोश साम्राज्य (नोमेडिक एंपायर) 12वीं में 'यात्रियों की नजरों से' तथा 'किसान, जमींदार और राज्य' शीर्षक को जोड़ा गया है। वहीं राजनीतिशास्त्र में 'समकालीन विश्व में सुरक्षा' नामक अध्याय के अंतर्गत 'सुरक्षाः अर्थ और प्रकार, आतंकवाद', 'पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन' अध्याय के अंतर्गत 'पर्यावरण आंदोलन, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन है।

कृषि कानूनों से लेकर समान नागरिक संहिता तक के मामले में फर्जी नैरेटिव गढने वाले हो रहे हावी

कश्मीरी हिंदुओं के दमन, उत्पीड? और जबरन निष्कासन पर बनी फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' को रिलीज हुए करीब दो माह होने वाले हैं, लेकिन उसके खिलाफ यह दुष्प्रचार अब तक जारी है कि वह मनगढ़ंत, एकपक्षीय और नफरत फैलाने वाली फिल्म है। इस तरह

का ताजा आरोप खुद को ज्ञानकोश बताने वाली वेबसाइट विकिपीडिया ने लगाया है। इसके पहले इसी तरह के आरोप कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, नेशनल कांफ्रेंस, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी आदि के बड़े नेता लगा चुके हैं। इन नेताओं के अलावा कई कथित बुद्धिजीवियों और फिल्म समीक्षकों ने भी यही काम किया है। ऐसा करने वालों में मीडिया का एक हिस्सा भी है। यह काम इतने शातिराना और योजनाबद्ध तरीके से किया गया कि फिल्म की अप्रत्याशित सफलता के बाद भी यह प्रशन पीछे छूट गया कि कश्मीरी हिंदुओं की वापसी कब और कैसे होगी? सारी बहस इस पर केंद्रित कर दी गई कि कश्मीरी हिंदुओं के उत्पीड? और निष्कासन के लिए कौन-कौन दल जवाबदेह हैं? यदि ऐसे दलों में भाजपा को भी गिना जाए तो क्या इसके आधार पर कश्मीरी हिंदुओं के दमन और घाटी में उनकी वापसी के प्रशन को नेपथ्य में धकेल दिया जाएगा? वास्तव में ठीक ऐसा ही किया गया और इसी कारण कश्मीरी हिंदू खुद को ठगा सा महसूस कर रहे हैं। हर हाल में अपने एजेंडे को आगे रखना और मूल प्रशन की अनदेखी करना अथवा उसे नया रूप दे देना या फिर पीड़ित को ही दोषी बताना कोई नया काम नहीं। अब यह काम एक उद्योग का रूप ले चुका है। इस उद्योग में विदेशी शक्तियां भी शामिल रहने लगी हैं, जो योजनाबद्ध तरीके से सक्रिय हो उठती हैं और कुछ सेलेब्रिटी भी अपने साथ जोड़ लेती हैं। यह तथाकथित किसान आंदोलन के समय अच्छे से देखने को मिला था। इस आंदोलन का आम किसानों से कोई लेना-देना नहीं था। यह सरकार को नीचा दिखाने के लिए किसानों की आड़ लेकर और उन्हें गुमराह करके शुरू किया गया आंदोलन था। इसे बल इसलिए मिला, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने अपने अधिकारों का अतिक्रमण करते हुए कृषि कानूनों के अमल पर रोक लगा दी थी। हालांकि यह पहले दिन से स्पष्ट था कि कृषि कानून विरोधी आंदोलन में किसानों के बीच खालिस्तानी तत्व भी सक्रिय हैं, लेकिन कथित किसान नेताओं से लेकर राष्ट्रवादी बताए जाने वाले अमरिंदर सिंह समेत अन्य नेताओं और यहां तक कि सरकार से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक ने इसकी अनदेखी करने में ही भलाई समझी। इस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि बीते दिनों पटियाला हिंसा के मास्टरमाइंड के रूप में जिस खालिस्तानी को गिरफ्तार किया गया, वह कथित किसान आंदोलन के दौरान अपने जत्थे के साथ टीकरी बार्डर पर मौजूद था। आम लोगों को बंधक बनाने वाले कृषि कानून विरोधी आंदोलन के दौरान जब स्वतंत्रता दिवस पर देश को शर्मसार करने वाली हिंसा की गई तो अपना एजेंडा आगे रखने वालों ने बड़ी चतुराई से ऐसे सवालों के साथ यह शरारतपूर्ण नैरेटिव गढ़ा कि इस उत्पात के पीछे खुद सरकार का हाथ है कि दिल्ली पुलिस ने गोली क्यों नहीं चलाई? ऐसे सवालों से यही साबित करने की कोशिश की गई कि लालकिले में हिंसा के बहाने सरकार बेचारे अनन्दाताओं की आवाज दबाना चाहती है। इस फर्जी नैरेटिव को गढ? में रिहाना, ग्रेटा थनबर्ग और मिया खलीफा का भी सहारा लिया गया। फिर वह माहौल बना कि अराजकता के आगे सरकार और सुप्रीम कोर्ट, दोनों असहाय दिखे। ये दोनों इसी तरह तब भी दिखे थे, जब शाहीन बाग का धरना जारी था। चूंकि इस धरने पर सुप्रीम कोर्ट के ढुलमुल रवैये से यही संदेश गया कि आंदोलन के नाम पर सड़क पर कब्जा करना जायज है, इसलिए किसान नेताओं ने ठसक के साथ दिल्ली की सड़कों को बाधित किया और उसे जायज भी ठहराया। उनका साथ मीडिया के एक हिस्से ने भी दिया। यही सब हिजाब विवाद के समय भी देखने को मिला। हिजाब मामला महज स्कूलों में पोशाक के नियम का पालन करने का था, लेकिन उसे उलटकर इस रूप में पेश कर दिया गया कि मुस्लिम लड़कियों को साजिश के तहत शिक्षा से वंचित किया जा रहा है। इस फेक नैरेटिव में असदुद्दीन औवेसी से लेकर मीडिया के एक हिस्से के सुर बिल्कुल एक जैसे रहे-और वह भी तब, जब कनार्टक हाई कोर्ट ने स्कूलों में हिजाब पर पाबंदी को सही ठहराया। यह फैसला सुनाने वाले तीन जजों में एक मुस्लिम महिला जज भी थीं। जैसे ही यह खबर आई कि जजों को मारने की धमकी दी गई है, वैसे ही नए नैरिटव की तलाश की जाने लगी और वह तब पूरी हो गई कि जब रामनवमी पर देश के कई शहरों और फिर हनुमान जन्मोत्सव पर दिल्ली के जहांगीरपुरी में सांप्रदायिक हिंसा हुई। यह बिल्कुल साफ है कि किसी एक समुदाय के धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाने या उनकी आवाज नियंत्रित करने को नहीं कहा जा रहा, लेकिन कुछ एजेंडाधारी लोग ठीक यही बता रहे हैं। इन एजेंडाधारियों का नया हथियार समान नागरिक संहिता भी बन गई है। साधारण समझ रखने वाला व्यक्ति भी यह जानता होगा कि यदि समान नागरिक संहिता बनती है तो उसके दायरे में सभी समुदाय के लोग आएंगे, लेकिन फर्जी नैरेटिव गढ? और अपना शरारती एजेंडा चलाने वाले यही साबित करने में लगे हैं कि इसके निशाने पर केवल मुस्लिम समुदाय होगा।

बिंदलू - लेखिका नीना अंदौत्रा पठानिया

बिदंलू : स्त्रियों की यथार्थ के धरातल पर चुनौतीपूर्ण भूमिका

समाज में स्त्री की स्थिति जितनी विकासशील होनी चाहिए उतनी नहीं हो पाई है, जिसका एक मुख्य कारण पितृसत्तात्मक व्यवस्था जिसमें वह स्वयं निणर्य लेने की अधिकारी नहीं है।स्त्री की एक तरफ अपने अस्तित्व के लिए लड़ रही है वहीं दूसरी तरफ उसे समाज की रूढियों और दकियानूसी मानसिकता का भी सामना करना है। 'बिदंलू' कहानी संग्रह जीवन और समाज के उन हिस्सों पर प्रकाश डालता है जिन्हें हम बुनियादी तौर पर महत्वपूर्ण नहीं समझते हैं, ऐसा नहीं है कि साहित्य में पहले इन विषयों पर लिखा नहीं गया है बल्कि बहुत लिखा गया, चिन्तन भी हुआ है। विचारणीय प्रशन यह उठता है कि आज ये यथार्थ किस रुप में उभरा है और नयी भूमि किस प्रकार की है आधुनिक युग में जब हम तकनीकी विकास को अपना विकास समझते हैं तब उसमें स्त्री कहाँ पीछे छूट रही है या अकेले संघर्षरत क्यों हैं ? इन प्रशनें की जांच पड़ताल करती 'बिदंलू 'संग्रह की समस्त कहानियाँ हैं। सुविधानुसार नीना अंदौत्रा पठानिया ने इसे सोलह भागों में विभाजित किया है।मनोवैज्ञानिक स्तर पर रची गई कहानियाँ स्त्री की पीड़ा का संसार रचती है।रोजमर्रा की दिनचर्या की छोटी-छोटी घटनाएँ जीवन पर बहुत गहरा असर डालती हैं। 'वर्जनिटी ' कहानी में स्त्री के स्वाभिमान को चुनौती देते हुए लेखिका ने स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समाज के तय किए गए अलग अलग मापदंड पर रखी परत को उघाड़ दिया है। आज स्त्री आत्मनिर्भर होकर भी समाज के आईने में शून्य कैसे होती है और इसके पीछे आज का नवयुवक आधुनिक और शिक्षित होकर भी दकियानूसी सोच का शिकार है।

जब स्त्री को इस स्थिति से गुजरना पड़ता है वह दुख में सरक जाती है पर आज की सशक्त है वह पुरुष से सवाल करती है वह स्वयं कितना ईमानदार है। 'अहसास की खुशबू ', ' स्पर्श ','अधूरे ',जैसी कहानी स्त्री पीड़ा से गुजरते हुए अपने लिए मार्ग बनाती आज की स्त्री की गाथाएँ हैं। प्रेम और विवाह दोनों स्तरों में छले जाने की पीड़ा इन कहानियों में दृष्टिगत होती है। वहीं ' बिदंलू ' कहानी आज के संदर्भ में नयी पीढ़ी के समक्ष प्रेम का वास्तविक अर्थ बताती है जिसमें कहानी नायिका बूढ़ी हो गई अपने प्रेमी देवी दत्त का इंतजार करते हुए उसका दिया मांग टिका जीवन भर संभाल कर रखती है।(जिसे बिदंलू नाम दिया है)जो कहानी का शीर्षक है। भाषा में सांकेतिक अर्थ संपूर्ण कहानी के मर्म को खोल देती है। प्रेम का अर्थ लिए वगैर प्रेम का बोध कराती शब्दावली लेखिका की उपलब्धि है। अन्य कहानियाँ भी वर्तमान विसंगतियों पर दृष्टि डालती है जिसमें 'पहली किताब ' प्रकाशन के क्षेत्र में हो रही तकलीफ को लेखिका ने व्यंग्यात्मक शैली में कहानी में सुनियोजित ढंग से लिखा है। जंगली फूल, वक्त के गर्भ से, एफ-10 ,मुलाकात , मन की पीड़ा आदि कहानियाँ पठनीय है। इन कहानियों में एक विशेष बात यह है कि जहां भी स्त्री पात्र आए हैं वे सशक्त हैं, चाहे श्यामली ,प्रांजलि ,सुगंधि ,वेदिका का पात्र हो लेखिका इनका चरित्र गढ़ने में सफल हुई हैं।जबकि पुरुष पात्र पुष्पेंद्र, साकेत देवी दत्त आदि पात्र का चरित्र निर्माण नहीं हो पाया है वे शिक्षित और प्रेमी की भूमिका में गौण रहते हैं कहीं भी ठोस निर्णायक भूमिका नहीं निभाते और पलायनवादी पुरुष की तरह समस्या आने पर स्त्री को अकेला छोड़ देते हैं। कहानी में लेखिका ने संवाद बेहद आत्मिक और संवेदनशील रचे हैं।सोशल साइट्स के युग में रेशमी पर्दों पर दौड़ते मैसेज द्वारा स्त्री के छले के संवादों का लेखिका ने रोचक और सुगठित चित्रण किया है। यह संवाद भयावह सच्चाई से रुबरु कराते हैं और यथार्थ का उदघाटन करने में सफल हुए हैं।'अहसास की खुशबू 'कहानी में पुष्पेंद्र और प्रांजलि इन दो किरदारों द्वारा लेखिका ने स्त्री के संवेदनशील हृदय को विस्तार दिया है।बारंबार पुष्पेंद्र के धोखे और अनदेखी में भी प्रेम खोजती स्त्री का निरूपण हुआ है। वर्तमान की सच्चाई से मुखातिब कराती कहानी अनेक स्त्रियों के लिए प्रेरक भी बनेगी। रोती हुई स्त्री को और अधिक रुलाने में जिसका विश्वास है, जो कि माँ भी है उसे पुरुष से पाया प्रेम ,दुगुना करके पुनः पुरुष को लौटाना भी है। वह सुन्दर समाज की रचना कर सके , किन्तु ऐसा नहीं हो पाया।स्त्री का प्रेम अनदेखा करके उसने स्त्री को पत्थर बनाने की साजिश की। अविश्वास से भर दिया। इसमें स्वयं पुरुष ने अपना नुकसान कर लिया है।प्रेम और रूह की बातें समझने में नयी पीढ़ी को बहुत समय लगेगा और अब उसके पास समय भी नहीं है। कुल मिलाकर स्त्री समाज के आईने में ठगहाई का शिकार हुई है हो रही है। पुरुष की संवेदनशील एक बहुत बड़ा प्रशन चिन्ह है इन कहानियों के पीछे लेखिका का उद्देश्य समाज में दबी छुपी स्त्री पीड़ा को उदघाटित करना है। स्त्री व्यवस्था में ही संघर्ष नहीं कर रही अपितु मानसिक रुप से भी संघर्षरत है।रिश्ते नातों के भयानक भ्रम जाल में फंसी स्त्री का कोई नहीं है हर मोड़ पर अकेली छूटती स्त्री की पक्षधर बनकर लेखिका ने समाज का यथार्थ पाठक के सम्मुख रखा है।अतः हम कह कह सकते हैं कि यह कहानी पाठक वर्ग को सोचने के लिए अवश्य बाध्य करेंगी। नीना अंदौत्रा को हार्दिक शुभकामनाएँ। **डॉ .आशा सिंह सिकरवार अहमदाबाद।**

संक्षिप्त समाचार

लालू प्रसाद यादव आज दिल्ली एम्स से हो रहे डिस्चार्ज

पटना। राष्ट्रीय जनता दल सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को लेकर दिल्ली से बड़ी खबर है। उन्हें आज दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (घ्घ्इए, अत्प) से डिस्चार्ज किया जा सकता है। ऐसा होता है तो वे वहां से सीधे बेटी मीसा भारती के सरकारी आवास पर आएंगे। मीसा भारती ने आज लालू यादव के डिस्चार्ज होने की संभावना जताई है।विदित हो कि चारा घोटाला के डोरंडा कोषागार मामले में जेल की सजा काट रहे लालू प्रसाद यादव को झारखंड हाईकोर्ट से मिली जमानत के आधार पर रांची की सीबीआइ कोर्ट ने रिहा कर दिया। जेल की सजा के दौरान बीमार लालू यादव दिल्ली एम्स में भर्ती थे। रिहाई के बाद भी वहां उनका इलाज जारी है। बेटी व राज्यसभा सांसद मीसा भारती ने बताया है कि लालू यादव बुधवार की शाम तक संभवतः एम्स से डिस्चार्ज हो जाएंगे। मीसा भारती के अनुसार अस्पताल से लालू सीधे उनके घर जाएंगे। मीसा ने डॉक्टरों की सलाह पर उनके आगे का कार्यक्रम तय किया जाएगा।लालू प्रसाद यादव चारा घोटाला के पांच मामलों में सजायाफ्ता हैं। उन्हें चार मामलों में पहले ही जमानत मिल चुकी थी। लेकिन चारा घोटाला के डोरंडा कोषागार मामले में सजा होने के बाद उन्हें फिर जेल जाना पड़ा। इसके बाद तबीयत बिगड़ने के कारण उन्हें दिल्ली एम्स में भर्ती कराया गया। इस बीच कोर्ट ने उन्हें जमानत दे दी। अब डॉक्टरों की राय के आधार पर उन्हें डिस्चार्ज तो किश जा रहा है, लेकिन फिलहाल वे डॉक्टरों की निगरानी में ही रहेंगे। इसके लिए वे दिल्ली स्थित बेटी मीसा भारती के सरकारी आवास पर रहेंगे। लालू इसके पहले भी डॉक्टरों की निगरानी में वहीं रह चुके हैं।लालू के डिस्चार्ज होने के बाद उनका बिहार में इंतजार किया जा रहा है।

आरोपी को गिरफ्तार करने गई पुलिस टीम से अभद्रता

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। जारचा कोतवाली क्षेत्र के छौलस गांव में वारंटी को पकड़ने गई पुलिस टीम से अभद्रता का मामला प्रकाश में आया है। लोगों ने आरोपी की गिरफ्तारी का विरोध कर दरोगा और सिपाहियों से अभ्रदता की। बताया जा रहा है कि पुलिस से हाथापाई भी हुई। हालांकि, पुलिस के आलाधिकारी टीम पर हमले की बात से इनकार कर रहे हैं। छौलस गांव का रहने वाला चांद वारंटी है। बताया जा रहा है कि वर्ष 2013 में चांद समेत 13 लोगों ने वाल्मीकि समाज के पुजारी से मंदिर में मारपीट कर दी थी जिसके बाद एससी-एसटी एक्ट के तहत गांव के तेरह लोगों पर मुकदमा दर्ज हुआ था। चांद पिछले लंबे समय से कोर्ट में तारीख पर नहीं जा रहा था इसलिए उसके गैर जमानती वारंट थे। रविवार दोपहर को चौकी इंचार्ज और चार सिपाही चांद को गिरफ्तार करने के लिए गए थे। टीम जब आरोपी उसके घर पहुंची तो लोग गिरफ्तारी का विरोध करने लगे। लोगों ने पुलिस टीम के साथ अभद्रता शुरू कर दी न्यायालय ने चांद के खिलाफ वारंट जारी किए थे। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस दबिश के लिए गई थी। आरोपी वहां नहीं मिला। टीम के साथ मारपीट की बात निराधार है।

कार-ट्रैक्टर में टक्कर माँ-बेटे की मौत

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। ईस्टर्न पेरीफेरल हाइवे के निकट हुए सड़क हादसे में माँ-बेटे की जहाँ मौत हो गई वहीं दो लोगों का उपचार चल रहा है। मिली जानकारी के मुताबिक घटना दनकौर थाना क्षेत्र में हुई है। रिंकू अपने माँ सोना देवी , बहन व एक अन्य रिश्तेदार के साथ मेरठ से लौट रहा था। मेरठ में माँ का दवा लेकर ये लोग कार से फरीदाबाद जा रहे थे। रस्ते में ट्रैक्टर ने इनकी कार में जोर से टक्कर मार दी जिससे कार के परखच्चे उड़ गए। घायलों को कैलाश अस्पताल ग्रेटर नोएडा लाया गया। इस दौरान रिंकू और उसकी माँ सोना देवी की मौत हो गई। अन्य दो का उपचार चल रहा है । थाना दनकौर क्षेत्रान्तर्गत मृतक रिंकू पुत्र दाताराम निवासी गांव डूडोली थाना पुगना जनपद नूह हरियाणा उम्र करीब 35 वर्ष अपनी माताजी को मेरठ से दवाई लेकर वापस फरीदाबाद की ओर अपनी गाड़ी नंबर एचआर 51 सीडी 7967 से जा रहे थे जब मृतक अपनी गाड़ी से पेरिफेरल हाईवे से अट्टा

गुजरान ग्राम के पास पहुंचे तो सामने से रॉन्ग साइड आ रहे एक ट्रैक्टर जॉन डियर जिस पर दो व्यक्ति सवार थे जिनके नाम शमशेर सिंह तथा मनजीत सिंह थे कार और ट्रैक्टर की टक्कर हो गई जिसमें कार में सवार चालक रिंकू तथा उनकी माताजी सोना देवी की मृत्यु हो गई एवं ट्रैक्टर चालक दोनों घायल हैं बेहोश हैं जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल में दाखिल करा दिया गया है । मृतकों के शवों का पंचायतनामा भरकर पोस्टमार्टम की कार्रवाई की जा रही है।

रेस्टोरेंट में खाना खाने आये दोस्तों पर चाकू से हमला, तीन घायल , एक नाजुक

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। में लास्ट लेमन बार मर्डर का मामला अभी ठंडा नहीं हुआ है इस बीच खराब जूस की शिकायत करने पर एक रेस्टोरेंट मालिक ने अपने कर्मचारियों के साथ मिलकर दो लोगों को चाकू से गोद दिया। मामला नोएडा के सेक्टर 15 के द फूड विला रेस्टोरेंट का है । दोनों युवक नोएडा के कैलाश अस्पताल में जिंदगी से जंग लड़ रहे हैं वहीं पुलिस ने इस मामले में मुकदमा दर्ज कर 3 हमलावरों को गिरफ्तार किया है। वही परिवार का आरोप है की पुलिस ने हल्की धाराओं में मामला दर्ज किया है जिसका फायदा आरोपियों को मिलेगा। नोएडा के सेक्टर 15 स्थित यह वही द फूड विला रेस्टोरेंट है जिससे 30 तारीख की रात दिल्ली के न्यू अशोक नगर के रहने वाले शैलेंद्र पाल अपने दोस्त रोहित निषाद और विशाल गौतम के साथ सेक्टर-15 के फूड जिला चाय सुट्टा रेस्तरां में आये थे। शैलेंद्र पाल ने कोल्ड काफी और

शेक आर्डर किया था। जब उन्होंने कोल्ड काफी पी तो उसको स्वाद अच्छा नहीं था। इसकी शिकायत उन्होंने रेस्तरां कर्मियों से की। शैलेंद्र पाल का आरोप है कि शिकायत के बाद गलती मानने के बजाय रेस्तरां मालिक ने उनसे विवाद शुरू कर दिया और हाथापाई करने लगे। इस दौरान रेस्तरां मालिक ने अपने करीब चार कर्मचारियों के साथ मिलकर उन पर जानलेवा हमला किया। एक कर्मी ने विशाल गौतम पर चाकू से हमला किया। रोहित निषाद और शैलेंद्र पाल ने जब उसे बचाने का प्रयास तो उन पर भी चाकू से हमला किया गया। विशाल और निषाद गंभीर रूप से घायल हो गए आनन-फानन में इन दोनों को नोएडा के कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां पर इनकी हालत अभी भी चिंताजनक बनी हुई है वही पीडि़त का आरोप है कि पुलिस ने हल्की-फुल्की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है जिसका फायदा आरोपियों को मिलेगा। एडिशनल डीसीपी का कहना है कि सूचना मिलते ही मौका ए वारदात पर पहुंची पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है 2 दिन बीत जाने के बाद 3 हमलावरों को गिरफ्तार कर लिया हैं।

विधायक व मुख्य विकास अधिकारी ने युवाओं को स्मार्ट फोन बाँटा

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। उत्तर प्रदेश के युवाओ का तकनीकी सशक्तिकरण करने के उद्देश्य से टेबलेट एवं स्मार्ट फोन वितरण योजना 2021-22 के अन्तर्गत एक जनपद एक उत्पाद प्रशिक्षण एवं टूलकिट योजनान्तर्गत प्रशिक्षण एवं टूलकिट प्राप्त लाभार्थियों को स्मार्ट फोन का वितरण कार्यक्रम कार्यालय उपायुक्त उद्योग, जिला उद्योग प्रोत्साहन एवं उद्यमिता विकास केन्द्र, सूरजपुर, ग्रेटर नौएडा मे सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि माननीय विधायक दादरी तेजपाल नागर तथा विशिष्ट अतिथि मुख्य विकास अधिकारी अनिल कुमार सिह के द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि मा0 विधायक दादरी तेजपाल नागर द्वारा लाभार्थियों को जीवन मे परिश्रम कर कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने जीवन में प्राप्त उपलब्धियों को बताते हुए लाभाथिर्यों को आगे बढ़ने के लिए उत्साहवर्धन किया। साथ ही कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि मुख्य विकास अधिकारी अनिल कुमार सिह द्वारा लाभार्थियों का उत्साहवर्धन किया गया। उनके द्वारा लाभार्थियों को 10 दिवसीय प्रशिक्षण का सदुपयोग करते हुए भावी उद्यमी एवं निर्यातक बनने के लिए शुभकामनाएँ दी गयी। मुख्य अतिथि द्वारा मा0 मुख्यमंत्रीजी के नेतृत्व मे बनी उत्तर प्रदेश सरकार की सराहना करते हुए प्रदेश सरकार द्वारा चलायी गयी योजनाओ की प्रंशसा की। अतं मे मा0 विधायक दादरी तेजपाल नागर तथा मुख्य विकास अधिकारी अनिल कुमार सिंह के द्वारा स्मार्ट फोन का वितरण किया गया। कार्यक्रम में उपायुक्त उद्योग अनिल कुमार द्वारा अवगत कराया गया कि उक्त उपस्थित लाभार्थियों को एक जनपद एक उत्पाद प्रशिक्षण एव टूलकिट योजनान्तर्गत 10 दिवसीय प्रशिक्षण ए0टी0डी0सी0 संस्था द्वारा दिया गया, प्रशिक्षण उपरान्त लाभार्थियों को टूलकिट भी प्रदान की गयी। उपायुक्त उद्योग के द्वारा लाभाथिर्यों व भावी महिला उद्यमी को संबोधित करते हुए विभाग की विभिनन्‍ योजनाओ जैसे राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर के मेले में प्रतिभाग करने पर माल भाडे एव यात्रा व्यय पर सरकार द्वारा छूट देकर, उनके उत्पादो को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने के संबंध में जानकारी दी गयी। साथ ही अवगत कराया गया कि लाभार्थियों के लिए। एमेजॉन की वर्कशाप का आयोजन कर उनके उत्पादो को ऑनलाईन प्लेटफार्म पर लाया जाएगा। उन्होंने जानकारी देते हुये बताया कि आज स्मार्ट फोन वितरण कार्यक्रम में 125 प्रशिक्षण एवं टूलकिट प्राप्त लाभार्थियों को स्मार्ट फोन का वितरण किया।उक्त जानकारी राकेश चौहान जिला सूचना अधिकारी ने दी ।

5 मई को तालकटोरा स्टेडियम मे हिन्दू राष्ट्र अधिवेशन

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। 5 मई को सांय 5 बजे तालकटोरा स्टेडियम में भव्य हिन्दू राष्ट्र अधिवेशन होगा। भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के संकल्प की पूर्ति हेतु वीरवार 05 मई को सांय 5 बजे तालकटोरा स्टेडियम में श्रीमज्जगदुरु पुरी पीठाधीश्वर शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी के पावन सानिन्ध्य में दिव्य तथा भव्य भारत के निर्माण को लेकर विशाल कार्यक्रम समायोजित किया जा रहा है। जिसमें देश, विदेश से बड़ी संख्या में प्रतिनिध एवं गणमान्य लोग सम्मिलित होने जा रहे हैं। जिसकी तैयारी को लेकर कल पूरी शंकराचार्य स्वागत समिति दिल्ली के द्वारा श्री धर्मवीर आचार्य की अध्यक्षता में दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में बैठक हुआ जिसका सञ्चालन श्री अश्विनी मलिक जी ने किया। जिसमे पूरी शंकराचार्य स्वागत समिति के सदस्य एवं अंतर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद के शैलेन्द्र मिश्र (अध्यक्ष) ने बताया की कार्यक्रम को ऐतिहासिक बनाने के लिए लगभग पांच से दस हजार लोगो के लिए ब्यबस्था की गई है । एनसीआर में लगभग पांच सौ बैनर एवं प्रवेश द्वार बनाया जायेगा जिसकी रूप रेखा तैयार कर लिया गया है एवं कार्यक्रम सुरु होने से पहले 108 महिला टीम के द्वारा भव्य कलश यात्रा होगा जिसकी तैयारी के लिए श्री मति निधि शर्मा को दी गई है एवं सुरक्षा की ब्यबस्था सुनिश्चित कर लिया गया एवं कार्यक्रम के लिए स्वागत समिति के सभी सदस्यों को जिम्मेदारी दी गई है। और एनसीआर में जगह - जगह बैठक हो रहे है एवं कल प्रेस कॉन्फ्रेंस का समय 3 बजे प्रेस क्लब दिल्ली में रखा गया है। आप सभी लोगो से निवेदन है कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आप लोगो की उपस्थिति अनिवार्य है ।

गुरुकुल में वैदिक रूप से मनाई गई अक्षय तृतीया

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। के सेक्टर ईटा 1 में संचालित महर्षि पाणिनि वेद- वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल में भगवान परशुराम जन्मोत्सव एवं अक्षय तृतीया का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के बटुकों के द्वारा भगवान परशुराम का पूजन की प्रथम तिथि होने से यह बहुत ही पुण्य दायिनी होती है। अक्षय तृतीया में किया गया दान- पुण्य हजारों गुना हो करके हमें प्राप्त होता है। नारद पुराण के अनुसार आज के दिन किया गया शुभ कार्य अक्षय हो जाता है और वह जन्म जन्मांतर में सुख समृद्धि प्रदान करता है। गुरुकुल में रह रहे बटुकों के उत्थान

एवं विधि-विधान से यज्ञ किया गया।यज्ञ के पश्चात कार्यक्रम में पधारे महानुभावों को संबोधित करते हुए गुरुकुल के संस्थापक आचार्य रविकांत दीक्षित जी ने अक्षय तृतीया के बारे में बताते हुए कहा ङ्घआज के ही दिन (वैशाख शुक्ल तृतीया) त्रेता युग में भगवान विष्णु के छठे अवतार महर्षि जमदग्नि की पतनी रेणुका के गर्भ से अवतरित हुए। उनका यह आवेशावतार था। भगवान परशुराम का क्रोध लोक मंगलकारी था। उन्होंने सहस्त्रार्जुन जैसे अनेकों राक्षसों का वध करके लोक में शांति स्थापित की। अक्षय तृतीया के महत्व को बताते हुए कहा कि आज ही के दिन त्रेता युग का प्रारंभ माना जाता है। इसीलिए युग के लिए गुरुकुल के महत्व बताते हुए कहा कि सहयोग की दृष्टि हमेशा से ही अपेक्षित रही है और मै सभी से आवाहन करता हूं कि वह आए और हमारी भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से हमारे साथ ही मिले यथासंभव हमारा सहयोग करें। पूजन अर्चन करने के बाद यज्ञ एवं विशाल भंडारे का आयोजन प्रशांत चौधरी जी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के संरक्षक श्री नवानी जी ने कहा कि आप सभी से अनुरोध है कि आप यथा सामर्थ गुरुकुल में अवश्य सहयोग करें, जिससे गुरुकुल की व्यवस्था सुचारू रूप से चल सके। इस अवसर पर श्री वेद प्रकाश शर्मा जी, अरविंद शर्मा जी का विशेष सहयोग रहा।

सामान्य व एस0सी0पी0 को दिलाया जाएगा कौशल सुधार एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। जिला ग्रामोद्योग अधिकारी गौतम बुद्धनगर नगर अंबुज कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि जनपद में उत्तर प्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा 25 सामान्य व 25 एस0सी0पी0 का कौशल सुधार प्रशिक्षण एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण दिलाए जाने का लक्ष्य प्राप्त हुआ है, जिसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में समूह के तहत सुधार एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण ग्राम में ही दिया जाएगा।उन्होंने समस्त ग्राम प्रधानों का आह्वान करते हुए बताया कि प्रशिक्षण के लिए न्यूनतम आयु 18 व अधिकतम 45 वर्ष होनी चाहिए एवं प्रशिणार्थी का साक्षर होना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि अपने ग्राम के इच्छुक प्रशिक्षाथिर्यों की चयन सूची निर्धारित प्रारूप पर दिनांक 10 मई 2022 तक जिला ग्रामोद्योग कार्यालय विकास भवन कक्ष संख्या 206-207 सूरजपुर गौतम बुद्ध नगर में जमा करा सकते हैं।

ग्रीष्मकालीन जुताई के लिए जिला कृषि रक्षा अधिकारी की एडवाइजरी

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। जिला कृषि रक्षा अधिकारी गौतम बुद्ध नगर ने समस्त कृषकों का आह्वान करते हुए जानकारी दी है रबी फसलों के कटाई के बाद खेत की गहरी जुताई आगामी खरीफ फसल के लिए अनेक प्रकार से लाभकारी है। ग्रीष्मकालीन जुताई मानसून आने से पूर्व मई-जून महीने में की जाती है। उन्होंने ग्रीष्मकालीन जुताई का मुख्य उददेश्य एवं उससे लाभ के बारे में बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई करने से मृदा की संरचना में सुधार होता है, जिससे मृदा की जलधारण क्षमता बढ़ती है जो फसलों के लिए अत्यन्त उपयोगी होती है। खेत की कठोर परत को तोड़ कर मृदा की जड़ों के विकास के लिए अनुकूल बनाने के लिए ग्रीष्मकालीन जुताई अत्यधिक लाभकारी है। खेत में उगे हुए खरपतवार एंव फसल अवशेष मिट्टी में दबकर सड़ जाते है तथा जैविक खाद में परिवर्तित हो जाते है,जिससे मृदा में जीवांश की मात्रा बढ़ती है। मृदा के अन्दर छिपे हुए हानिकारक कीड़े, मकोड़े उनके अण्डे, लार्वा, प्यूपा एव खरपतवारों के बीज गहरी जुताई के बाद सूर्य की तेज किरणों के सीधे सम्पर्क में आने से नष्ट हो जाते है, जिससे फसलों पर कीटनाशकों एवं खरपतवारनाशी रसायनों का कम उपयोग करना पड़ता है। गर्मी की गहरी जुताई के उपरान्त मृदा में पाये जाने वाले हानिकारक जावाणु, कवक, निमेटोड एव अन्य हानिकारक सूक्ष्म जीव मर जाते है जो फसलों में मृदा जनित रोग के प्रमुख कारक होते हैं। निमेटोड का नियंत्रण करने के लिए कीटनाशकों का प्रयोग खर्चीला होता है परन्तु ग्रीष्मकालीन जुताई से इनका नियंत्रण बिना किसी लागत के हो जाता है। मृदा में वायु संचार बढ़ जाता है जो लाभकारी सूक्ष्म जीवों के वृद्धि एवं विकास में सहायक होता है, जिससे फसलों के गुणवत्तापूर्ण उत्पादन में लाभ मिलता है। मृदा में वायु संचार बढ़ने से खरपतवारनाशी एवं कीटनाशी रसायनों के विषाक्त अवशेष एवं पूर्व फसल की जड़ों द्वारा छोड़े गये हानिकारक रसायनों के अपघटन में सहायक होती है।

अक्षय तृतीया के पर्व पर सेक्टर 82(पाकेट 7) मे शरबत बाटा गया

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर 82 पाकेट 7 के मेन गेट पर अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर पाकेट वासियों द्वारा सरबत बाटा गया। इस पावन पर पौराणिक मान्यता है कि जलदान का विशेष महत्व है। इसीलिए आज दोपहर से शाम तक मेन गेट पर सरबत वितरित किया गया इस मौके पर संजय शुक्ला,पंकज झा,एन के सोलंकी,संजय पाण्डेय,विजय झा,सर्वेश तिवारी,गोरे लाल,रमेश शर्मा,राजेश गुप्ता,विष्णु शर्मा,रमेश चंद्र दास,विनय कुमार,प्रदीप तोमर,शैलेन्द्र मिश्रा,पान सिंह,संदीप,रमेश वर्मा आदि गणमान्य लोग मौजूद रहे ।

कथाओ से हमारे जीवन मे नयी उर्जा का संचार होता है-पं उमाकान्त शास्त्री जी महाराज

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर 82 पाकेट 12 के हनुमान मंदिर पर चल रही श्री मद भागवत कथा के आज दूसरे दिन ध्रुव महाराज की कथा का वर्णन किया गया । कथा व्यास पं उमा कान्त शास्त्री जी महाराज के मुखारविंद से संगीत मयी कथा कहीं जा रही है कथाव्यास ने कहा कि कथाऐ सुनने से हमारे जीवन का विकास होता है और शरीर में एक नयी उर्जा का संचार होता है । कथाऐ हमारे जीवन का आधार है। कलयुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि नर उतरहि पारा।। आयोजन समिति के व्यवस्थापक एवं मंदिर के पुजारी पं मायानंद पाण्डेय ने कहा कि यह कथा पूरी सोसायटी के सहयोग से की जा रही है ।यह सार्वजनिक कार्यक्रम है। सभी का सहयोग भी मिल रहा है ।कथा पंडाल मे सैकडों महिलाओं की उपस्थिति रही।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस की सभी मीडिया बंधु जनों को बहुत बहुत बधाई शुभकामनाएं

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ गौतम बुध नगर कमेटी द्वारा जीएनआईओटी तकनीकी संस्थान नॉलेज पार्क ग्रेटर नोएडा सभागार में पत्रकारिता की अधिकारिता विषय पर सेमिनार का आयोजन किया।कार्यक्रम में वरिष्ठ मीडिया कर्मी, शिक्षाविद, सामाजिक कार्यकर्ता, किसान नेता डॉ रुपेश वर्मा, अजीत ढोला, मजदूर नेता सीटू जिलाध्यक्ष गंगेश्वर दत्त शर्मा अपनी टीम के साथ हिस्सा लिया।सेमिनार में वक्ताओं ने विश्व जगत में पत्रकारिता के महत्व को रेखांकित किया साथ ही पत्रकारो की परेशानियों को भी व्यक्त किया गया और पत्रकारिता के गिरते स्तर पर भी चिंता व्यक्त की गई ।कार्यक्रम में मुख्य अतिथियों का स्वागत पत्रकार महासंघ के जिला सचिव हरवीर सिंह ने किया ।

भाजपा का 3 दिवसीय जिला प्रशिक्षण वर्ग आज हुआ समापन

(आधुनिक समाचारसेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। भाजपा नोएडा महानगर का जि़ला प्रशिक्षण वर्ग का अंतिम दिन में 3 सत्र रहे। कार्यक्रम - सेक्टर 62, अवीयर एजुकेशन हब में हो रहा है, आज कार्यक्रम की शुरूरत पहले सत्र में गौतमबुद्ध नगर

राज्य सभा सांसद श्री सुरेंद्र नागर जी ने करी। उन्होंने अपने विषय केंद्र सरकार की विकास योजनाएँ पर बताया पिछले आठ साल के कार्यकाल में मोदी सरकार ने आम लोगों के लिए कई योजनाओं चली हैं और इन सभी योजनाओं के पीछे सराकर की कोशिश है कि देश को आत्मनिर्भर बनाया जाए, फिर चाहे स्किल इण्डिया मिशन हो या स्टैन्डप इण्डिया मिशन सराकर की हमेशा यही कोशिश रहती है कि देश की विशाल युवा शक्ति को नए भारत निर्माण में शामिल किया जाए। भारत के ऊर्जस्वी विदेश नीति और रक्षा नीति से देश को अग्रिम क़तार में खड़ा किया है और दुनिया का भारत को देखने के प्रति नजरिया में आमूलचूल बदलाव आया है। केंद्र सराकर की कई योजनाओं से पीम गति शक्ति मिशन, ग्रामीण उजाला योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, जल जीवन मिशन, राष्ट्रीय शिक्षा मिशन, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, पी एम किसानी योजना , आत्मनिर्भर भारत, रोज़गार योजना, प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना, आयुष्मान भारत, आदि कई योजनाओं ने आज देश को आत्मनिर्भर बनाने की तरफ़ अग्रसर किया है।उसमें बाद दूसरे सत्र में श्री अतुल गर्ग पूर्व राज्य मंत्री ने अपने विषय प्रदेश की भाजपा सरकार और उसकी नीतियाँ पर बताया भाजपा की उत्तर प्रदेश में एक बार फिर प्रहण्ड बहुमत के साथ सरकार बनी है। जिसने इस बात को निश्चित कर दिया है कि प्रदेश में लोगों को भाजपा की नीति और कार्य पद्दती पर पूर्ण विश्वास है और उसकी के चलते प्रदेश की भाजपा सरकार ने कई बड़े फ़ैसले लिए हैं जो अपने आप में प्रदेश की नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए अग्रसर है। इसमें उत्तर प्रदेश स्कॉलरसिप योजना, उत्तर प्रदेश शादी अनुदान योजना, फ़्री टैब्लेट/स्मार्टफ़ोन योजना, मुख्यमंत्री अप्रवासी श्रमिक विकास योजना, प्रदेश में बिछा सड़कों का जाल, किसानों के लिए हितकरी योगी सरकार, ळझ् आसान किस्त योजना, मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, योजना, यूपी मिशन शक्ति, यूपी भाग्य लक्ष्मी योजना, उत्तर प्रदेश में भरण पोषण योजना, आदि कई योजनाएं से उत्तर प्रदेश को आज नई ऊंचाइयों पर लेज़ाया जा रहा है। प्रदेश में रोज़गार के नए अवसर, योगी सरकार ने निकाले हैं। तीसरे और समापन सत्र में डॉक्टर महेश शर्मा सांसद गौतमबुद्ध नगर ने अपने विषय- भारत वैश्यविक परिद्श्र्य ङ में बताया कि हाल के वर्षों में दुनिया के साथ भारत का जुड़ाव मूलतः इसके आर्थिक विकास और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के असाधारण राजनीतिक नेतृत्व के कारण सम्भव हुआ है। वर्तमान भारतीय प्रशासन समझ गया है कि हमारे घरेलू उद्देश्यों को हासिल करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ जुड़ाव की आवश्यकता होगी, इसी प्रकार समकालीन समय से भारत की सैन्य कूटनीतिक और आर्थिक शक्तियों ने पारंपरिक विदेश नीतियों के दृष्टिकोण से आगे बढ़कर व्यापक वैश्विक प्रतिबद्धताओं की और अपना रुख़ किया है। वैश्विक घटना जैसे अमेरिका में बाइडन का राष्ट्रपति कार्यकाल, भारत चीन संबंध, अफ़ग़ान शांति प्रक्रिया, ईरान परमाणु संधि जलवायु और ऊर्जा सुरक्षा और मौजूदा कूट कूटनीति आदि ने आज देश का रुख़ बदला है। अविश्वास के इस वैश्विक दौर में भारत ने ज़रूरतमंद देशों के प्रति मित्रता का हाथ बढ़ाया है। मौजूदा कोविड -19, संकट से बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था में वैश्विक नेतृत्व की भयानक असमानता को जन्म दिया है और आज भारत ने इस वैश्विक नेतृत्व शून्यता को भरने के लिए क़दम उठाया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महानगर अध्यक्ष मनोज गुप्ता ने सभी कार्यकर्ताओं को इस वर्ग को पूरी निष्ठा के साथ करने के लिए और हर सत्र से कुछ महतवपूर्ण बातों को अपने जीवन में उतने के सभी से अनुरोध किया और साथ ही सभी कार्यकर्ताओं का धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में महामंत्री चांदीराम यादव, डिम्पल आनंद, उमेश त्यागी, गणेश जाटव, राम निवास यादव, शारदा चतुर्वेदी, नरेश शर्मा, लोकेश यादव, प्रशंसित मैत्रा, ऐसान खान, भूपेश चौधरी, हरीश वर्मा, वंदना शर्मा, रमेश शेखर, आदि लोग मौजूद रहे।

सालों बाद ईद पर प्रशंसकों को हुआ शाहरूख खान का दीदार

नई दिल्ली। अभिनेता शाहरूख खान को लेकर फैंस के बीच अलग ही दीवानगी देखने को मिलती है। जिसका ताजा उदाहरण मंगलवार को ईद के मौके पर देखने को मिला। साल से शाहरूख कोविड के कारण ऐसा नहीं कर पा रहे थे, लेकिन इस साल हालात थोड़े समान होने पर उन्होंने अपनी परंपरा फिर से जारी रखी। शाहरूख ने बालकनी भी शामिल हैं। फिल्म का निर्देशन सिद्धार्थ आनंद कर रहे हैं। यह फिल्म 25 जनवरी 2023 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी।इसके अलवा उनके पास साउथ के

शाहरूख की एक झलक पाने और उन्हें ईद विश करने के लिए प्रशंसकों की भारी भीड़ उनके बंगले मनन्त के बाहर आज सुबह से ही जमा हो गई। एक्टर ने भी फैंस का दिल नहीं तोड़ा और शाम को बाहर आकर फैंस के साथ कुछ समय बिताया। इसके साथ ही एक्टर ने उनके साथ सेल्फी भी ली शाहरूक खान का नियम है कि वह हर साल ईद पर अपने बंगले की बालकनी पर आकर फैंस को त्योहार की बधाई देते हैं और उनके चाहने वाले भी एक्टर की एक झलक के लिए घंटों इंतजार करते हैं। हालांकि, बीते पिछले दो से फैंस को हाथ हिलाकर अभिवादन किया और ईद विश की। इसके साथ ही उन्होंने हाथ फैलाकर अपना फेमस पोज भी किया। जिसे देखकर उनके सैकड़ो फैंस खुशी के मारे चिल्लाने लगें। शाहरूख ने फैंस के साथ ली गई सेल्फी को अपने ट्विटर अकाउंट पर शेयर किया है और इसके साथ ही फैंस को ईद मुबारक कहा। शाहरुख खान के वर्क फ्रंट की बात की जाए तो उनके पास इस वक्त तीन बड़े प्रोजेक्ट्स हैं। जिनमें से एक है यशराज बैनर की फिल्म 'पठान'। इस फिल्म में उनके साथ दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम निर्देशक एटली की अगली फिल्म भी है। जसमें वह सान्या मल्होत्रा और नयनतारा के साथ नजर आएंगे। हाल ही में शाहरूख ने अपने तीसरे प्रोजेक्ट का भी ऐलान किया था। जो फिल्ममेकर राजकुमार हिरानी की अगली फिल्म 'डंकी' है। जो फिल्ममेकर राजकुमार हिरानी के साथ शाहरुख की पहली फिल्म होगी। फिल्म में तापसी पनू भी हैं और यह 22 दिसंबर, 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म इस अप्रैल में फ्लोर पर चली गई है, जिसके अगले शेड्यूल की शूटिंग बड़े पैमाने पर पंजाब में की जाएगी।

पूनम पांडे हुईं 'लॉक अप' से बाहर, फिनाले न जीतने पर फूट-फूट कर रोईं

नई दिल्ली। लॉक अप' के मेकर्स ने सोशल मीडिया पर शो का एक नया प्रोमो शेयर किया है। जिसमें पूनम पांडे के बाहर होने की जानकारी शेयर की गई है। वीडियो में पूनम पांडे शो से बाहर जाने पर काफी दुखी हैं और फूट-फूट कर रो रही हैं। इस पर करण कुंद्रा उन्हें हौसला देते हुए नजर आए। जेलर करण ने पूनम के लिए काफी अच्छी बातें भी कहीं और इसी के साथ उन्हें एक खूबसूरत फेयरवेल दिया। बता दें कि पूनम पांडे शो के साथ शुरूआत से जुड़ी हुई थीं। वह 'लॉक अप' में लगभग तीन महीनों से बनी हुई थीं। इस बीच उन्होंने शो में काफी अच्छा परफॉर्म किया और बाकी कैदियों को बराबर की टक्कर दी। टॉपलेस होने को लेकर रही चर्चा में पूनम शो में अपने टॉपलेस होने को लेकर काफी चर्चा में रही हैं। फैंस के बीच वोट पाने के लिए उन्होंने एक स्ट्रटेजी के तरह अपने चाहने वालों से वादा किया था कि अगर वह शो में बनी रहती हैं तो वह टॉपलेस हो जाएंगी और वोट मिलने पर पूनम ने ऐसा किया भी। पूनम के जाने के बाद 'लॉक अप' में अब अंजलि अरोड़ा, सायशा शिंदे, मुनव्वर फारूकी, शिवम शर्मा, प्रिंस नरूला, आजमा फलाह और पायल रोहतगी बचे हुए हैं। आने वाले 7 मई को लॉक अप का ग्रैंड फिनाले है और इस दिन इन सभी में से कोई एक ट्रॉफी जीतकर अपने घर ले जाएगा।

नोरा फतेही संग डेटिंग की खबर पर कोरियोग्राफर टेरेंस लुईस ने तोड़ी चुप्पी

नई दिल्ली। नोरा फतेही और टेरेंस लुईस दोनों ही बहुत अच्छे डांसर हैं। दोनों जब भी साथ में मंच पर आते हैं तो अपनी केमिस्ट्री से हर किसी को दीवाना बना देते हैं। इन दोनों की जोड़ी फैंस को भी काफी पसंद है। दोनों ने साथ में एक डांस रिएलिटी शो को जज किया था और सेट पर अक्सर टेरेंस मस्ती में नोरा फतेही के साथ फ्लर्ट करते हुए नजर आए। जिसके बाद से ही दोनों की अफेयर की चर्चाओं ने भी खूब जोर पकड़ा, लेकिन अब हाल ही में टेरेंस लुईस ने अपने और नोरा के अफेयर की खबरों पर अपनी चुप्पी तोड़ी है। टेरेंस लुईस ने आरजे सिद्धार्थ कनन को दिए एक इंटरव्यू में नोरा फतेही के साथ अपनी बॉन्डिंग को लेकर बातचीत की और डेटिंग की खबर को गलत बताया। जब टेरेंस से ये पूछा गया कि क्या वह नोरा फतेही को डेट कर रहे थे, तो इसका जवाब टेरेंस ने मजाकिया अंदाज में दिया। उन्होंने कहा 'राज की बात राज रहने दो, मैं तुम्हें ऑफ कैमरा बताऊंगा'। लेकिन इसके बाद जब टेरेंस से दोबारा ये पूछा गया तो एक्टर ने जवाब देते हुए कहा, 'हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त हैं, इससे ज्यादा हमारे बीच में कुछ भी नहीं है'। टेरेंस लुईस ने नोरा फतेही की तारीफ

करते हुए कहा, 'हम दोनों की ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री लोगों को काफी पसंद है। सबसे खास बात यह है कि वह बहुत ही खुल्ले विचारो वाली और फ्री-स्प्रिट महिला हैं। मुझे उनकी जो एनर्जी और एहसास है वह बहुत ही पसंद है। वह एक बेहतरीन डांसर हैं इसलिए वह चीजों को समझती हैं। वह बहुत ही मेहनती भी हैं'। आगे बात करते हुए टेरेंस लुईस ने कहा, 'वह बहुत ही अच्छी और रियल है, उनके दिल में जो है वही उनकी जुबान पर भी है। कभी-कभी जब वह कुछ कहती हैं और मैं उन्हें कहता हूं कि ऐसा नहीं कहना चाहिए, तो वह कहती हैं मैंने तो कह दिया है अब'। जब टेरेंस लुईस से ये पूछा गया कि क्या वह और नोरा बेस्ट फ्रेंड हैं, तो इसका जवाब देते हुए कोरियोग्राफर ने कहा, 'हम दोनों अच्छे दोस्त हैं, मैं ये नहीं कहूंगा कि हम बेस्ट फ्रेंड है, जहां हम हर दिन एक-दूसरे को फोन करते हैं। लेकिन हम एक अच्छा रिश्ता साझा करते हैं। जब टेरेंस से ये पूछा गया कि क्या वह आगे चलकर नोरा फतेही को डेट कर सकते हैं, तो इसका जवाब देते हुए टेरेंस लुईस ने कहा, 'आपको किस्से प्यार होगा भविष्य में इसे आप प्लान नहीं कर सकते। टेरेंस लुईस जहां एक बेहतरीन कोरियोग्राफर हैं, तो वही नोरा फतेही ने भी अपने डांस के बलबूते पर बॉलीवुड में अपनी एक अलग जगह बनाई है।

ब्लैक शिमरी स्कर्ट और क्रॉप टॉप में मौनी रॉय का दिखा कातिलाना लुक

नई दिल्ली। टीवी की सबसे मशहूर नागिन मौनी रॉय न सिर्फ अपने अभिनय से सबका दिल जीतती आई हैं, बल्कि उनके फैशन सेंस को भी सोशल मीडिया पर लोग काफी पसंद करते हैं। मौनी रॉय की सोशल मीडिया पर एक फैंस उनकी तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। मौनी रॉय ने अपने इंस्टाग्राम पर कई खूबसूरत तस्वीरें पोस्ट की। इन तस्वीरों में मौनी ने ब्लैक रंग की लॉन्ग स्कर्ट पहनी है जिसपर शिमरी लाइंस हैं इसके साथ उन्होंने शिमरी क्रॉप टॉप

अच्छी खासी प्रशंसकों कि लिस्ट है और जब भी वह अपनी कोई खूबसूरत तस्वीरें पोस्ट करती हैं तो फैंस जमकर अपनी पसंदीदा अभिनेत्री पर प्यार लुटाते हैं। अब हाल ही में मौनी रॉय ने अपने सोशल मीडिया पर कई खूबसूरत तस्वीरें पोस्ट की हैं, जिनमें मौनी की अदाएं देखते ही बन रही है। उनके इस लुक को देखने के बाद पहना है। मौनी रॉय ने एक के बाद एक कई खूबसूरत तस्वीरें पोस्ट की। इन सभी तस्वीरों में मौनी रॉय अलग-अलग पोज देती हुई नजर आ रही हैं। नागिन एक्ट्रेस ने अपने इस लुक के साथ कोई भी ज्वैलरी कैरी नहीं की है। एकटक कैमरे को निहारती मौनी रॉय का लुक देखते ही बन रहा है। मौनी रॉय के इस कातिलाना लुक पर फैंस जमकर प्यार लुटा रहे हैं। एक यूजर ने उनकी पोस्ट पर कमेंट करते हुए लिखा, 'आप की खूबसूरती पर से आंखें नहीं हटती'। दूसरे यूजर ने लिखा, 'मौनी बेबी आप हमेशा ही बहुत खूबसूरत लगती हैं'। एक अन्य यूजर ने लिखा, 'हॉटी अलर्ट'। एक यूजर ने तो उनसे ये तक पूछ डाला कि क्या आप स्वर्ग से आई हैं, क्योंकि मैंने आपसे ज्यादा खूबसूरत इस दुनिया में देखा ही नहीं है। मौनी की इन तस्वीरों को अब तक 1 लाख से अधिक लाइक्स मिल चुके हैं। मौनी रॉय इन दिनों जी टीवी के डांस रिएलिटी शो 'डीआईडी लिटिल मास्टर्स' में नजर आ रही हैं। वह इस शो को रेमो डिसूजा और सोनाली बेंद्रे के साथ मिलकर होस्ट कर रही हैं। मौनी रॉय के करियर की बात करें तो उन्होंने साल 2006 में अपना करियर सीरियल 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' से शुरू किया था, इसके बाद उन्होंने कई टीवी शोज में काम किया, लेकिन साल 2015 में वह एकता कपूर के सुपरनैचुरल शो की 'नागिन' बनी, इस शो से उन्हें दर्शकों का खूब प्यार मिला। मौनी रॉय जल्द ही आलिया भट्ट और रणबीर कपूर स्टारर फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' में नजर आने वाली हैं।

सलमान खान ने दो साल बाद फैंस को दी ईदी, एक्टर की एक झलक देखने के लिए उमड़ी हजारो प्रशंसकों की भीड़

नई दिल्ली। पूरे देश में धूमधाम से ईद का त्यौहार मनाया जा रहा है। इस मौके पर हर कोई एक-दूसरे को ईदी दे रहा है। आम इंसान से लेकर बॉलीवुड सितारे तक अपने फैंस की भीड़ अपने पसंदीदा सितारे को देखने के लिए पहुंची। सलमान खान ने भी अपनी गैलेक्सी में आकर फैंस को बधाई दी। सेलिब्रिटी फोटोग्राफर विरल भयानी ने अपने खान ने अपने इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए लिखा, 'आप सभी को ईद मुबारक हो'। आपको बता दें कि सलमान खान कोरोना महामारी की वजह से दो साल से अपने फैंस

ही अंदाज में इस साल ईद का जशन् मना रहे हैं। लेकिन हर साल ईद के मौके पर अगर फैंस को किसी का बेसब्री से इंतजार रहता है, तो वह हैं बॉलीवुड के टाइगर सलमान खान का। सलमान खान हर साल अपनी गलैक्सी से फैंस को हाथ दिखाकर उन्हें ईदी देते हैं। सलमान खान न सिर्फ ईद के मौके पर अपने फैंस से मिलते हैं, बल्कि सिनेमाघरों में भी फैंस को ईद के मौके पर तोहफा देते हैं। हालांकि इस बार सलमान खान की ईद के मौके पर फिल्म तो रिलीज नहीं हुई, लेकिन उन्होंने अपने फैंस को निराश नहीं किय सोमवार को ईद का चांद दिखा, जिसके बाद धूमधाम से ईद का जशन् मनाया गया। ऐसे में सलमान खान के घर के बाहर भी हजारो इंस्टाग्राम पर सलमान खान के गैलेक्सी की एक वीडियो शेयर की है, जिसमें सलमान खान हमेशा की तरह शाम को अपने अपार्टमेंट की बालकनी में आए और उन्होंने अपने फैंस को एक अपनी एक झलक दिखलाते हुए ईदी भी दी। सलमान खान ने अपने इंस्टाग्राम पर भी कई तस्वीरें शेयर की, जिसमें उनके फैंस की भीड़ दिख रही है और सलमान खान अपनी बालकनी से खड़े होकर फैंस से रूबरू होते हुए दिखाई दे रहे हैं। ईद के खास मौके पर सलमान खान का देसी लुक फैंस को देखने को मिला। सलमान खान ने इस खास मौके पर नेवी ब्लू रंग का कुर्ता-पायजामा पहना। इसी के साथ सलमान खान ने कानों में बाली भी पहनी। इन तस्वीरों को सलमान से रूबरू नहीं हो पाए थे। सलमान खान के आगामी प्रोजेक्ट्स की बात करें तो वह एक बार फिर से कटरीना कैफ के साथ अपनी ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री से फैंस का दिल जीतने के लिए बिलकुल तैयार हैं। सलमान खान की फिल्म टाइगर 3 अगले साल यानी कि 2023 में सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसके अलावा सलमान खान साजिद नाडियाडवाला के प्रोडक्शन में बनने वाली फिल्म 'कभी ईद कभी दीवाली' में नजर आएंगे। इस फिल्म में सलमान खान के साथ इस फिल्म में पूजा हेगड़े मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। इस फिल्म में अब शहनाज गिल और आयुष शर्मा की भी एंट्री होने वाली है।

अपने देसी लुक से नताशा पूनावाला ने लूटी लाइमलाइट, बेस्ट फ्रेंड करीना कपूर ने आउटफिट देखकर कही ये बात

नई दिल्ली। मेट गाला का 2 मई 2022 को बहुत ही धूमधाम से इंटरनेशल इवेंट हुआ और हर साल की तरह इस साल भी कई सितारे रेड कारपेट पर अपने यूनिक फैशन से फैंस का दिल चुराते हुए नजर आ रहे हैं। हर साल इस इंटरनेशनल इवेंट में एक थीम चुनी जाती है और उसी के अनुसार सितारे अपना यूनिक फैशन सेंस फैन्स को दिखाते हैं। इस इवेंट में हॉलीवुड सितारों के साथ-साथ कई बॉलीवुड सितारे भी अपने अलग अंदाज से प्रशंसकों को हैरानी में डालने का कोई मौका नहीं छोड़ते हैं। इस बार किसी बॉलीवुड एक्ट्रेस ने

नहीं बल्कि सोशलाइट नताशा पूनावाला ने अपने देसी अंदाज से हर किसी का दिल जीत लिया। नताशा पूनावाला की बेस्ट फ्रेंड और बॉलीवुड की बेबो करीना कपूर खान भी उनका लुक देखकर काफी खुश हुईं। करीना कपूर ने हाल ही में अपनी इंस्टा स्टोरी पर बेस्ट फ्रेंड नताशा पूनावाला की मेट गाला 2022 की एक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में नताशा पूनावाला ट्यूल साड़ी व बेहतरीन ज्वेलरी में वह बेहद खूबसूरत लग रही हैं। करीना कपूर खान ने नताशा की इस बेहद खूबसूरत तस्वीर को अपने सोशल मीडिया पर शेयर करते हुए खूब प्यार जताया है। तस्वीर शेयर करते हुए करीना ने लिखा, 'सिर्फ और सिर्फ उफ्फ्फ लव लव लव नताशा पूनावाला'। मेट गाला इवेंट के खास मौके पर नताशा पूनावाला ने मशहूर डिजाइनर सब्यसाची मुखर्जी कलेक्शन पहना। अमेरिकी-प्रेरित थीम के फ्यूजन में नताशा पूनावाला के इस देसी टच ने उन्हें खूब लाइमलाइट दिलाई। नताशा पूनावाला के लुक की बात करें उन्होंने एक लंबी पगडंडी के साथ एक सोने की दस्तकारी वाली ट्यूल साड़ी पहनी थी। उन्होंने साड़ी को हाथ से गढ़ी हुई मेटल कॉर्सेट से कंप्लीट किया और गोल्डन रंग की ज्वेलरी और एक्सरसीरिज के साथ उसे कम्पलीट किया। करीना कपूर खान और नताशा पूनावाला काफी करीबी दोस्त हैं। सिर्फ करीना से ही नहीं बल्कि करिश्मा, मलाइका और अमृता की भी काफी अच्छी दोस्त हैं। वह अक्सर उनके साथ पार्टी करती हुई नजर आती हैं। मेट गाला 2022 की बात करें तो नताशा पूनावाला के साथ-साथ किम कर्दारशियन, कायली जेनर, केंडल जेनर, ब्लैक लाइवेली, रयान रेनोल्ड्स सहित कई सितारों ने अपने लुक से सुर्खियां बटोरी।

पलक तिवारी ने बिना पैंट सिर्फ शर्ट के ऊपर पहना ब्रालेट, श्वेता तिवारी की बेटी का अजीब ड्रेसिंग सेंस देख चकराया फैंस का दिमाग

नई दिल्ली। टीवी एक्ट्रेस श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी अपनी मां की तरह ही काफी सुखिर्यों में रहती हैं। पलक लगातार अपने हॉट अंदाज को लेकर सुखिर्यों में बनीं हुई हैं। एक्टिंग के साथ पलक सोशल सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव हैं। वह अक्सर ही अपन हॉट एंड बोल्ड तस्वीरें और वीडियोज शेयर करती रहती हैं। इन दिनों पलक पैपराजी की भी फेवरेट बनीं हुई हैं। वो जहां भी जाती हैं पैपराजी उन्हें कैमरे में कैद करने का एक भी मौका हाथ से जानें नहीं देती हैं। इसी बीच एक बार फिर से पलक का एक लेटेस्ट वीडियो काफी सुर्खियों में बना हुआ है। इस वीडियो में एक्ट्रेस का ड्रेसिंग सेंस देख फैंस का सिर घूम गया है।यहां देखें वीडियो पलक तिवारी ने अपने इंस्टाग्राम पर एक लेटेस्ट वीडियो शेयर की है जो चर्चा में है। इस वीडियो में पलक व्हाइट शर्ट में नजर आ रही हैं। लेकिन वीडियो में देखने वाली बात ये है कि पलक न सिर्फ इस शर्ट के नीचे पैंट पहनना भूल गई हैं बल्कि शर्ट के ऊपर ब्रालेट पहना है जो कि काफी अजीब लग रहा है। पलक तिवारी का ये वडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। उनके इस उलटे पुलटे ड्रेसिंग स्टाइल पर हर कोई कमेंट कर अपनी अपनी राय देता नजर आ रहा है। वहीं कई तो उन्हें ट्रोल कर उनके इस स्टाल पर अपनी राय दे रहा है। कई यूजर्स ने तो उन्हें फीमेल सुपरमैन कह डाला। पलक तिवारी के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह हार्डी संधू के गाने बिजली-बिजली में नजर आईं थीं। इस गाने को काफी पसंद किया गया था। वहीं हाल ही में पलक तिवारी बॉम्बे टाइम्स फैशन वीक के रैंप पर भी वॉक करती नजर आई थीं। साथ ही उनका 'मंगता है क्या' गाना रिलीज हो चुका है जो काफी पॉपुलर हो रहा है। वहीं पलक टीवी की जानी मानी एक्ट्रेस श्वेता तिवारी की बेटी हैं। श्वेता ने अपने करियर में कई हिट टीवी शोज में काम किया है। इसके अलावा श्वेता भोजपुरी फिल्मों में भी नजर आ चुकी हैं। साथ ही श्वेता 'बिग बॉस' की विनर भी रह चुकी हैं। इसके साथ ही वह कई रिएलिटी शोज का भी हिस्सा रह चुकी हैं।

अजय देवगन की 'रनवे 34' पर भारतीय पायलट फेडरेशन ने साधा निशाना

नई दिल्ली। अजय देवगन की हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'रनवे 34' को लेकर दावा किया है कि फिल्म सच्ची घटना पर आधारित है। जो सफर के दौरान प्लेन में हुए हादसे के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म को लेकर अब भारतीय पायलट फेडरेशन (ईंाि्रदह द ि्र्रीह इत्दू) ने अपत्ति जताई है और फिल्म के सच्ची घटना पर आधरित होने के दावे को झूठा करार दिया है। मंगलवार को भारतीय पायलट फेडरेशन (इ्र्रू) के सचिव कैप्टन सीएस रंधावा ने 'रनवे 34' पर निशाना साधते हुए बयान जारी किया है। न्यूज एजेंसी एएनआई की रिपोर्ट के अनुसार, बयान में कहा गया है कि ठफिल्म में एयरलाइन पायलटों के पेशे को अवास्तविक रूप से दिखाया गया है और इससे यात्रा करने वालों यात्रियों के मन में आशंकाएं पैदा हो सकती हैं। कैप्टन रंधावा ने फिल्म

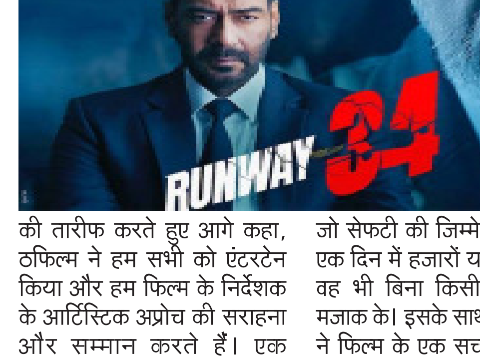

की तारीफ करते हुए आगे कहा, ठफिल्म ने हम सभी को एंटरटेन किया और हम फिल्म के निर्देशक के आर्टिस्टिक अप्रोच की सराहना और सम्मान करते हैं। एक रोमांचक कहानी को एयरलाइन पायलटों के आसाधरण काम की सच्ची घटना से नहीं जोड़ना चाहिए, जो सेफटी की जिम्मेदारी के साथ एक दिन में हजारों यात्राएं करते हैं वह भी बिना किसी घटना और मजाक के। इसके साथ ही फेडरेशन ने फिल्म के एक सच्ची घटना पर आधारित होने के दावों को खारिज कर दिया। पत्र में आगे कहा गया, ठयह दोहराया जाता है कि फिल्म में दिखाए गए किरदार हमारे प्रोफेशन को सटीक रूप से नहीं बयां करते हैं और हमारी इंडस्ट्री इस तरह के व्यवहार और धूम्रपान को लेकर जीरो टॉलेरेंस नीति रखती है। हमारे पायलेट, कर्मचारी, एविएशन रेगूलेटर और लोगों द्वारा हम पर किए गए विश्वास को बनाए रखने के लिए प्रोफेशनलिजम के हायर स्टैनडर्ड से बंधे होते हैं।बता दें कि 'रनवे 34' में अजय देवगन ने एक्टिंग करने के अलावा इसे डायरेक्ट भी किया है। फिल्म में अजय के अलावा अमिताभ बच्चन और रकुल प्रीत सिंह भी मुख्य किरदारों में हैं।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।

बोर्ड पास छात्र-छात्राएं चिंता छोड़े बनाएं अपना भविष्य

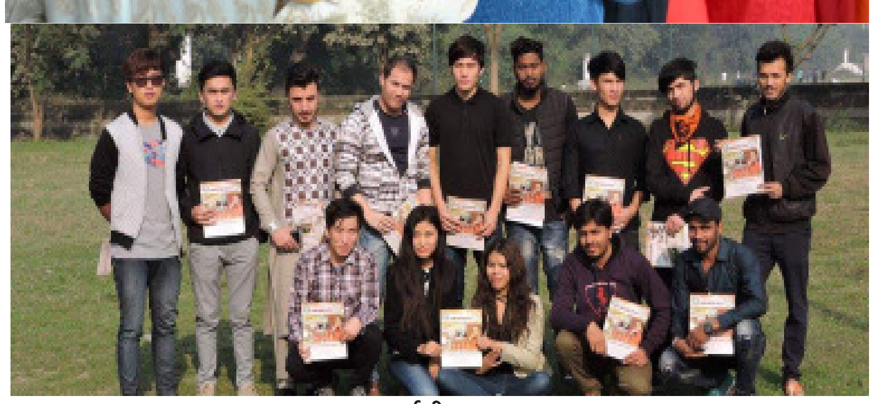

अन्तर्राष्ट्रीय छात्र समूह

एसके गुप्ता प्रधानाचार्य राजकीय आईटीआई नैनी, नैनी आईटीसी के अनुदेशकों से बात करते हुए।

आरके दुबे प्रधानाचार्य राजकीय आईटीआई भदोही नैनी आईटीसी की वेबसाइट का विमोचन करते हुए।

मो. कौशर अनुदेशक नैनी आईटीसी द्वारा राजकीय आईटीआई के समस्त अनुदेशकों नैनी आईटीसी के छात्रों द्वारा बनाये गये मास्क वितरित करते हुए।

नैनी आईटीसी के छात्रों द्वारा बनाया गया मॉडल।

अर्चना सरोज अनुदेशक कोपा ट्रेड राजकीय आईटीआई खागा नैनी आईटीसी के छात्रों को पढ़ाते हुए।

कार्यालय प्रधानाचार्य नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र
(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)

सीधे प्रवेश सूचना

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र मे प्रस्तावित व्यवसायो मे अगस्त 2021मे प्रारम्भ होने वाले सत्र मे प्रवेश हेतु इंजीनियरिंग एवं नॉन इंजीनियरिंग प्रशिक्षण कोर्स कोपा, फिटर, बेसिक कम्प्यूटिंग, डाटा एन्ट्री ऑपरेशंस, फायर प्रीवेन्शन एण्ड इण्डस्ट्रीयल सेफ्टी, सिक्योरिटी सर्विस, कम्प्यूटर हार्डवेयर असेम्बली एण्ड मेनटेनेन्स, सर्टिफिकेट इनक म्प्यूटर एप्लीकेसन (सी०सी०ए०), इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन, रेफ्रिजरेशन एण्ड एयर कण्डिशनिंग,योगा असिस्टेंट, वेल्डिंग टेक्नोलॉजी, सी०एन०सी० प्रोग्रामिंग एण्ड ऑपरेशन, इलेक्ट्रीशियन, कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता हाईस्कूल उत्तीर्ण है।

ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया :– इस प्रक्रिया के लिए हमारी वेबसाईट www.nainiiti.com पर जाकर Student's Zone → Online Form → Choose Course → Apply Now पर अपने व्यवसाय कोर्स का चयन कर अपना प्रवेश सुनिश्चित करें।

ऑफलाइन आवेदन प्रक्रिया :– इस प्रक्रिया में प्रशिक्षार्थी अपनी शैक्षिक योग्यता प्रमाण पत्र, आधार कार्ड एवं 4 पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ के साथ प्रवेश कार्यालय में सम्पर्क करे।

नोट-: प्रवेश प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल 2021 है।

अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए
visit us at : www.nainiiti.com

प्रवेश कार्यालय :- तुलसीयानी प्लाजा तीसरी मंजिल, एम.जी. मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

फोन करे :- 0532-2695959, 9415608710, 6394370734, 7355448437, 6386474074, 6306060178, 9026359274

बोर्ड पास छात्र-छात्राएं चिंता छोड़े बनाएं अपना भविष्य...

नैनी/इलाहाबाद। इलाहाबाद यूपी एवं सीबीएसई बोर्ड से हाई स्कूल इंटरमीडिएट परीक्षाओं में सफल छात्र-छात्राओं के पास अपना भविष्य बनाने का सुनहरा मौका हैं। ऐसे अभ्यर्थी को भविष्य बनाने का मौका नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट दे रहा है। इसके जरिए बिना अतिरिक्त समय गवाएं आसानी से अपना भविष्य बना सकते हैं। यह चमत्कार होगा व्यावसायिक शिक्षा से। तीनों बोर्ड के परिणाम घोषित हो चुके हैं। इन बोर्ड परीक्षाओं में उत्तीर्ण प्रदेश के तकरीबन छब्बीस लाख विद्यार्थियों के सामने उच्च शिक्षा के साथ अच्छे करियर की भी चिंता है। ऐसे विद्यार्थियों के लिए इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट आईटीआई में चलने वाले कोर्सेज फॉर स्पीड के रूप में सामने आए हैं। धीरे-धीरे यह रोजगार की गारंटी बनते जा रहे हैं इनकी पत्रदाई के बाद सरकारी और निजी संस्थानों में नौकरी के अलावा स्वरोजगार अवसर के साधन है। इसके अलावा आईटीआई में एक लाख से अधिक युवाओं की मांग है इसके विपरीत हर साल मात्र तीस हजार प्रशिक्षित युवा मिल रहे हैं। इसके अलावा इन दिनों हिमाचल रोड ट्रांसपोर्ट समेत कई विभागों में सैकड़ों पदों के लिए आईटीआई पास अभ्यर्थियों से आवेदन मांगे गए हैं। आईटीआई पास अभ्यर्थियों के लिए रेलवे में ढेरों संभावनाएं हैं ऐसे में विशेषज्ञों की सलाह है कि परंपरागत कोर्स के साथ युवा आईटीआई की ओर ध्यान देकर बेहतर कैरियर प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर तथा पढ़ाई में बहुत अच्छा नहीं करने वाले विद्यार्थियों के लिए भी यह एक बेहतर विकल्प है। औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के प्रवक्ता **वरुण स्वराज** से हुई खास बातचीत में उन्होंने इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी।

पूछे गए सवाल

प्रश्न- नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र क्या है? इसके बारे में बताएं।

उत्तर- नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र जो नैनी आईटीआई के नाम से लोकप्रिय है एवं तर्कणीय तौर पर अपने प्रकार का एक मात्र संस्थान है जो उद्योग सहयोग हेतु भारत सरकार शासनादेश संख्या नंबर डीजीईटी-6/24/78/2008-टी.सी. द्वारा श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित संस्था नियमानुसार विभिन्न प्रदेश राष्ट्रीय निकायों द्वारा मान्यता प्राप्त है। एनसीवीटी-डीजीटी-नई दिल्ली, एनएसआइसी- नई दिल्ली, एनआईओएस - नई दिल्ली।

प्रश्न- नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र में अध्ययन से क्या लाभ है?

उत्तर- वर्तमान परिदृश्य में पाठ्यक्रम आईटीआई द्वारा समय पर परीक्षाएं एवं समय पर परीक्षा परिणाम का अपग्रेडेशन। श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम बेहतर प्लेसमेंट सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियां का सूर गठित आयोजन विद्यार्थियों का संपूर्ण विकास मूल्य एवं गुणवत्ता आधारित शिक्षा, व्यवस्थित एवं सुनियोजित एकेडमिक कैलेंडर, डेडीकेटेड टू एजुकेशन मिशन को पूरा करने के उद्देश्य से संस्थान 9 वर्षों से प्रयासरत है। केंद्र से आज तक 5000 से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया जा चुका है एवं केंद्र द्वारा प्रशिक्षित छात्र छात्राएं इस समय सफलता प्राप्त कर चुके हैं। सफलता पूर्वक प्रशिक्षण पूर्ण करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाण पत्र दिए जाते हैं जो देश विदेश में सभी जगह मान्य है।

प्रश्न- नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र में कौन से पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं?

उत्तर- कोपा (कम्प्यूटर आपरेटर एण्ड प्रोग्रोमिंग आसिस्टेंट), फीटर, बेसिक कंप्यूटिंग, डाटा एंट्री ऑपरेशन, फायर प्रीवेंशन एंड इंडस्ट्रियल सेफ्टी, सिक्योरिटी सर्विस, कंप्यूटर हार्डवेयर एंड मेंटेनेंस इन कंप्यूटर एप्लीकेशन, सीसीए (सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन), इलेक्ट्रिकल टेकिनशियन, रेफ्रिजरेशन एंड एयर कंडीशनिंग, योगा असिस्टेंट, वेल्डिंग टेक्नोलॉजी, सीएनसी प्रोग्रामिंग एंड ऑपरेशन, इलेक्ट्रिशियन, कंप्यूटर टीचर ट्रेनिंग, इत्यादि।

प्रश्न- आपके औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र एवं अन्य प्रशिक्षण केंद्रों में क्या अंतर है?

उत्तर- नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र अंतर्राष्ट्रीय मानक आई.एस.ओ प्रमाणित है एवं श्रम रोजगार मंत्रालय भारत सरकार द्वारा इसकी स्टार (सितार) ग्रेडिंग की गई है एवं एम.आई.एस.डिफेंस मिनिस्ट्री भारत सरकार द्वारा अधिकृत प्रशिक्षण केंद्र भी नियुक्त किया गया है। अत्यधिक जानकारी के लिए आप फोन भी कर सकते हैं हमारे फोन नंबर इस प्रकार है- 0532-2695959, 9415608710, 9415608783, 9415608790, 7459860480, 7380468640, 6394370734।

आरके अग्रहरि अनुदेशक राजकीय आईटीआई नैनी, नैनी आईटीसी की प्रवेश विवर्णिका का विमोचन करते हुए।

आकांक्षा वर्मा टीवी एक्ट्रेस नैनी आईटीसी का भ्रमण करते हुए।

स्मृति सिंह मिसेज एशिया पेसिफिक नैनी आईटीसी के छात्रों को साथ।